नंदन
नई पीढ़ी के
निर्माण का मासिक
फरवरी '९३
पांच
रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन
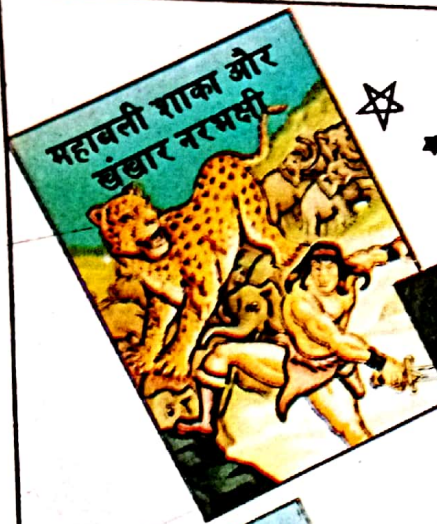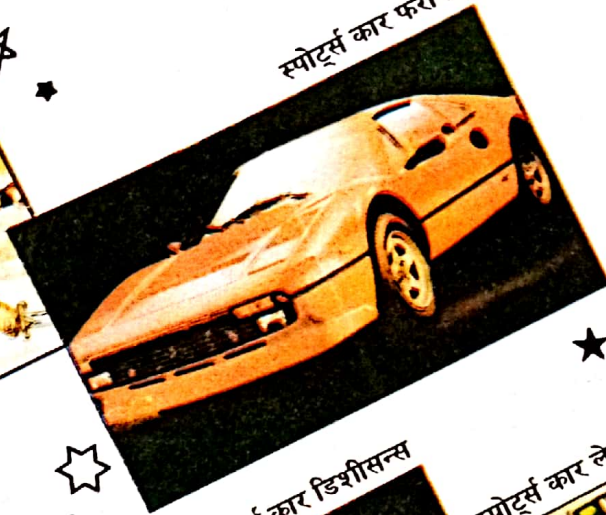
आ गया!

देश के दुश्मनों को हराने, सबके दिलों को दहलाने

डायमण्ड कॉमिक्स में

नया कैरेक्टर

अग्निपुत्र अभय

हैरत अंगेज कारनामों के साथ पहला अंक

'अग्निपुत्र-अभय' के पहले अंक के साथ

आपके चहेते 12 क्रिकेट खिलाड़ियों वाला 15 रु. का छः पेज का रंगीन 1993 कैलण्डर मुफ्त!
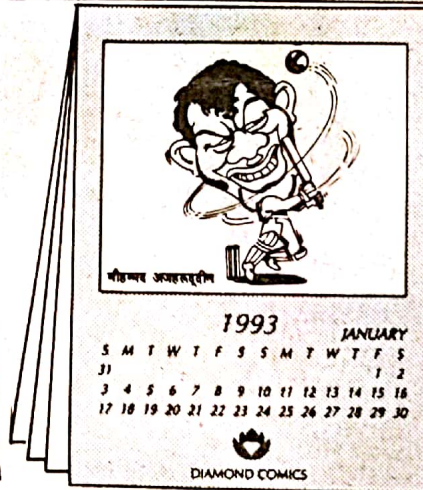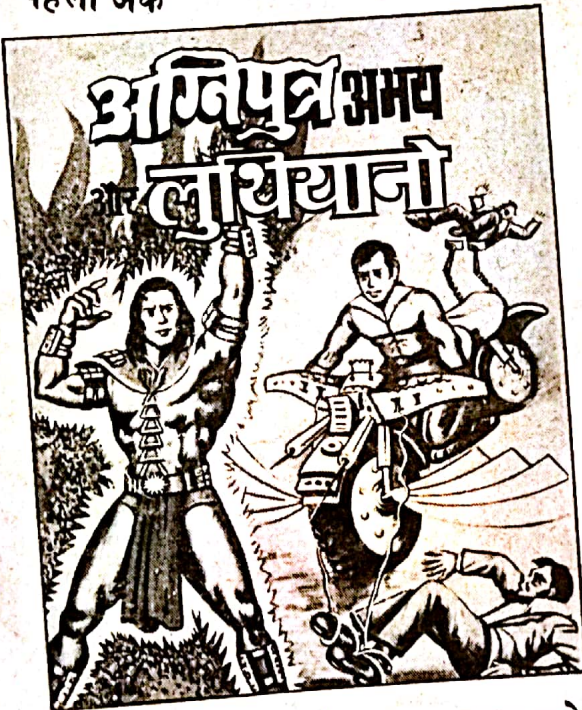
इनके अलावा–

- रवि शास्त्री
- कपिल देव
- डेविड बून
- सचिन तेंदुलकर
- मनिन्दर सिंह
- विनोद काम्बली
- इमरान खान
- विवियन रिचर्डस
- एलन बोर्डर
- इयान बाथम
- रिचर्ड हैडली

अन्य नये डायमण्ड कामिक्स

कार पोस्टर फ्री

रोचक जादू फ्री

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

सैकड़ों साल पहले—वेमा नाम का एक आदमी तीर्थ यात्रा को निकला। कुरनूल जिले में श्री शैलम् तीर्थ है। पहाड़ी पर शिव मंदिर है, जिन्हें वहां मल्लिकार्जुन कहते हैं। शिवरात्रि के दिन बड़ी संख्या में भक्त यहां आते हैं। नाचते-गाते हैं। पूजा-प्रार्थना करते हैं।

शिवरात्रि पर दूसरे भक्तों की तरह ही वेमा ने भी पूजा-पाठ किया। अगले एक-दो दिनों में सभी भक्त अपने-अपने घरों को लौट गए, वेमा वहीं रहा। वह मंदिर के आसपास घूमता रहता। पुजारी ने उससे पूछताछ की। वेमा बोला—"मैं शिव का भक्त हूं। उनकी पूजा करके आशीर्वाद पाना चाहता हूं।"—पुजारी को तब क्या ऐतराज होता ? उसने कहा—"देखो, मंदिर के उत्तर में दूर तक जंगल है, झाड़ियां हैं। वहां जंगली जानवर हैं और सांप भी हैं। उधर न जाना।"

वेमा ने पुजारी की बात सुन ली। किंतु वह उस जंगल में चला गया। आगे ही आगे बढ़ता गया। कहीं वापसी पर रास्ता न भूल जाए, इसलिए जहां-तहां सरसों के दाने डालता गया। कई झंझटों के बाद वह पारस वेदी तालाब के निकट पहुंच गया। वास्तव में वेमा इसी को ढूंढ़ रहा था।

वेमा ने तालाब में लोहे की छड़ डाली। अरे वाह, वह तो सोने की हो गई ! उसने तालाब के जल में से दो घड़े भर लिए, फिर वहां से लौट पड़ा। सांझ होने तक वह अनुमकोंडा गांव में जा पहुंचा। वहां उसने दोंती अलडा रेड्डी के घर पहुंचकर, रात भर ठहरने को आश्रय मांगा। रेड्डी ने उसे घेर (पशुशाला) में ठहरने को कह दिया। वेमा ने अपने घड़े कोने में छिपा दिए। वह भोजन की तलाश में चला गया।

उसी समय पशुओं को चारा डालने के लिए रेड्डी घेर में आया। उसने अंधेरे में देखा कि कुछ चमक रहा है। पास जाकर देखा कि कोने में रखे हल का एक हिस्सा घड़े से छू रहा है। वह सोने का हो गया था। रेड्डी के दिमाग में जैसे बिजली दौड़ गई। वह उन दोनों घड़ों को घर ले आया। पशुओं को बाहर निकालकर खुले में छोड़ दिया। झट से छप्पर में आग लगा दी। जरा देर में ऊंची-ऊंची लपटें उठने लगीं। तभी वेमा वहां आया। वह अपने घड़े तलाश करने लगा। आग में घुस गया। बेचारे वेमा के प्राण पखेरू उड़ गए।

दोंती रेड्डी चालाक आदमी था। धीरे-धीरे पारस के जल से सोना बनाता गया। पर किसी को उसने दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती दौलत के बारे में हवा नहीं लगने दी। खेत खरीदे, घर खरीदे और पशु खरीदे। खूब धनवान हो गया। किंतु दिनोंदिन उसकी मुसीबतें भी बढ़ती गईं। रेड्डी अपना भेद किसी के सामने खोल नहीं सकता था। बच गया वह और उसका एक बेटा। रेड्डी बीमार रहने लगा।

एक रात उसने सपना देखा। भयंकर वेमा उसके सामने था। रेड्डी ने उसे वेमा का भूत समझा। उसने रो-रोकर उससे माफी मांगी। तब वेमा ने दो शर्तें रखीं—'मेरी सोने की मूर्ति बनवाओ। कुल देवता की तरह उसकी पूजा करो। तुम्हारे परिवार के सभी लोग अपने नाम के साथ वेमा जोड़ें। इन दोनों शर्तों का पालन करोगे तो तुम्हारा परिवार फूले-फलेगा। सौ वर्ष राज करेगा।' रेड्डी ने दोनों शर्तें मान लीं। उसने अपने परिवार के मंदिर में वेमा की सोने की मूर्ति स्थापित की। अपने लड़के के नाम के साथ वेमा जोड़ा।

अब वेमा के भूत ने सताना बंद कर दिया था। रेड्डी का परिवार खूब सम्पन्न होता गया। उसके पुत्र प्रोलय वेमा रेड्डी ने दुर्ग बनाया। सेना एकत्र की। फिर वह राजा बन बैठा।

वेमा रेड्डी के वंश ने सच ही सौ वर्ष राज्य किया। उसी वंश में महाकवि वेमना हुए। उन्हें तेलुगू साहित्य का गौरव माना जाता है। वेमना के बारे में तरह-तरह की अन्य कथाएं भी कही-सुनी जाती हैं। कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कहने में वेमना बेजोड़ माने जाते हैं।

दिल्ली में जो चित्रकला प्रतियोगिताएं की गईं, उनमें पाठकों ने हजारों की संख्या में उत्साह से भाग लिया। कुछ चुने हुए चित्र अगले अंक में दे रहे हैं।

—तुम्हारे भइया

नंदन

फरवरी '९३
वर्ष :२९ अंक:४

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : शमशेर अ. खान
एलबम : एस. एस. बृजवासी

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार चित्रकार : प्रशांत सेन

मेरा ईश्वर

— कविराज ओमप्रकाश

देवक गुरु वीरेश्वर का शिष्य था। वीरेश्वर थे संगीत विशारद। उनके शिष्य बहुत थे, पर सबसे प्रिय था देवक। वह था गुरुभक्त और हर समय साधना में लीन रहने वाला। उसके स्वर की मधुरता अद्भुत थी। गाता तो रस की धारा बहने लगती।

देवक एक छोटे-से गांव बिसारा में रहता था। बिसारा पहाड़ी की तलहटी में बसा था। वहां एक सुंदर झील थी। झील के तट पर एक प्राचीन मंदिर था। देवक अक्सर वहां चला जाता और तन्मय होकर भजन गाता।

घर में पत्नी, और दो बच्चे थे। देवक कोई नौकरी न करता था, फिर भी जीवन मजे से बीत रहा था।

एक बार की बात— बरसात का मौसम था। रह-रहकर वर्षा हो रही थी। पर खराब मौसम भी देवक को न रोक सका। वह हमेशा की तरह मंदिर में जा बैठा। भगवान को प्रणाम किया और भजन गाने लगा। धीरे-धीरे बारिश तेज हो गई। दूर-दूर तक कोई न था।

तभी बाहर एक घोड़ा आकर रुका। घुड़सवार पानी में बुरी तरह भीग चुका था। मधुर स्वर सुनकर, उसके कदम आप से आप उस तरफ उठ गए। उसने देवक को मूर्ति के सामने बैठे, गाते देखा, तो बाहर ही ठिठक गया।

देवक ने गाना बंद किया, तो उस व्यक्ति का ध्यान भंग हुआ। उसके मुंह से निकला— "अद्भुत!" आवाज सुनकर देवक चौंक उठा। वह व्यक्ति अंदर आ गया। उसने कहा— "मैं शांतिपुर में रहता हूं। कहीं काम से गया था, लौटते समय तेज बारिश में भीग गया। मैंने जीवन में ऐसा मधुर कंठ आज से पहले कभी नहीं सुना। आप धन्य हैं।"

इसी बीच बारिश कुछ हल्की हो गई। देवक ने कहा— "रात हो चली है। मौसम का कुछ भरोसा नहीं। आप मेरे घर विश्राम करें, सुबह चले जाइएगा।" अजनबी देवक के साथ उसके घर चला गया। देवक ने उसे बदलने के लिए सूखे कपड़े दिए, फिर दोनों ने भोजन किया।

सुबह उसने विदा लेते समय कहा— "शांतिपुर आओ। वहां तुम्हारी प्रतिभा और निखरेगी। कभी आना हो, तो नगर द्वार पर शांतनु को पूछना, फिर तुम्हें कोई परेशानी न होगी।"

देवक की पत्नी अजनबी की बातें ध्यान से सुन रही थी। बोली— "उसने ठीक ही कहा। आखिर इस छोटे-से गांव में पड़े रहकर भी क्या होगा।" उस समय देवक ने पत्नी की बात टाल दी, पर मन में एक इच्छा जन्म लेने लगी थी— शांतिपुर जाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया जाए।

आखिर एक सुबह देवक शांतिपुर के लिए चल दिया। एक व्यापारी अपनी मालगाड़ी लेकर उधर ही जा रहा था। अगले दिन देवक शांतिपुर के नगर द्वार पर खड़ा था। उस समय दिन डूब रहा था। द्वार बंद हो चुका था। देवक ने प्रहरी से कहा— "मुझे शांतनु से मिलना है।"

इतना सुनते ही वहां हलचल मच गई। चार प्रहरी उसे अंदर ले गए, लेकिन व्यापारी को प्रवेश नहीं मिला। थोड़ी देर बाद उसे एक भव्य भवन में ले जाया गया। शांतिपुर एक बड़ा नगर था। सब तरफ खूब रौनक थी।

देवक को एक कक्ष में बैठा दिया गया। कुछ देर बाद एक व्यक्ति अंदर आया। यह वही अजनबी था। उसने शानदार कपड़े पहन रखे थे।

"शांतिपुर महाराज की जय।"— वहां खड़े प्रहरी ने कहा।

देवक सम्मानपूर्वक खड़ा हो गया। शांतिपुर नरेश राघवेंद्र ने कहा— "बैठो देवक, तुम महान गायक हो। मेरे दरबार में अनेक संगीतकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया है, पर तुम्हारे जैसा मधुर कंठ किसी के पास नहीं।"

—"आप... शांतनु..."

"हां, शांतनु मेरा गुप्त नाम है। मैं तुम्हारा संकोच समझ रहा हूं। उस शाम मैं वेश बदल कर एक विशेष कार्य से कहीं गया था, इसीलिए मैंने तुम्हें अपना परिचय नहीं दिया था। परिचय देने पर शायद तुम कुछ घबरा जाते और तब मैं इतना आनंद न ले पाता।"

राजा ने देवक को राज-गायक का पद प्रदान किया। नगर में रहने के लिए उसे एक बढ़िया हवेली दे दी गई। कुछ दिन बाद देवक गांव जाकर अपने परिवार को भी शांतिपुर ले आया। जब वह चलने लगा, तो गांव के लोगों ने कहा— "देवक, हमें भूल न जाना।"

देवक का मन शांतिपुर में रम गया। वह राजा का कृपापात्र था। उसे सारी सुविधाएं मिली हुई थीं। दूर-दूर तक उसकी गायकी का नाम था। उसका जीवन बहुत सुख से बीत रहा था। बीच-बीच में उसे गायन के लिए निमंत्रण मिलता, तो वह चला जाता। एक दिन देवक रात को घर लौटा, तो राजा का हरकारा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। राजा ने उसे तुरंत बुलाया था।

देवक उसी समय राजमहल जा पहुंचा। उसने नमस्कार किया, तो राजा ने उत्तर नहीं दिया। देवक को लगा— राजा कुछ नाराज हैं। वह चुप खड़ा रहा, पर राजा राघवेंद्र ने बैठने को भी नहीं कहा। कुछ देर बाद एकाएक राजा का तेज स्वर उभरा— "देवक, तुम राज गायक हो। अब से तुम केवल मेरे लिए गाओगे। किसी के बुलाने पर कहीं नहीं जाओगे। यह मेरा आदेश है।" देवक कुछ देर इसी तरह चुप खड़ा रहा, फिर घर वापस चला आया। आज उसने राजा का नया रूप देखा था।

बस, उस दिन से देवक केवल राजा का आदेश मिलने पर ही गाने लगा। वह हर निमंत्रण को ठुकरा देता। धीरे-धीरे उसके मन में यह बात बैठ गई कि वह बड़ा राज गायक है, उसे साधारण लोगों के लिए नहीं गाना चाहिए।

एक सुबह बिसारा का मुखिया देवक से मिलने आया। उसके साथ कई गांव वाले और थे। देवक की शानदार हवेली देखकर सब भौंचक्के रह गए। मुखिया ने देवक से कहा— "गांव में नया मंदिर बना है। मैं तुम्हें बुलाने आया हूं। वहां एक उत्सव किया जा रहा है। उस सभा में तुम्हें भजन सुनाने हैं। बहुत दिनों से तुम गांव में आए भी नहीं हो।"

देवक मुखिया की बात सुन, सोच में पड़ गया। उसे राजा की चेतावनी याद आई। उसने कहा— "तुम किसी और गायक को बुला लो। मैं यहां बहुत व्यस्त हूं।"

मुखिया और गांव वाले चले गए। उन्हें आशा थी कि देवक अपने गांव में उत्सव के समय आएगा, पर देवक ने न जाने का निश्चय कर लिया था। वह सोच रहा था— 'राजा ठीक कहते हैं। मुझे हर किसी के बुलावे पर नहीं जाना चाहिए।'

देवक अब राजा के लिए ही गाता। राजा कहीं जाते, तो वह भी साथ रहता। एक रात राजा राघवेंद्र नौका विहार के लिए गए। देवक उनके साथ था। मौसम सुहावना था। राजा के आदेश पर देवक गाने लगा। पर यह क्या! वह ठीक से गा नहीं पा रहा था। आवाज बुरी तरह कांप रही थी। उसके स्वर का माधुर्य जैसे एकदम ही गायब हो गया था। राजा

राघवेंद्र हैरानी से देवक को देखते रह गए, फिर चिल्लाए— "बंद करो !"

संगीत थम गया, सब तरफ सन्नाटा छा गया। देवक डर के मारे अपने स्थान पर जड़ हो गया। फिर तो कई बार ऐसे अवसर आए, जब राजा ने देवक को बीच में ही गाना बंद करने का आदेश दिया। उसकी आवाज खराब हो गई थी।

और फिर वह दिन भी आया जब राजा ने बेसुरा गाने के आरोप में देवक को कोड़ों से पिटवाया, उसे राजधानी से चले जाने का आदेश दिया। देवक दुखी मन से शांतिपुर छोड़कर चल दिया। उसने पत्नी और बच्चों को बिसारा भेज दिया, फिर पत्नी से बोला— "मैं कुछ दिन बाद गांव आऊंगा।" और वह वन में एक तरफ चल दिया। असल में तो उसने वन में ही अपने को समाप्त करने का निश्चय कर लिया था। वह सोच रहा था— 'मैं कहीं का न रहा। अब किस मुंह से बिसारा जाऊं। मुझे तो मर जाना चाहिए।'

अंधेरा छा गया। वन्य जीवों के डरावने स्वर गूंजने लगे। देवक बेसुध-सा एक तरफ चला जा रहा था। एकाएक उसने सामने प्रकाश देखा तो उसी तरफ बढ़ गया। वहां एक गुफा थी। प्रकाश उसी में से आ रहा था। देवक झिझकता हुआ अंदर पहुंच गया। उसने देखा, गुफा नीचे उतरती जा रही है।

गुफा के अंत में एक विशाल कक्ष था। वहां देव प्रतिमा के सामने दीपक जल रहा था। हवा में फूलों की सुगंध थी। देवक ने इधर-उधर देखा, पर कोई नजर नहीं आया। वह देवता को प्रणाम कर बैठ गया, फिर उसकी आंखों से आंसू बह चले। वह कहने लगा— "तुमने मुझे ठीक दंड दिया, जो मेरा मधुर कंठ मुझसे छीन लिया। अब मैं तुम्हारी शरण में हूं, यहीं रहूंगा, कहीं नहीं जाऊंगा।"

कुछ देर बाद कक्ष में संगीत गूंजने लगा। देवक चुप बैठा था, पर फिर उसके होंठ हिलने लगे। वह भजन गाने लगा। पहले स्वर कुछ कांप रहा था, फिर सध गया। वह लय के साथ गाने लगा। गाता रहा, गाता रहा।

जल्दी ही चारों ओर यह समाचार फैल गया कि जंगल की गुफा से गाने की आवाजें आती हैं। कुछ लोग डरे, तो कुछ उत्सुक होकर पता करने गए। जो अंदर गया, फिर बाहर नहीं आया।

एक दिन ऐसा भी आया कि राजा राघवेंद्र उस गुफा में आ पहुंचे। उनके साथ बहुत-से लोग थे। उन्होंने दूर से ही देवक का मधुर स्वर पहचान लिया। वह चकित भाव से अंदर गए और देवक के पास जाकर बैठ गए। वहां पहले से ही बहुत लोग बैठे थे। देवक अपनी संगीत साधना में तन्मय था।

एकाएक राजा राघवेंद्र बोल उठे— "देवक, तुम धन्य हो। मैं क्षमा चाहता हूं। आओ। राजधानी लौट चलो।"

देवक ने आंखें खोलकर राघवेंद्र की ओर देखा, फिर बोला— "महाराज, यह भूल अब मैं दोबारा नहीं करूंगा। राजसुख के लिए मैंने अपने कंठ को बेच दिया था। अपनों से दूर हो गया था। मुझे भगवान ने उसी का दंड दिया था। आप जाइए, मैं क्षमा चाहता हूं।"

राघवेंद्र ने कहा— "देवक, तुम्हें मेरे कारण कष्ट उठाना पड़ा, क्षमा तो मुझे मांगनी चाहिए। सचमुच मैंने तुम्हारे कंठ को कैद कर लिया था। देखो, मुक्त होकर तुम्हारे कंठ का माधुर्य लौट आया है।" कहते-कहते राघवेंद्र की आंखों से आंसू बहने लगे।

देवक ने कहा— "महाराज, आप बड़े राजा हैं। आप कुछ भी खरीद सकते हैं। पर मुझे मेरा ईश्वर मिल गया है। मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा।"

हारकर राजा राघवेंद्र अपनी राजधानी लौट गए। बाद में बिसारा के सब लोग गुफा में आए। उनके साथ देवक की पत्नी और बच्चे भी थे। उनके बहुत कहने - समझाने पर देवक गांव लौटने को तैयार हुआ— एक शर्त पर। उसने पत्नी से कहा— "मेरा खोया सुर मुझे ईश्वर की शरण में लौटने से मिला है। मैं प्रतिदिन यहां आया करूंगा।"

तब से देवक प्रतिदिन गुफा मंदिर में आने लगा। वह आया, तो वहां भीड़ जुटने लगी। एक दिन उस भीड़ में राजा राघवेंद्र भी दिखाई दिए। उनकी आंखों में आंसू थे। ●
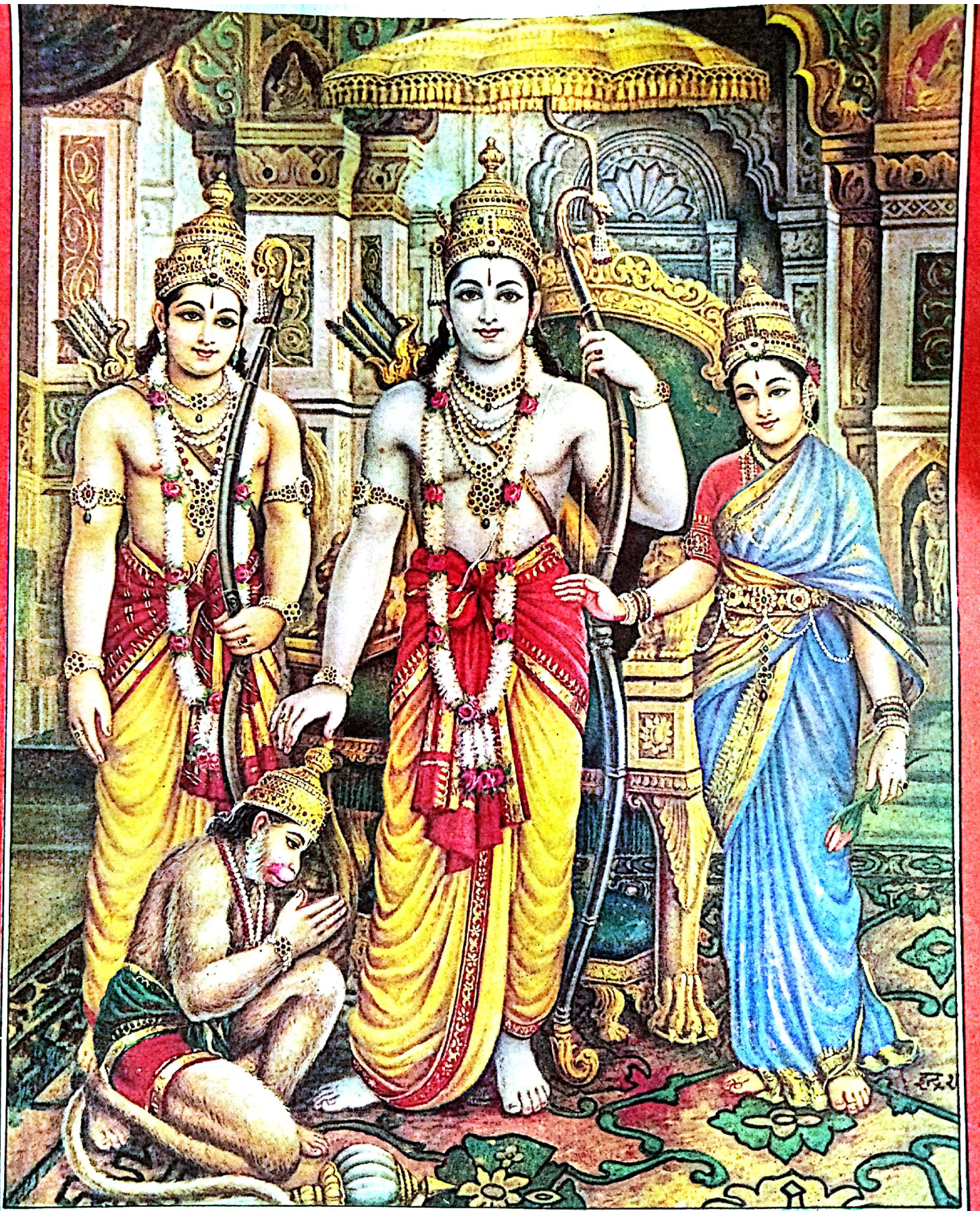
'नंदन' एलबम : १०९

सियाराम मय सब जग जानी

भगवान श्रीराम, सीता और लक्ष्मण
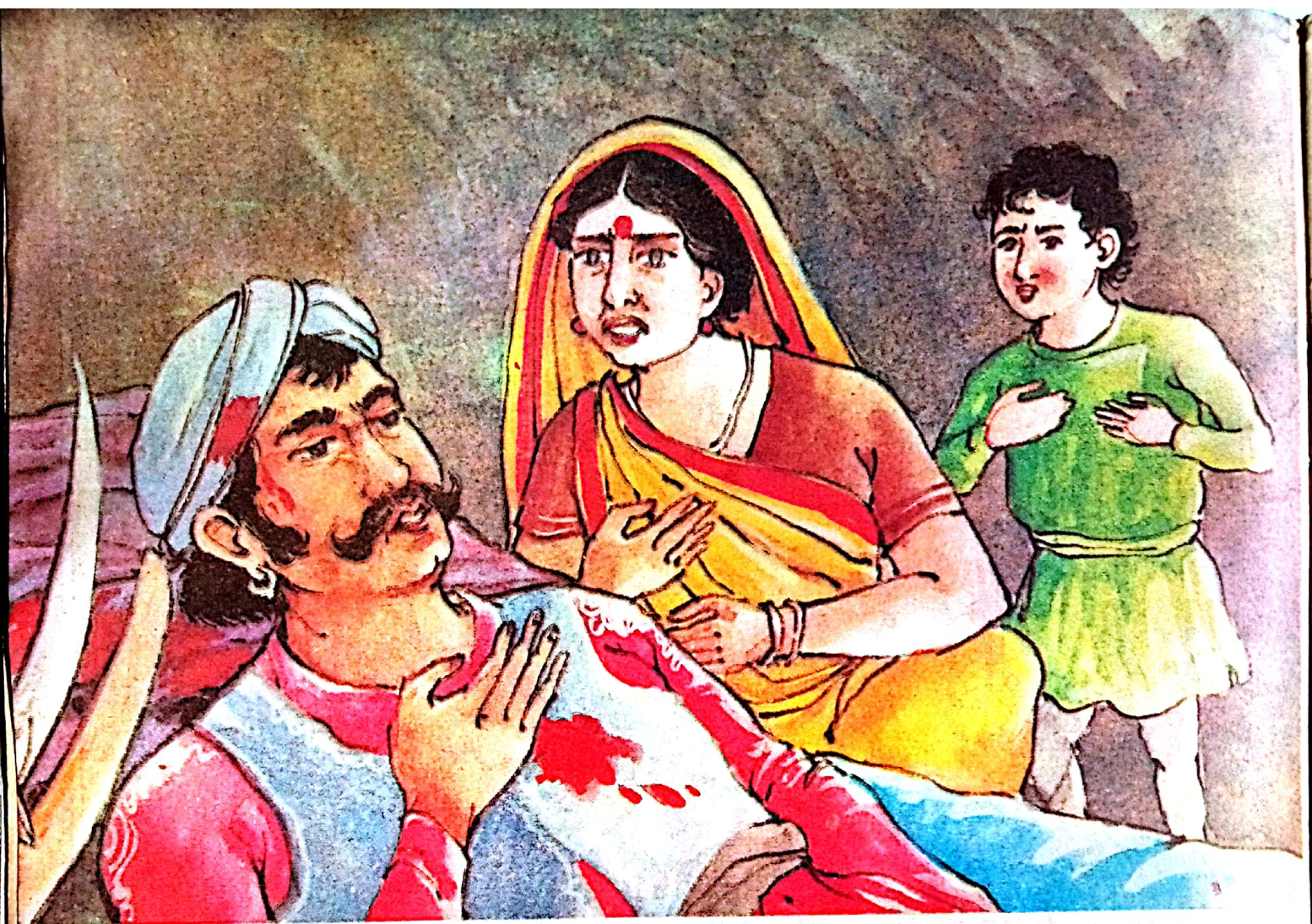
मां ने कहा था

—डा. शिवकुमार 'निडर'

पहाड़ों और जंगलों के बीच बसी थी कंचनपुरी। राजा थे कर्मवीर। शूरवीर होने के साथ-साथ वह तलवार चलाने में अजेय थे। दूर-दूर देशों के राजकुमार उनके पास तलवारबाजी सीखने आया करते थे।

दैवयोग से शादी के बीस साल बाद तक उनके कोई संतान न हुई। मंत्रियों और प्रजा के अनुरोध पर भी उन्होंने दूसरी शादी करने से मना कर दिया। वह सोचते थे—'जब भी राज्य में कोई नवयुवक अपने सद्‌गुणों से मुझे राजा बनने योग्य दिखाई देगा, उसी को दत्तक पुत्र बना लूंगा। उसे कंचनपुरी का राजा घोषित कर, संन्यास ले लूंगा।'

उन्हीं दिनों की बात है। राज्य की जनता डाकू सुल्तान सिंह के आतंक से भयभीत और परेशान रहने लगी। सुल्तान सिंह बहुत ही निर्दयी और खूंखार था। राजा ने उसे पकड़ने के लिए अनेक प्रयत्न किए, किंतु जब सेना भी उसे पकड़ने में असफल रही, तो खुद राजा ने उसे पकड़ने का निश्चय किया। वह वेश बदलकर दुर्गम जंगलों में घूमने लगे। वहां सुल्तान सिंह के पकड़े जाने की पूरी संभावना थी।

एक दिन जंगल में उन्होंने सुल्तान सिंह को घोड़े पर जाते हुए देखा। वह छिप-छिप कर उसका पीछा करने लगे। अचानक डाकू की नजर उन पर जा पड़ी। उसने वेश बदले राजा पर आक्रमण कर दिया। राजा ने भी अपने वस्त्रों में छिपी तलवार निकाल ली। पैंतरा बदल, डाकू को अपनी तलवार से घायल कर दिया। ऐसा करते समय उनके सिर से पगड़ी गिर

गई। सुल्तान सिंह राजा को पहचान गया। अपनी जान बचाने के लिए किसी तरह घोड़े पर चढ़कर भाग खड़ा हुआ।

भागते-भागते वह जंगल की एक पहाड़ी गुफा में पहुंचा। वहां उसकी पत्नी धर्मवती अपने पंद्रह वर्षीय पुत्र भूषण के साथ रहती थी। खून से लथपथ देखकर पत्नी और पुत्र ने सहारा देकर उसे चारपाई पर लिटाया। सुल्तान सिंह बेहद घायल था। लंबी-लंबी सांस लेते हुए उसने अपने पुत्र का हाथ पकड़कर कहा— "भूषण, मुझे राजा कर्मवीर सिंह ने इस हालत में पहुंचाया है। अब मैं बच नहीं पाऊंगा। बेटे, तुम मुझे यह वचन दो कि मेरी इस मौत का...राजा से बदला लोगे। मुझे वचन दो...मुझे वचन दो।"

भूषण ने जैसे ही 'हां' कहा, सुल्तान सिंह ने प्राण त्याग दिए।

इस बात को सात वर्ष गुजर गए। भूषण जवान हो गया। सुंदर, स्वस्थ शरीर होने से वह राजकुमार जैसा लगता था। बचपन ही से उसे उसके पिता ने तलवार चलाना सिखाया था। तलवार चलाने में वह निपुण था।

पिता को दिए वचन को वह आज भी नहीं भूला था। रोज उसे पूरा करने के सपने देखता था। मगर धर्मवती अपने पुत्र को डाकू नहीं बनने देना चाहती थी। वह बराबर कोशिश में लगी थी कि भूषण पिता को दिया वचन भूल जाए। बदले की भावना छोड़, एक सच्चे नागरिक के रूप में देश और समाज की सेवा करे। पर भूषण था कि राजा से बदला लेने के लिए छटपटा रहा था।

एक दिन कुछ सोचकर धर्मवती ने भूषण से कहा— "बेटे, तुम पिता के वचन को पूरा करना चाहते हो, तो तुम्हें कुछ बातें मेरी भी माननी होंगी। अखिर मैं तुम्हारी मां हूं।"

भूषण अपनी मां से बेहद प्यार करता था। उसने मां के सिर पर हाथ रखकर कहा— "मां, सिर्फ पिता के वचन को छोड़कर तुम मुझसे जो कुछ कहोगी, उसे मैं अपने प्राण देकर भी निभाऊंगा।"

मां बोली— "बेटे, मेरी चार बातों पर चलना। पहली— शरण में आए हुए की रक्षा करना। दूसरी— धोखे से किसी पर वार न करना। तीसरी— किसी के साथ विश्वासघात न करना। चौथी— अपना दोष सदा स्वीकार करना।" भूषण ने शपथ खाई कि वह इन चारों बातों का पालन करेगा।

कुछ ही दिन बाद मां भी भूषण को अकेला छोड़कर चल बसी।

एक दिन भूषण गुफा के बाहर घूम रहा था। अचानक उसे पास ही एक आदमी की चीख और शेर की दहाड़ सुनाई दी। वह दौड़कर वहां पहुंचा, तो देखा— राजसी वस्त्र पहने एक व्यक्ति शेर से लड़ते हुए काफी घायल हो चुका है। भूषण अपनी तलवार से शेर पर बुरी तरह टूट पड़ा। कुछ ही देर में शेर को मार गिराया।

अपनी गुफा में लाकर उस व्यक्ति की मरहम-पट्टी की। वह व्यक्ति बोला— "बेटे, तुम बहुत ही बहादुर और परोपकारी हो। अगर तुम न आते, तो हम न बचते। तुम कौन हो? इस जंगल में क्यों रहते हो? तुम चाहो, तो हम तुम्हें अपना अंगरक्षक बना सकते हैं। हम कंचनपुरी के राजा कर्मवीर सिंह हैं।"

सुनकर भूषण अवाक रह गया। सोचने लगा— 'यही मेरे पिता का हत्यारा है। इस समय घायल भी है। क्यों न इसे इसी समय मारकर पिता को दिया वचन पूरा कर दूं?'
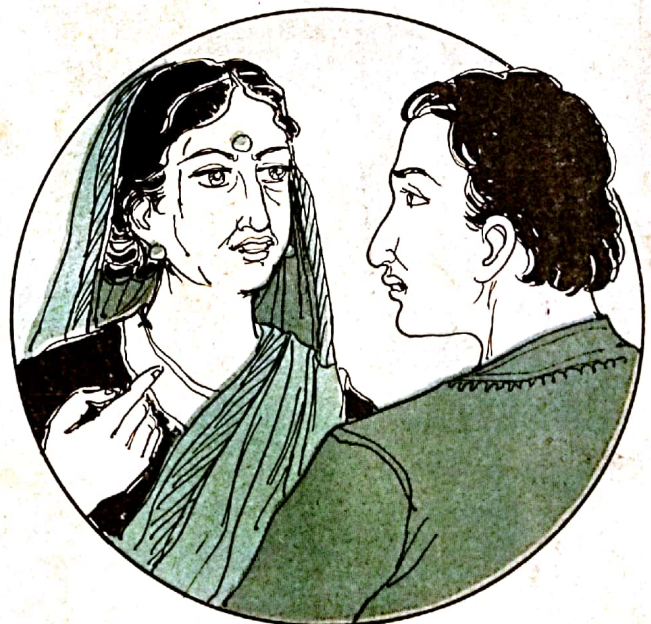
उसका हाथ तलवार की तरफ बढ़ने ही वाला था कि उसे मां के प्रथम वचन का ध्यान आया। मां ने कहा था— 'शरण में आए हुए की रक्षा करना।' सोचते ही उसका हाथ वहीं का वहीं रुक गया। तभी राजा ने कहा— "बेटे, क्या सोचने लगे ?"

"महाराज, मैं आपका अंगरक्षक बनने को तैयार हूं।"— भूषण बोला। वह मन ही मन सोच रहा था— 'अंगरक्षक बनकर मैं इसे अवसर मिलते ही समाप्त कर दूंगा। इस समय इसे मारने से मां को दिया हुआ वचन भंग हो जाएगा।'

भूषण अब कंचनपुरी में राजा का अंगरक्षक बनकर राज महल में रहने लगा। राजा उसे बहुत प्यार करता था। एक दिन भूषण को पता चला कि राजा रात में वेश बदलकर नगर में घूमता है। 'क्यों न उसे बदले हुए वेश में ही समाप्त कर डालूं। पिता का वचन भी पूरा हो जाएगा और कोई जान भी न पाएगा।'— भूषण ने सोचा।

बस, एक रात वह भी वेश बदलकर अपनी तलवार छुपाए हुए राजा को मारने, उसका पीछा करने लगा। एक जगह गहरा अंधेरा था। उसने अवसर पा, अपनी छिपी हुई तलवार हाथ में लेकर राजा पर पीछे से वार करना चाहा। तभी उसे मां का दूसरा वचन याद आया। मां ने कहा था— 'बेटे, धोखे से किसी पर वार न करना।' भूषण का हाथ वहीं रुक गया। 'हे भगवान, मैं क्या करूं ?'— वह सोचने लगा।

इसी तरह दिन बीतते गए। राजा ने एक दिन भूषण से कहा— "बेटे, आज से हमारा भोजन रसोई घर में तुम्हारी देख-रेख में बना करेगा। तुम हमारे सबसे ज्यादा विश्वासपात्र हो। राज्य का कोई भी कर्मचारी दुश्मनों से मिलकर हमें हानि पहुंचा सकता है।" भूषण ने प्रसन्न होकर राजा के सामने अपना सिर झुका दिया।

अब राजा का भोजन भूषण की देख-रेख में बनने लगा। एक दिन उसने सोचा— 'क्यों न राजा के भोजन में जहर मिला दिया जाए। राजा के समाप्त होते ही पिता का वचन पूरा हो जाएगा और मैं जंगल की तरफ भाग लूंगा।'

बस, अवसर पाकर उसने राजा के भोजन में जहर मिला दिया। राजा-रानी जैसे ही भोजन करने बैठे कि भूषण को झटका-सा लगा। उसे याद आया— मां ने कहा था— 'बेटे, किसी के साथ विश्वासघात करना कायरता है।' वह मां के तीसरे वचन को याद कर एकदम चीख पड़ा— "नहीं... महाराज ... नहीं, इस भोजन को मत खाना, इसमें जहर मिला है।"

रानी एकदम चौंक पड़ी। मगर राजा शांत रहे। सभी रसोइयों को राजा की आज्ञा से बंदी बना लिया गया।

भूषण के सामने ही रसोइयों पर कोड़े बरसने लगे। वे चीख-चीखकर अपने को निर्दोष बता रहे थे। तभी भूषण के मस्तिष्क में मां के चौथे वचन की बिजली कौंधी— 'अपना अपराध स्वीकार करने वाला महान होता है।' भूषण एकदम रो पड़ा। बोला— "महाराज, अपने सिपाहियों को रोकिए। आपका असली अपराधी मैं हूं। मैंने ही आपके भोजन में विष मिलाया था।" और रो-रोकर उसने शुरू से अंत तक की सारी कहानी राजा को सुना दी।

राजा ने उसे गले लगा लिया। बोले— "बेटे, तुम्हारी मां महान थी। वह नहीं चाहती थी कि तुम भी अपने पिता की तरह हत्यारे और डाकू बनो। इसलिए उसने किसी के द्वारा तुम्हारे इस वचन की खबर हम तक पहुंचा दी थी। हम तुमसे मिलने उस दिन जंगल में गए थे। मगर शेर से सामना होने पर हम घायल हो गए। हमने जानबूझकर तुम्हें अपना अंगरक्षक बनाया था। तुम्हारे हर काम पर हमारी पहले से ही नजर थी। तुमने इस भोजन में जो विष मिलाया, उसे पहले ही हमारा एक विश्वासपात्र सेवक बदल चुका था। बेटे, मुझे जिस युवक की तलाश थी, वह मुझे मिल चुका है। कल हम खुद तुम्हें अपने हाथों कंचनपुरी का राजा बनाएंगे।" और एक दिन वही डाकू का बेटा राजा बनकर तन, मन, धन से राज्य और जनता की सेवा करने लगा।

रानी बाहर

— डिकी सेलूजोन

तिब्बत में उन दिनों सामुजलोका नाम का प्रांत था।

उस प्रांत में एक घना जंगल था। जंगल में कोई सिद्ध साधु रहते थे। उनकी कुटिया के पास एक झरना था। उसी का पानी साधु जी काम में लाया करते थे। एक दिन कोई प्यासी हिरनी झरने के पास आई। साधु जी के बार-बार भगाने पर भी उसने झरने का पानी पी लिया। दस महीने बाद उसने एक सुंदर लड़की को जन्म दिया। उस लड़की का नाम सुर्किनीमा था।

सामुजलोका का राजा बड़ा दयालु था। सभी लोग उसका आदर करते थे। एक दिन राजा जंगल में शिकार खेलने गया। घूमते-घूमते वह रास्ता भूल गया। साथी बिछुड़ चुके थे। वह परेशान बना जंगल में भटकता रहा। अंत में वह भी उसी झरने के पास पहुंचा। उसे बहुत प्यास लगी थी। वह पानी पीने आगे बढ़ा।

''यहां का पानी मत पीजिए।''—अचानक राजा के कानों में एक मधुर आवाज पड़ी।

राजा ने चौंककर इधर-उधर देखा। यह आवाज एक लड़की की थी, जो उसकी पीठ के पीछे खड़ी थी। राजा चकित रह गया। उसने वैसी सुंदर लड़की कभी नहीं देखी थी।

यह सुर्किनीमा थी। अपने पिता के साथ आश्रम में रहती थी। राजा उसके साथ उसके घर गया। जी भर कर पानी पी,उसने भोजन किया। रात घिरने लगी थी। अतः राजा वहीं लेट गया। लेकिन रात भर नींद नहीं आ सकी। राजा उस लड़की को भुलाए नहीं भूल सका। उसने मन ही मन कहा —'मैं उस लड़की से शादी जरूर करूंगा।' अगले दिन राजा ने लड़की के पिता जी को अपनी इच्छा बताई। उनकी अनुमति ले, राजा सुर्किनामा को लेकर महल में वापस आ गया।

सुर्किनीमा न सिर्फ सुंदर थी, बल्कि बहुत नेक और दयालु भी थी। वह हमेशा गरीब लोगों की मदद करती थी। समय-समय पर तरह-तरह की चीजें उनमें बांटती रहती थी। इसलिए सारे देश के लोग उसे प्यार करते थे। राजा भी उसे बहुत चाहता था।

राजा की अनेक पत्नियां थीं। वे सभी सुर्किनीमा से ईर्ष्या करती थीं। रानियों में एक बहुत ही होशियार और चालाक रानी थी। उसका नाम हाचान था। उसने सुर्किनीमा को रनिवास से निकालने के लिए एक योजना बनाई।

एक दिन सुर्किनीमा के महल के सामने एक भिखारिन आई,वह जोर-जोर से रो रही थी। रोना सुनकर बहुत-से लोगों ने उसे आ घेरा। सुर्किनीमा भी बाहर आई। उसने पूछा—''क्यों रो रही हो ?'' भिखारिन ने कहा—''महारानी जी ! मेरा बच्चा बहुत बीमार है। सिर्फ आप ही मेरी मदद कर सकती हैं।''

यह कहते-कहते वह फिर रोने लगी। सुर्किनीमा ने पूछा—''उसको क्या हुआ ?''

भिखारिन बोली—''पता नहीं, मगर एक साधु ने कहा है कि सिर्फ आपके तावीज से ही मेरा बच्चा ठीक हो सकता है।''
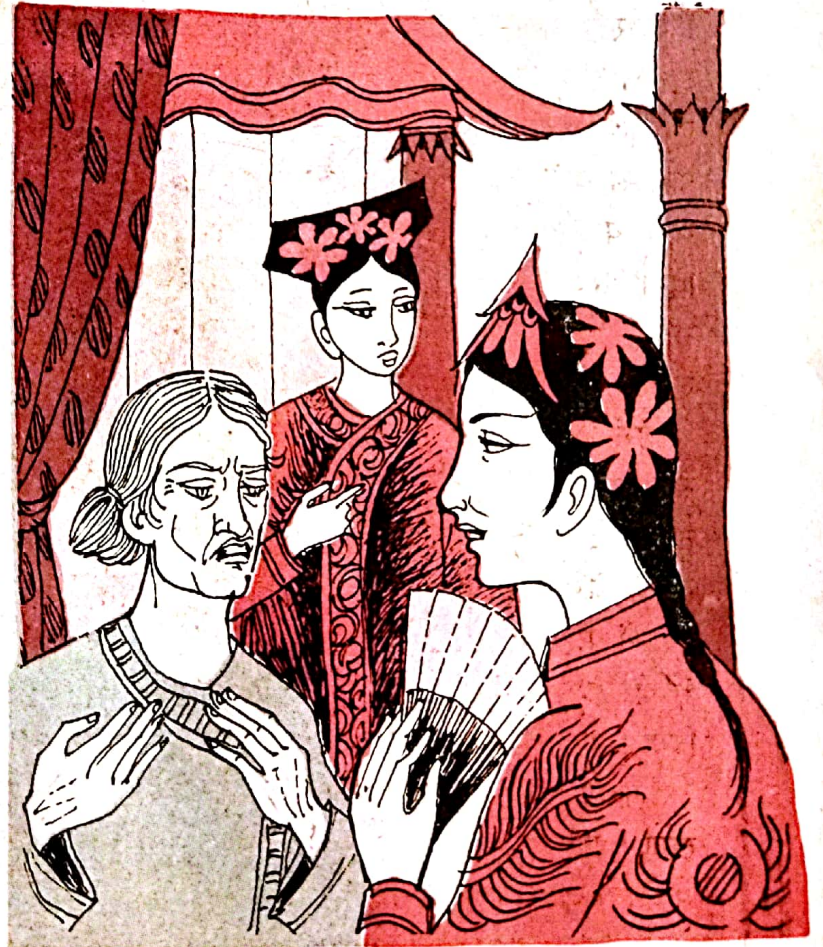
सुनकर सुर्किनीमा चुप हो गई। उसे यह तावीज एक देवी ने दिया था। कहा था कि जब तक वह तावीज उसके पास रहेगा, तब तक उसे कोई हानि नहीं पहुंचेगी। सुर्किनीमा ने थोड़ी देर तक सोचा। फिर अपने गले से तावीज उतारकर भिखारिन को दे दिया।

कुछ दिन बाद सुर्किनीमा बीमार पड़ गई। बीमारी दिन-प्रति दिन बढ़ती गई। राजा परेशान हो उठा। उसने सुर्किनीमा का इलाज कराने के लिए सारे देश के वैद्यों को बुलाया। लेकिन कोई वैद्य इलाज करना तो दूर, यह भी पता नहीं लगा सका कि उसे क्या बीमारी है।

उन दिनों सुर्किनीमा मां बनने वाली थी। इसलिए उसकी बीमारी राजा को और भी परेशान करने वाली बन गई थी। मगर कुछ न हो सका। सुर्किनीमा ने समय पर एक बच्चे को जन्म दिया, लेकिन उसे बच्चा नहीं कहा जा सकता था। उसे देखकर राजा बेहोश हो गया।

कुछ घंटे बाद राजा होश में आया, तो हाचान उसके सामने खड़ी थी। हाचान ने राजा से कहा—"सब लोग कहते हैं कि सुर्किनीमा राक्षसी है। उसे तुरंत महल से निकाल देना चाहिए।"

राजा ने हाचान की बात मान ली। आज्ञा दी कि सुर्किनीमा को महल से निकाल दिया जाए। सुर्किनीमा बहुत कमजोर थी। लेकिन राजा का हुक्म, सुर्किनीमा को सिपाही महल से दूर छोड़ आए। बेचारी सुर्किनीमा कुछ दूर चली, फिर बेहोश होकर गिर पड़ी। जब होश में आई, तब देखा कि वह एक कुटिया में थी। उसे एक मठवासी ने बचाया था। कई साल बाद सुर्किनीमा भिक्षुणी बन गई। जगह-जगह जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करने लगी।

एक दिन सामुजलोका में पहुंची। मैदान में बैठकर धर्म का प्रचार करने लगी। श्रोताओं में वह भिखारिन भी थी, जिसने कुछ वर्ष पहले सुर्किनीमा से तावीज मांगा था। अब वह बूढ़ी हो गई थी। सुर्किनीमा की बातें सुनकर उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने सुर्किनीमा को सब सच-सच बता दिया कि उसने सब कुछ रानी हाचान के कहने पर किया था। फिर उसने सुर्किनीमा को उसका तावीज भी वापस कर दिया।

एक दिन राजा सुर्किनीमा से मिलने आया। सुर्किनीमा ने राजा को एक दुखी लड़की की कहानी सुनाई। कहानी सुनते-सुनते राजा की आंखों में आंसू आ गए। कहानी खत्म हुई, तो राजा ने पूछा—"कृपया बताइए, वह लड़की अब कहां है ?"

"आप अपने आस-पास ध्यान से देखिए।" —सुर्किनीमा ने जवाब दिया।

राजा सुर्किनीमा को देखता रहा। देखते-देखते ही वह चीखने लगा—"सुर्किनीमा, सु... क्या आप..."

—"हां, मैं।"

राजा ने सुर्किनीमा को पहचान लिया।

महल में जाते ही राजा ने आज्ञा दी कि हाचान को महल से निकाल दिया जाए। सुर्किनीमा को पता चला, तो उसने अनुरोध किया—"कृपया ऐसा न करें। वह भी मेरी बहन है। हमें दूसरों की गलती माफ कर देनी चाहिए।" जब प्रजा ने यह सुना, तो वह सुर्किनीमा का जय-जयकार करने लगी।

(तिब्बती लोककथा)

हंसते फूल

हम हैं हंसते फूल डाल के
हम हैं हंसते फूल,
सारी धरती को महकाते
मस्त हवा में झूल—
हम हैं हंसते फूल !

बड़ी सुबह खिलते उपवन में
भरते हर्ष सभी के मन में,
किरन सुनहरी जगमग करती
जब सरिता का कूल—
हम हैं हंसते फूल !

हमसे सुंदर लगती धरती
दुनिया प्यार हमें है करती,
संदेशा वसंत का लाते
कभी न जाते भूल—
हम हैं हंसते फूल !

तितली आती, भौंरे गाते
मीठे-मीठे गीत सुनाते,
हम खिलते तो चंदन बनकर
महका करती धूल—
हम हैं हंसते फूल !

—बाबूलाल शर्मा प्रेम

ऊपर-नीचे

बिल्ली बैठी छत के ऊपर
अपनी पूंछ हिलाए,
गोल-गोल आंखें मटकाकर
सबको मुंह बिचकाए।
चुन्नू नीचे से डांटे तो
उसको जीभ दिखाए,
दौड़ के चुन्नू ऊपर जाए
तो नीचे आ जाए।
ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर
चुन्नू दौड़ लगाए,
दौड़-दौड़कर थक गया चुन्नू
बिल्ली हाथ न आए।

—रश्मिस्वरूप जौहरी

चल रहे मिला कदम

कोटि-कोटि कंठ से
एक स्वर निकल रहा,
भारतीय हम प्रथम
चल रहे मिला कदम।

एक गांव के न हम
एक ठांव के न हम,
एक नाम के न हम
एक धाम के न हम।
किंतु भारतीय हम
भारतीय ही प्रथम।
चल रहे मिला कदम।

हम न पूर्वी यहां
हम न पच्छिमी यहां,
हम न उत्तरी यहां
हम न दक्खिनी यहां।
भारतीय ही प्रथम
हैं अनेक, एक हम।
चल रहे मिला कदम।

एक आन-बान है
एक स्वाभिमान है,
एक राष्ट्रगीत है
एक राष्ट्र-गान है।
एक भारतीय हम
भारतीय ही प्रथम
चल रहे मिला कदम।

—द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

सिर पर फूल

अरे, अरे मुर्गे !
इधर को आना,
सिर पर ये फूल-सा
क्या है, बताना।
देखो, मैं मुट्ठी भर
लाया हूं दाना।
कुट-कुट-कुट, कुट-कुट-कुट
जी भरकर खाना।
गर्दन उठाकर फिर
आंखें नचाना।
कुकड़ूं कूं, कुकड़ूं कूं
गाना सुनाना।
ता ना ना, ता ना ना
ता ना ना, ता ना।
देखो तो मौसम है
कितना सुहाना।

—रमेश तैलंग

अगर

होते जो बिस्कुट के पेड़ !
दौड़-दौड़कर जाते हम सब
तोड़-तोड़कर खाते,
मम्मी-पापा की खातिर
जेबों में भरकर लाते।
करते नहीं जरा भी देर !
अगर लताओं में टाफी के
गुच्छे लटके होते,
मम्मी से पैसा न मांगते,
और नहीं हम रोते।
लेते तोड़ पांच-छह सेर !
लड्डू, पेड़े, बरफी, चमचम
की जो होती खेती,
दादी मां चोरी-चोरी नित
झोले में धर देतीं।
होता घर में इनका ढेर !

—राजनारायण चौधरी
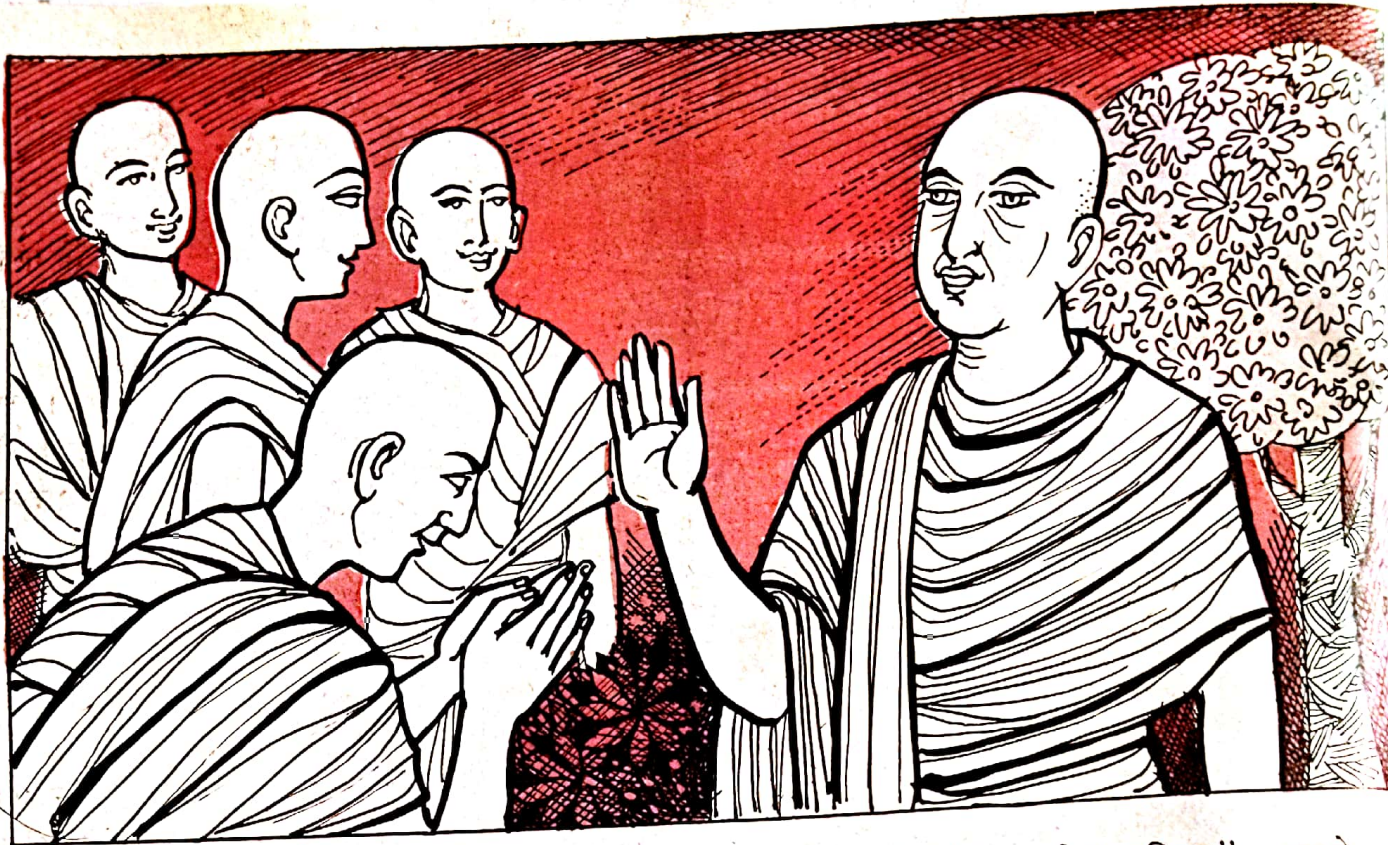
हां में ना

—विनयकुमार

एक बार तथागत ने भिक्षु संघ की बैठक बुलाई। उन्होंने सभी से कहा—"मैं अब लगभग छप्पन वर्ष की आयु प्राप्त कर चुका हूं। मुझे अब एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो मेरी सेवा कर सके। संघ मुझे अनुमति प्रदान करे।"

यह सुनकर सारिपुत्र तथा मौद्गल्यायन आदि भिक्षुओं ने सेवा करने के लिए उत्सुकता प्रकट की। तथागत ने इसे स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करते हुए कहा—"आप लोग भिक्षु धर्म का निर्वाह करें। संघ और तथागत की वही सबसे बड़ी सेवा होगी।"

तथागत की यह राय सुनकर संघ के कई बुजुर्ग सदस्यों ने भिक्षु आनंद को प्रोत्साहित करते हुए कहा—"आनंद, तुम्हारे लिए यह अच्छा अवसर है। तुम तथागत से सेवा करने का अवसर मांगो।"

मुसकराकर आनंद ने कहा—"ऐसा कहकर मैं अन्य बंधुओं का शुभ अवसर छीनना नहीं चाहता।"

"लेकिन आनंद, तथागत की सेवा करने का अवसर तुम्हें त्यागना नहीं चाहिए। बल्कि दूसरे को मिल रहा हो, तो उसे झपट लेना चाहिए।"—एक ने राय प्रकट की।

"मैं कोई चील-कौआ तो हूं नहीं, जो अवसर पाकर झपट्टा मारूं।"—आनंद ने कहा।

"सोच लो आनंद! तथागत की सेवा का यह अवसर फिर इतनी सहजता से मिले भी या नहीं, क्या पता?"—एक भिक्षु ने अपनी राय जाहिर की।

बहुत ही विनयशीलता से आनंद ने कहा—"आप मेरे शुभचिंतक हैं। इसे मैं बड़ी कृपा मानता हूं। मेरा सोचना यह है कि सेवा तो सहज प्राप्त होती है। तथागत मुझे भी संघ कार्य में लीन देख रहे हैं। वह यदि उचित समझकर मुझे स्वयं सेवा का आदेश प्रदान करेंगे, तो मेरे उत्साह की सीमा नहीं रहेगी।"

संघ के सदस्यों की ये बातें तथागत तक भी पहुंचीं। वह बोले—"भिक्षुओ, आनंद को प्रोत्साहित करने की जरा भी जरूरत नहीं है। वह स्वयं मेरी सेवा करेगा। मैं उसके मन की बात जानता हूं। वही मेरी सेवा में रहकर मेरा परिचारक रहेगा।"

तथागत की यह बात सुनकर आनंद प्रसन्न हो उठे। बोले—"मैं आभारी हूं कि आपने मुझे

परिचारक बनने के योग्य समझा। किंतु मेरी चार इच्छाएं और चार याचनाएं हैं। कृपया आप उन्हें स्वीकार करें।''

''तुम्हारी इच्छाएं और याचनाएं जो भी हों, मैं सुन तो लूं आनंद। फिर कुछ कहूंगा।''—तथागत ने कहा।

आनंद ने कहा—''मेरी ये चार इच्छाएं हैं—आप अपने पाए हुए चीवर,पात्र आदि मुझे उपहार स्वरूप नहीं दें। भिक्षा में हिस्सा भी नहीं दें। एक गंध कुटी में निवास न दें और अपने निमंत्रण में मुझे लेकर भी नहीं जाएं।''

''तुम्हारी इच्छाओं का पूरा सम्मान है. आनंद। एक जिज्ञासा जरूर है कि इनमें तुम क्या दोष देख रहे हो? मुझे स्पष्ट रूप से बतलाओ।''—तथागत ने तभी प्रश्न किया।

—''भगवन, यदि ये चारों चीजें जारी रखेंगे तो मेरे सहयोगी सोचेंगे, आनंद स्वार्थ वश कुछ पाने की लालसा में सेवा कर रहा है।''

''ठीक है। मैं तुम्हारी चारों इच्छाओं को पूरा करूंगा।''—तथागत ने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाकर कहा।

''और भगवन, मेरी चार याचनाएं भी हैं। इन्हें भी आप सुनकर उचित आदेश प्रदान करें।''—आनंद ने विनय की।

—''बताओ वे क्या-क्या हैं?''

''भगवन, वे चार याचनाएं इस तरह हैं—आप मेरे निमंत्रण में अवश्य ही आएं। दर्शनार्थ आने वाले व्यक्ति को मैं उचित अवसर पर जब चाहूं, तभी आपके दर्शन करवा सकूं। मुझे किसी समय भी आपके पास आने की रोक न हो। कहीं और जो आप प्रवचन दें, वे भी मुझे आप आकर सुना दिया करें। मैं आपकी इस कृपा के लिए ऋणी रहूंगा।'' —आनंद ने कहा।

''वत्स आनंद, तुम्हारी इच्छाओं और याचनाओं को स्वीकार करते हुए मैं बहुत आनंदित हूं।''—कहकर तथागत ने आनंद को चरणों में नत देख, सिर पर आशीष भरा हाथ रखा।

आनंद उनके परिचारक हो गए। ●

एक नहीं, सौ

—सुनीति

बहुत समय पहले की बात है, उड़ीसा के किसी गांव में दामोदर नाम के एक ज्योतिषी रहते थे। ज्योतिष में उनका बहुत नाम था।

एक दिन जब उनके घर में बेटा पैदा हुआ, तो उन्होंने उसकी भी जन्म कुंडली तैयार की। ग्रहों की गणना करते हुए उन्होंने देखा कि बेटे की आयु कुल एक बरस की है। और वह माता-पिता के लिए संकट उत्पन्न करेगा।

दामोदर ने बेटे को एक टोकरी में रखकर नदी में प्रवाहित कर दिया। सोचा—'जब एक बरस बाद इसे जाना ही है, तो आज ही क्यों नहीं?'

भारी मन से वह घर लौट आए। कुछ दिन मन उदास रहा, पर फिर कामकाज में सब भूल गए। होते-होते ज्योतिष में उन्होंने इतनी उन्नति की कि राज ज्योतिषी बन गए।

उधर वह बच्चा बहते-बहते नदी के किनारे संध्या पूजन के लिए आए एक ब्राह्मण के हाथ लगा। परमात्मा की देन समझकर उन्होंने उस बच्चे को बड़े ही प्रेम से पाला। सब प्रकार की विद्याओं में निपुण कर दिया। बालक बहुत मेधावी था, ज्योतिष में उसकी विशेष गति थी। बीस बरस की छोटी आयु में ही वह ज्योतिष का प्रकांड पंडित बन गया। उसका नाम था माधव।

माधव एक बार अपनी कुंडली देखने बैठा, तो बहुत चौंका। उसने अपने पिता से खोद-खोदकर सारी बातें पूछीं।

अपनी ज्योतिष विद्या से पता लगाते-लगाते वह उस नगर में पहुंच गया, जहां उसके पिता राज ज्योतिषी थे।

थोड़े दिनों में ही नगर में उसके नाम की धूम मच गई। बात राजा के कानों तक भी पहुंची। राजा ने उसे अपने यहां बुलवाया और बहुत-से प्रश्न पूछे।

सही उत्तर पाकर राजा ने उससे कहा—''माधव पंडित, हम तुम्हारी योग्यता से बहुत खुश हैं। मांगो,

क्या मांगते हो?''

माधव ने कहा—''महाराज, अगर आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो मुझे राज ज्योतिषी जी के साथ प्रतियोगिता का अवसर दिया जाए।''

राजा ने कहा—''तुम अभी बच्चे हो और राज ज्योतिषी जी की सारी उम्र इसी काम में बीत गई है। अगर हार गए तो जानते हो, उसका क्या दंड होगा? तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।''

माधव ने बिना झिझके उत्तर दिया—''महाराज, मुझे शर्त स्वीकार है। आप राज ज्योतिषी जी को बुलवाइए।''

दामोदर पंडित जैसे ही आए, माधव ने उन्हें देखकर पहचान लिया कि वास्तव में वही उसके पिता हैं।

दामोदर पंडित राज ज्योतिषी के अभिमान में फूले थे। उन्होंने माधव की ओर हिकारत भरी नजर से देखा। सोचने लगे—'क्या यह युवक मुझे शास्त्रार्थ में हराएगा? जान पड़ता है, इसकी मौत ही इसे यहां घसीट लाई है।' उन्होंने पूछा—''आकाश में घटने वाली किसी अनहोनी घटना के बारे में बताओ।''

माधव ने प्रश्नकर्ता की ओर देखा, खड़िया से थोड़ा हिसाब लगाया। फिर कहा—''महाराज, श्रावण शुक्ला एकादशी के दिन तीन बजकर पचीस मिनट पर आकाश से एक बहुत बड़ी मछली पृथ्वी पर गिरेगी।''

राज ज्योतिषी ने कहा—''महाराज, गणना सही है। किंतु अभी यह बताना शेष है कि मछली गिरने की जगह कौन-सी होगी।''

माधव ने फिर हिसाब लगाया और कहा—''महाराज, जहां हम खड़े हैं, मछली इसी के सामने मैदान में गिरेगी।''

—''नहीं महाराज, यहां गणना में इनसे थोड़ी-सी भूल हुई है। मछली यहां से पांच मील दूर कदली वन में जाकर गिरेगी।''

राजा ने माधव से कहा—''ज्योतिषी, हम तुम्हें एक बार और विचार करने का अवसर देते हैं।''

माधव ने थोड़ी देर मन ही मन कुछ गणना की। फिर कहा—''महाराज, मेरी गणना तो यही कहती है कि मछली यहीं गिरेगी।''

राजा ने कहा—''इस विवाद का निर्णय परिणाम देखकर ही हो सकता है। माधव पंडित तब तक हमारे अतिथि बनकर यहीं रहेंगे।''

निश्चित दिन आया। भारी भीड़ तमाशा देखने के लिए आ जुटी। ठीक समय पर आकाश से एक विशाल मछली उसी जगह पर आकर गिरी, जहां माधव ने कहा था।

चारों ओर तालियों के साथ माधव पंडित का जय-जयकार होने लगा।

राज ज्योतिषी पंडित दामोदर ने हार मानते हुए कहा—''युवक, मैं तुमसे हार गया। मुझे दंड स्वीकार है।''

माधव पंडित ने राजा की ओर देखते हुए हाथ जोड़कर निवेदन किया—''महाराज, मेरी प्रार्थना है कि इन्हें कोई दंड न दिया जाए। भूल करना इनकी पुरानी आदत है।''

यह सुनकर पंडित दामोदर ने नाराज होकर कहा—''यह बात ठीक है कि तुम इस समय शर्त

जीत गए हो,पर इसका मतलब यह नहीं कि तुम जो चाहो, वह अभियोग मुझ पर लगा सकते हो।''

माधव ने हाथ जोड़कर कहा—''महाराज, इनसे पूछिए कि आज से चौबीस बरस पहले इनके घर में पुत्र का जन्म हुआ था या नहीं ? उसकी जन्मकुंडली पढ़कर, उसकी एक वर्ष की अल्पायु जानकर इन्होंने उसे टोकरी में रखकर नदी में बहा दिया था। तब भी इन्होंने गणना में बिंदी की भूल की थी।''

माधव की बात सुनकर राजा ने राज ज्योतिषी से पूछा—''विप्रवर, क्या माधव पंडित की बात सच है ?''

पंडित दामोदर ने कहा—''महाराज, इनकी बात पूरी तरह सत्य है। पर मेरी वह बिंदी की भूल थी, इसका इनके पास क्या प्रमाण है। क्या मेरे पुत्र की आयु सचमुच लम्बी थी ?''

माधव ने कहा—''महाराज, इसका जीता-जागता प्रमाण इनका वह पुत्र मैं यहां सशरीर उपस्थित हूं। मैंने जब अपनी जन्म कुंडली ध्यान से देखी, तो पता चला कि आज जिनके पास मैं रह रहा हूं, वह मेरे जन्मदाता पिता नहीं हैं। इन्होंने मेरी कुंडली देखते हुए गणना में गलती कर दी। सौ बरस की आयु को एक बरस की आयु जानकर उसी समय मुझे टोकरी में रखकर बहा दिया था।''

पंडित दामोदर उठे और बोले—''बेटा,मुझे क्षमा करो। सचमुच ज्योतिष की धार पैने छुरे के समान तेज होती है। मैं उस समय यह सोचकर सुध-बुध खो बैठा था कि यह प्यारा बेटा मुझसे एक बरस में ही छिन जाएगा। इसीलिए मुझसे इतना बड़ा पाप हो गया। जरा-सी भूल ने मुझ से क्या अनर्थ नहीं करवाया !''

माधव ने कहा—''पिता जी, आपने भूल स्वीकार कर ली। यही आपका बड़प्पन है।''

पिता-पुत्र दोनों की आंखों में खुशी की चमक थी।
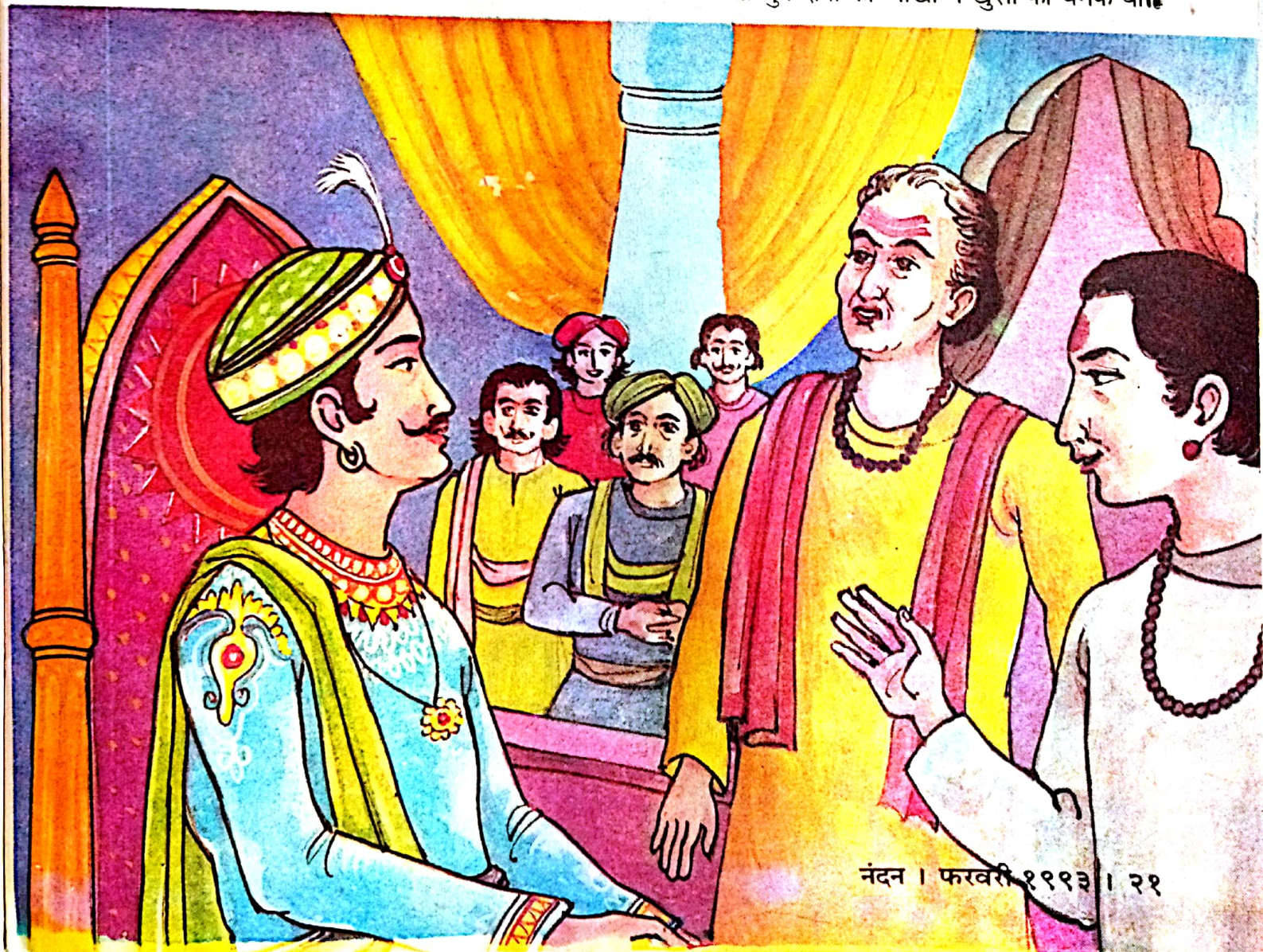
सोना राजा चांदी रानी लोहा चाकर, भरता पानी

धातुओं ने कैसे बदली हमारी दुनिया

कभी सोने-चांदी के सिक्के ढाले जाते थे। आज उनका स्थान दूसरी धातुओं ने ले लिया है। पीतल और तांबे का चलन कम हो गया है। स्टेनलैस और एल्युमीनियम ने बाजी मार ली है। बड़ी से बड़ी मशीनों में लोहे और इस्पात का अधिक उपयोग होता है।
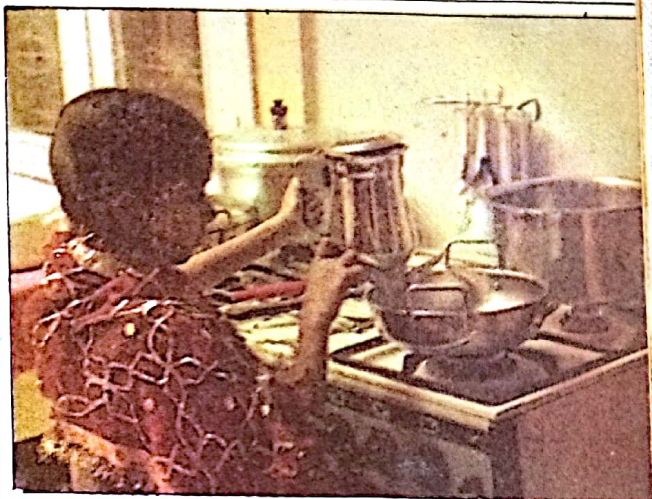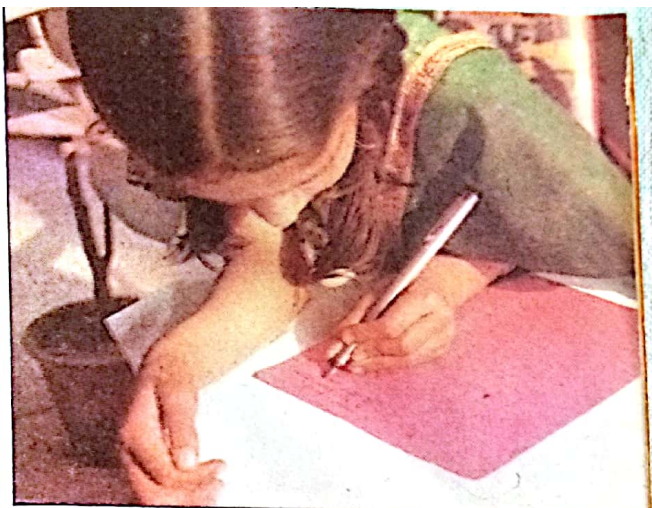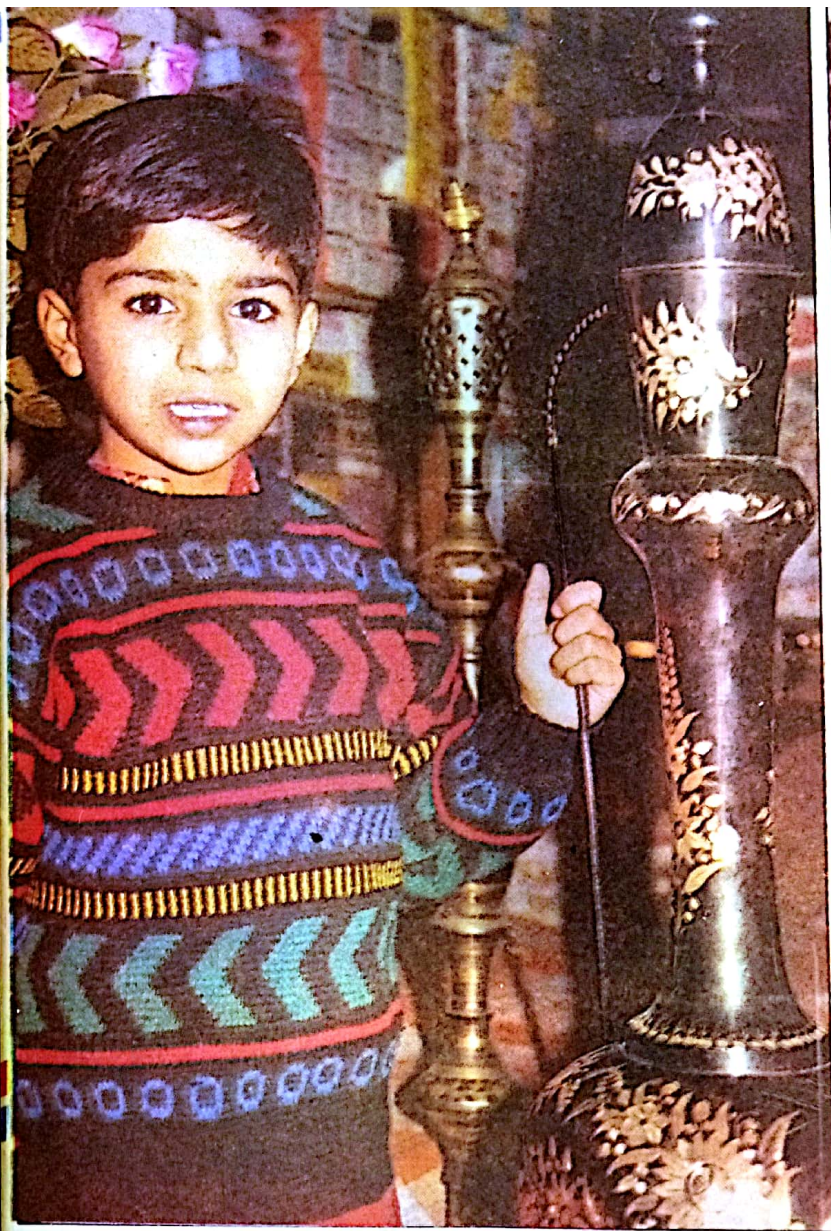
चित्र : शमशेर अ. खान
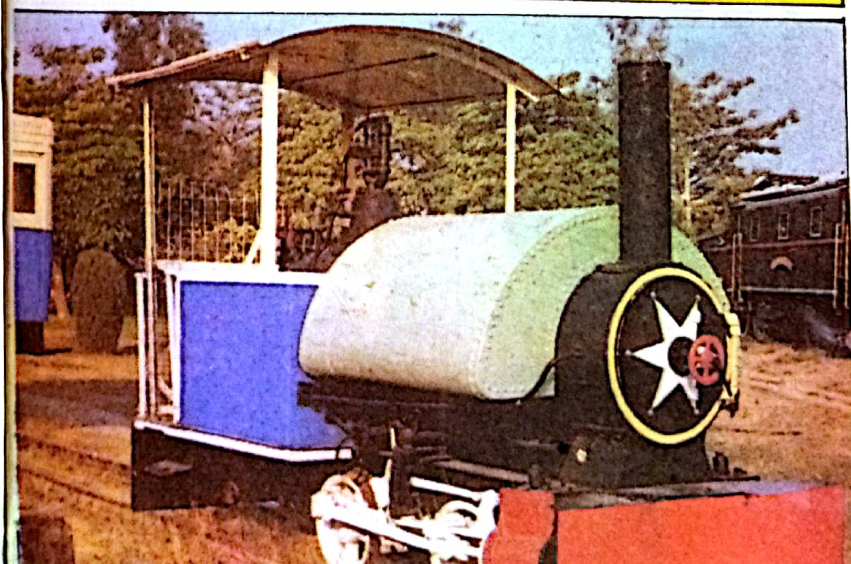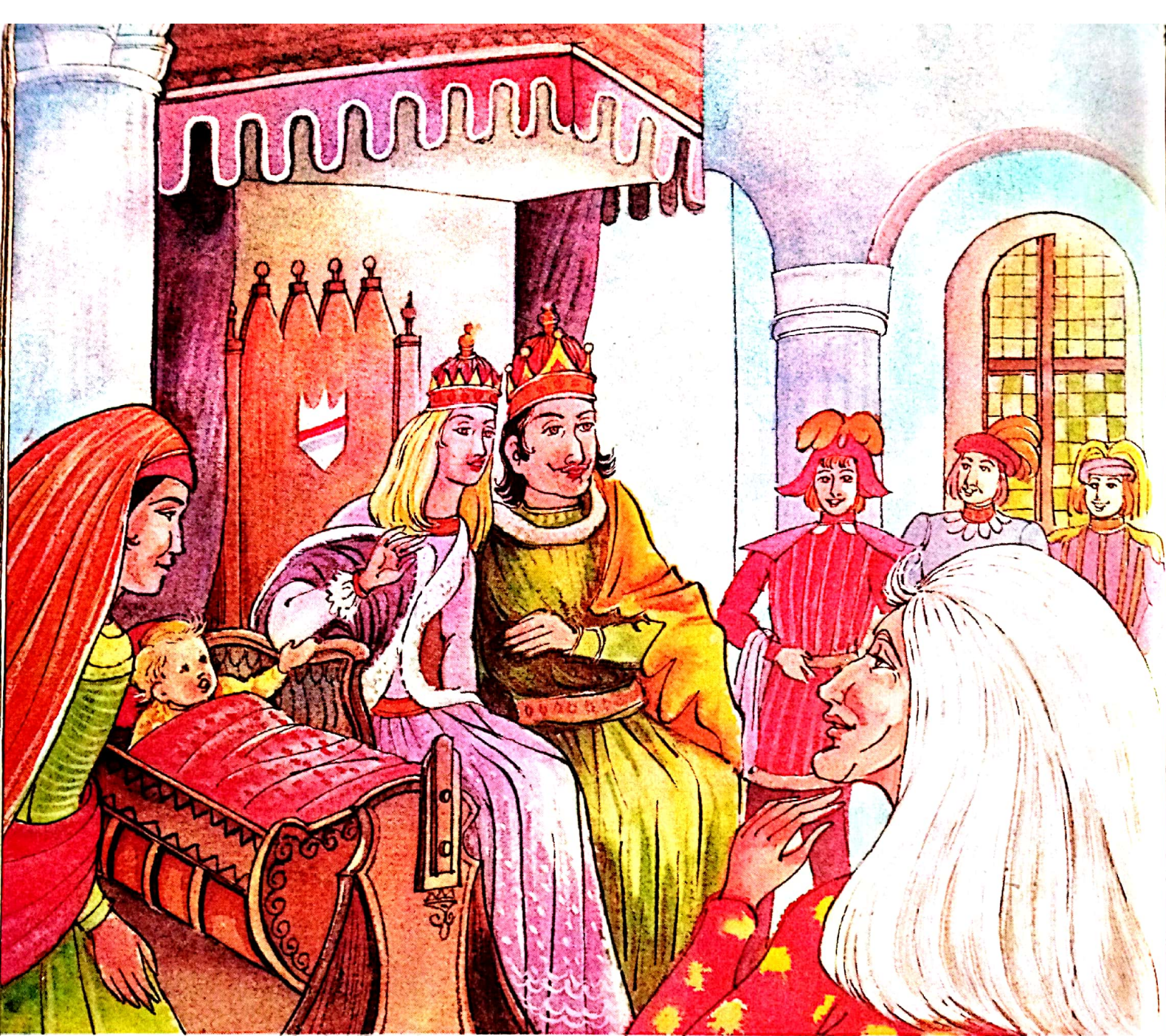
चांदी के कान

—डायना मारिया मुलोक क्रेक

एक था नौमैंस लैंड। वहां के राजा अपनी प्रजा से प्यार करते थे। हर समय यही सोचते रहते कि प्रजा के दुःख कैसे दूर हों।

काफी वर्ष बीत जाने पर रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। पूरे राज्य में खुशियां छा गईं। राजा ने दिल खोलकर दान दिया। लेकिन इस सुख में कांटा चुभ गया। बेटे को जन्म देने के बाद रानी बीमार हो गई। राजकुमार के नामकरण संस्कार वाले दिन राज्य के सभी बड़े लोग आए। प्रजा ने भी नन्हे राजकुमार को आशीर्वाद दिया। आने वालों में एक बुढ़िया भी थी। उसने अत्यंत साधारण कपड़े पहन रखे थे। बुढ़िया ने कहा—"किसी ने मुझे नहीं बुलाया। फिर भी मैं राजकुमार को आशीर्वाद देने आई हूं क्योंकि आगे चलकर इसे मेरी आवश्यकता पड़ेगी।"

सब लोग हैरान रह गए। कोई न समझ पाया कि वह कौन थी। बुढ़िया ने कहा—"राजकुमार का नाम डोलोर होगा। मैं फिर आऊंगी।" कहकर वह गायब हो गई। उसे किसी ने जाते हुए नहीं देखा।

डोलोर के जन्म के बाद नौमैंसलैंड पर जैसे संकट टूट पड़ा। कुछ दिन बाद ही रानी की मृत्यु हो गई। राजा भी रानी के दुःख में परेशान रहने लगे। उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। शायद उनके मन में यह बात बैठ गई थी कि राजकुमार अशुभ है।

डोलोर की देखभाल एक धाय करती थी। एक दिन वह सीढ़ियों के पास खड़ी थी। तभी राजकुमार उसकी गोदी से नीचे गिर पड़ा। वह बुरी तरह घबरा गई। उस समय वहां कोई नहीं था। इस घटना को धाय भी भूल गई। पर गिरने से राजकुमार डोलोर को अंदरूनी चोट लगी थी। उसके दोनों पैर बेकार हो गए।

नौमैंसलैंड के राजा का रोग बढ़ता गया। एक दिन राज्य और डोलोर को अनाथ बनाकर वह भी इस दुनिया से चले गए। अब शासन की बागडोर डोलोर के चाचा के हाथों में आ गई। वह बहुत दुष्ट स्वभाव का था। वह मन ही मन डोलोर को ठिकाने लगाने की योजना बना रहा था।

एक दिन घोषणा हुई—'राजकुमार डोलोर का राज्याभिषेक होगा। अब वही हमारे राजा होंगे।' सुनकर लोग कहने लगे—'भला दुधमुंहा बच्चा इतने बड़े राज्य का शासन कैसे संभालेगा ? और फिर उसके तो पैर भी खराब हैं।'

डोलोर का राज्याभिषेक धूमधाम से हुआ। चाचा उसे गोदी में लेकर सिंहासन पर बैठ गया। सब कहने लगे—"अब आपको ही राजा और राज्य, दोनों की जिम्मेदारी संभालनी होगी।"

इस तरह डोलोर के नाम पर उसका चाचा शासन चलाने लगा। एक दिन उसने दरबार में कहा—"हमारे राजा डोलोर का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। उन्हें कुछ दिन के लिए किसी पहाड़ी स्थान पर भेजना ठीक रहेगा।"

एक सुबह सैनिकों से घिरा एक रथ डोलोर को लेकर रवाना हो गया। सैनिकों को पता था कि उन्हें क्या करना है। डोलोर को चुपचाप दूर एक बंजर और निर्जन मैदान में बनी मीनार में कैद कर दिया गया।

फिर डोलोर के चाचा ने घोषणा की—'बड़े दुःख की बात है हमारा राजा डोलोर रास्ते में ही चल बसा।'

कुछ लोगों ने दबी जबान से कहा—"यह झूठ है।" पर खुल्लमखुल्ला कुछ कहने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

मीनार में एक दासी और एक गूंगा-बहरा सेवक था। वे ही डोलोर की देखभाल करते थे। समय-समय पर आवश्यक सामान वहां चुपचाप पहुंचा दिया जाता था। इसी तरह दिन पीछे खिसकने लगे। अब डोलोर का दुष्ट चाचा ही नौमैंसलैंड का राजा बन गया था। प्रजा उसके अत्याचारों से दुखी थी, लेकिन किसी को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था।

डोलोर धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। वह खड़ा नहीं हो पाता था, घिसटकर चलता था। मीनार की खिड़कियों से ही उसे बाहर की दुनिया के दर्शन होते थे— दूर तक फैला ऊसर मैदान, जहां हरियाली का नामोनिशान नहीं था।

एक दिन डोलोर अपने कक्ष में उदास बैठा था। तभी उसे एक बुढ़िया पास में खड़ी दिखाई दी। वह

डायना मारिया मुलोक क्रेक—इंग्लैंड में १८२६ में जन्म। इन्होंने बच्चों के लिए बहुत सी कथाएं और कविताएं लिखीं। यहां हम उनकी प्रसिद्ध रचना 'द लिटिल लेम प्रिंस' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं।

डोलोर के सिर पर हाथ फेरने लगी। डोलोर को अच्छा लगा। उसने पूछा—"तुम कौन हो ? यहां कैसे आ गईं ?"

बुढ़िया हंस पड़ी। उसने कहा—"तुम मुझे नहीं पहचानोगे। मैं हूं परी दादी। तुम्हें परेशान देखा, तो चली आई।"

"परी दादी ! कौन परी दादी ?"—डोलोर ने हैरानी से पूछा।

उत्तर में परी ने एक छोटी-सी पोटली डोलोर को थमा दी। बोली—"यह उड़ने वाला कम्बल है। तुम इस पर बैठकर कहना—'परी रानी, मैं उड़ना चाहता हूं।' बस, यह तुम्हें आकाश की सैर कराएगा। जब वापस लौटना चाहो, तो कहना—'वापस।' तुम यहां लौट आओगे।"

डोलोर उस छोटी-सी पोटली को उलट-पलटकर देखता रहा। सोचता रहा—'क्या सच, मैं उड़ सकूंगा ?' उस रात उसे नींद नहीं आई!

अगले दिन रात को दासी के नीचे चले जाने के बाद उसने पोटली को खोल डाला। अंदर से एक छोटा-सा कम्बल निकला, जो तुरंत फैल गया और हिलने लगा। डोलोर घिसटकर कम्बल पर जा बैठा। और धीरे से बोला—"परी रानी, मैं उड़ना चाहता हूं।"

कम्बल उसे लिए हुए फर्श से उठा और खिड़की की राह मीनार से बाहर निकल गया। डोलोर की खुशी का ठिकाना न था। वह खुले आकाश के नीचे उड़ रहा था। ठंडी हवा, आकाश में टिमटिम करते तारे। उसके कानों में जैसे संगीत बज रहा था। कुछ देर बाद डोलोर को ठंड लगने लगी, तो उसने कहा—"वापस।"

सुबह दासी ने देखा—डोलोर बहुत खुश है। उसने तो राजकुमार को हमेशा उदास देखा था। वह कुछ हैरान हो गई। उसने डोलोर से पूछा कि क्या कोई विशेष बात है ? पर डोलोर ने कुछ न बताया। परी ने उसे मना जो कर दिया था।

रोज रात को डोलोर परी के दिए चमत्कारी कम्बल पर बैठकर उड़ जाता। देर तक आकाश की सैर करता, फिर लौट आता। एक दिन उसका मन हुआ कि सूरज की रोशनी में आकाश की सैर करे। पर दिन के समय जादुई कम्बल पर बैठकर मीनार से बाहर जाना मुश्किल था। डोलोर सोच में डूब गया। आखिर उसने परी दादी को याद किया। परी आई और उसने अपना जादू दिखाया। डोलोर ने देखा उसके सामने हूबहू उस जैसा लड़का मौजूद है।

परी ने कहा—"डोलोर, अब तुम दिन में भी घूमने जा सकते हो। तुम्हारी अनुपस्थिति में परी-लोक का डोलोर यहां मौजूद रहेगा। जब तुम वापस आओगे तो यह यहां से चला जाया करेगा।"

इसके बाद से डोलोर दिन में भी घूमने चला जाता। एक दिन डोलोर जादुई कम्बल पर बैठकर उड़ रहा था। वह एक नगर के ऊपर से गुजरा। उसने कुछ बच्चों को देखा, जो नीचे मैदान में खेल रहे थे। उसका मन हुआ, वह भी नीचे उतरकर उनके साथ खेले। फिर वह उदास हो उठा। डोलोर की नजर अपने पैरों पर टिक गई। वह तो ठीक से खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

एकाएक उसने महसूस किया, कोई उसके सिर पर हाथ फेर रहा है। डोलोर चौंक पड़ा। परी दादी उसे प्यार कर रही थी। परी ने कहा—"डोलोर, मैं तुम्हारे पैर ठीक नहीं कर सकती, पर वैसे हर तरह से तुम्हारी सहायता करूंगी।" परी ने उसे एक सुनहरा चश्मा दिया। चश्मा लगाने से डोलोर को दूर की चीजें भी पास नजर आने लगीं। परी का दूसरा उपहार था चांदी के बने दो कान।

परी के कहने पर डोलोर ने चांदी के कान अपने कानों पर लगा लिए। लगाते ही उसे दूर-दूर की आवाजें सुनाई देने लगीं।

एक दिन डोलोर घूमने गया, तो एक चिड़िया

उसके साथ-साथ मीनार में आ गई। डोलोर ने धीरे से कहा—'प्यारी चिड़िया, तुम तो स्वतंत्र हो, फिर मीनार में मेरे साथ क्यों आ गई हो ? जाओ, वापस जाओ।'' लेकिन चिड़िया गई नहीं, मीनार में ही मंडराती रही। चिड़िया को परी ने डोलोर के पास भेजा था, उसका अकेलापन दूर करने के लिए।

उसी शाम दासी ऊपर आई, तो उसने देखा डोलोर उदास बैठा है। उसने पूछा तो डोलोर बोला—''क्या मैं कभी अपने देश का राजा बन सकूंगा ?''

डोलोर की बात सुनकर दासी की आंखों में आंसू आ गए। वह इस अनाथ बालक से स्नेह करती थी। उसने कहा—''आप राजा हैं। आपको लड़कर अपना अधिकार लेना चाहिए।'' कहकर वह झट नीचे चली गई। उस रात डोलोर सो न सका। दासी के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे।

अगली सुबह डोलोर उठा, तो वह मन ही मन कुछ निश्चय कर चुका था। जादुई कम्बल पर बैठकर उसने कहा—''मैं अपने राज्य में जाना चाहता हूं।''

उड़ने वाला कम्बल डोलोर को नोमैंसलैंड की तरफ ले चला। उस समय परी की भेजी हुई चिड़िया उसके साथ थी।

डोलोर उड़ता हुआ अपने नगर में पहुंचा। कम्बल उसे राजमहल की छत पर ले गया। वहां से पूरा नगर दिखाई दे रहा था। चिड़िया ने कहा—''आओ, तुम्हें एक दृश्य दिखाऊं।'' उसके कहने पर डोलोर ने छत में बने सूराख से नीचे देखा। पलंग पर एक व्यक्ति लेटा था। उसकी आंखें बंद थीं। चिड़िया ने बताया—''वह तुम्हारा अत्याचारी चाचा है। बहुत दिनों से बीमार चल रहा था। थोड़ी देर पहले ही उसकी मृत्यु हुई है।''

डोलोर को लगा, अब उसका यहां रुकना ठीक नहीं। वह उड़कर मीनार में वापस लौट आया। उसने दासी को बुलाया और उसे राजा की मृत्यु की सूचना दी। सुनकर दासी खूब जोर से हंसी। उसने कहा—''राजा डोलोर की जय ! अब मेरा काम शुरू होता है।''

दासी उसी समय घोड़े पर बैठकर नोमैंसलैंड की तरफ चल दी। रास्ते में जो भी मिलता, वह कहती—''राजा डोलोर जीवित हैं। उनके मरने की खबर झूठ थी।'' डोलोर के जीवित होने का समाचार आग की तरह सब ओर फैल गया। मीनार के चारों ओर भीड़ जमा हो गई। सब कह रहे थे—''राजा डोलोर की जय।''

मंत्री तथा दूसरे बड़े अधिकारी मीनार में आए और डोलोर को सम्मानपूर्वक राजधानी में ले गए। डोलोर के आने का समाचार सुनकर उसके चाचा का परिवार नगर से चला गया।

एक दिन शुभ मुहूर्त में डोलोर राजसिंहासन पर बैठा। सबसे पहले उसने अपने चाचा के परिवार को वापस बुलवाया। उनके रहने के लिए अलग महल की व्यवस्था करा दी।

उड़ने वाले कम्बल का रहस्य डोलोर ने किसी को नहीं बताया। वह हर रात जादुई कम्बल पर बैठकर उड़ता था। गांव-गांव जाता था, यह जानने के लिए कि प्रजा किस हाल में है ? बीच-बीच में परी उससे मिलने आया करती थी।

प्रस्तुत : देवेन्द्रकुमार
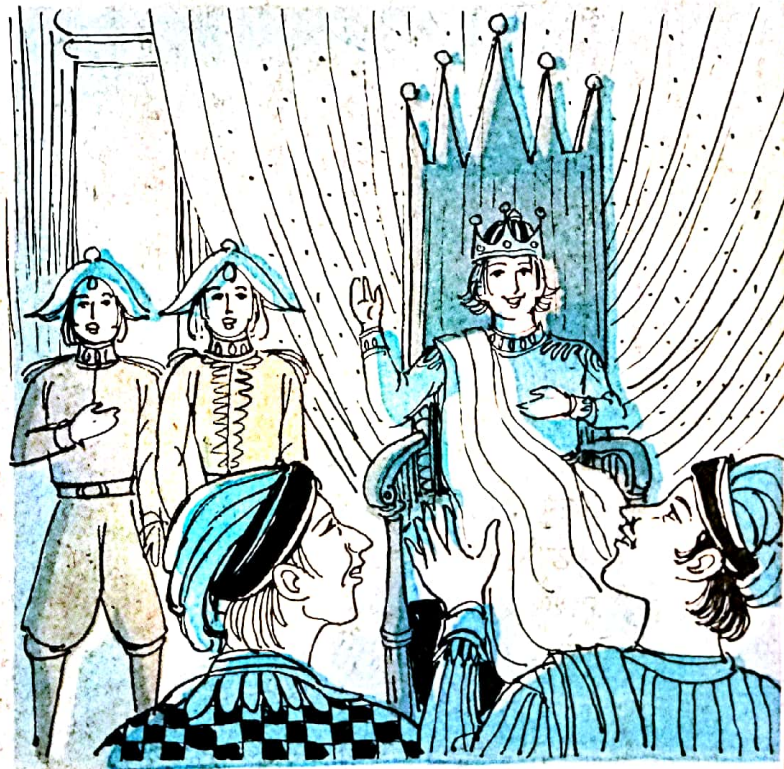
साधु का सच

—जेम्स बी. मसीह

दून घाटी के दक्षिण में माजरा नाम का एक गांव है। वहां के बासमती चावल विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। वहां छंगू नाम का एक चरवाहा अपनी बूढ़ी मां के साथ झोंपड़ी में रहता था। उसकी मां गांव के जमींदार के खलिहान में सफाई का काम करती थी। रोज सुबह मां दो रोटी और सब्जी बांधकर छंगू को दे देती। छंगू सुबह अपने घर से निकल पड़ता। फिर अड़ोस-पड़ोस के दो-तीन गांवों से गायें इकट्ठी करता। उन्हें जंगल में चरने को हांक देता।

छंगू उन्हें पास के जंगल में ले जाता। वहां एक छोटी नदी बहती थी। वहीं वह दोपहर को नदी किनारे बैठ, रोटी खाता, पानी पीता। शाम को डंगरों के साथ लौटता। गायों को उनके मालिकों के घरों में छोड़ देता। इसके बदले में किसी घर से उसे अनाज, किसी से साग-सब्जी, कहीं से तेल-घी, कहीं से गुड़ वगैरह मिल जाता। बस, मां-बेटे की उसी से गुजर-बसर होती।

एक शाम छंगू जंगल से गायें चराकर लौट रहा था। उसने देखा, गायों के झुंड में एक सफेद रंग की साफ-सुथरी गाय भी है। छंगू ने सोचा—'शायद किसी ने नई गाय ली होगी। पर गाय है किसकी? किसके घर इस गाय को छोड़ूं? चलो, गायों को छोड़ते समय पता चल ही जाएगा कि वह सफेद गाय किसकी है।'

छंगू गायों के झुंड के पीछे-पीछे चल रहा था। अचानक उसने देखा, सफेद गाय झुंड में है ही नहीं। वह चिंता में पड़ गया कि अब वह सफेद गाय के मालिक को क्या जबाव देगा।

जैसे-तैसे उसने सभी गायों को उनके घरों में छोड़ दिया। किसी ने भी सफेद गाय के बारे में कुछ नहीं कहा। छंगू ने चैन की सांस ली। उसने सोचा—'सफेद गाय पहले ही अपने घर पहुंच गई होगी। सुबह गायें लेता हुआ जंगल को निकलूंगा, तब सफेद गाय के मालिक का पता लग जाएगा।'

दूसरे दिन छंगू ध्यान से सब घरों से गायों को इकट्ठा करता हुआ जंगल में पहुंचा। उसने गायें गिनीं, वे गिनती में पूरी थीं। पर उनमें सफेद गाय न थी।

शाम को रोज की तरह छंगू गायों को हांकता हुआ गांव की ओर लौटने लगा। अचानक उसे गायों के झुंड में सफेद गाय दिखाई दी—उजली, साफ-सुथरी।

अब छंगू केवल सफेद गाय पर नजर जमाए झुंड के पीछे-पीछे चलने लगा। थोड़ी देर में छंगू ने देखा कि वह गाय जंगल में ही पेड़ों के बीच होती हुई एक ओर जा रही है। छंगू ने सोचा कि बाकी गायें तो रोज की तरह अपने-अपने घर पहुंच ही जाएंगी। वह सफेद गाय के पीछे चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर छंगू को जंगल के बीच में एक कुटिया दिखाई पड़ी। उसने देखा कि गाय उस कुटिया के सामने जाकर रुक गई। छंगू आगे बढ़ा। उसने देखा, कुटिया के बाहर एक साधु बाबा धूनी रमाए बैठे हैं। वह साधु बाबा के पास पहुंचा। उसने पूछा—"क्या सफेद गाय आपकी है?"

साधु बाबा ने छंगू को अपने पास बैठने का इशारा किया। छंगू उनके पास बैठ गया। साधु बाबा ने छंगू से कहा—"मैं तुम्हारे गाय चराने के काम से

बहुत प्रसन्न हूं। परंतु कुछ दिन बाद गाय चराने का काम समाप्त हो जाएगा। मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूं ताकि तुम अपनी मां के साथ सुख से रह सको।''

साधु ने धूनी को देखा। उन्होंने चिमटा उठाया। राख में से कुछ कोयले चुने और उन्हें छंगू की ओर बढ़ा दिया। पर छंगू ने बाबा से कहा—''यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं, तो कोई वरदान दे दें।''

साधु बाबा ने कहा—''ईश्वर का नाम लेकर तुम किसी बीमार आदमी को छुओगे, तो वह ठीक हो जाएगा।'' छंगू साधु बाबा को प्रणाम कर, चल पड़ा।

रास्ते भर छंगू साधु बाबा की बातों पर सोचता रहा। गांव के नजदीक पहुंचा। उसे पता चला कि उसकी बूढ़ी मां के साथ गांव के कुछ लोग उसे ढूंढ़ रहे हैं। छंगू ने गांव वालों को सब बातें बता दीं। इस पर गांव वालों ने कहा—''हम भी साधु बाबा के दर्शन करने चलेंगे।''

शाम का समय था। छंगू गांव वालों को लेकर जंगल की ओर चल पड़ा। उस जगह पहुंचा। पर वहां उन्हें कुटिया न मिली। साधु और गाय का कुछ पता न था। बस, एक स्थान पर राख अवश्य पड़ी थी। उसमें कुछ कोयले सुलगते नजर आ रहे थे। गांव वालों ने छंगू को बहुत बुरा-भला कहा। किसी को भी छंगू की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वे उसे अकेला छोड़, गांव को लौट गए। छंगू इधर-उधर घूमता रहा। पर उसे कुछ हाथ न लगा।

छंगू भी अपने घर चला गया। रात भर साधु बाबा और गाय के बारे में सोचता रहा।

रोजाना छंगू गाय चराने जाता और शाम को लौट आता। इसी तरह एक वर्ष बीत गया। अब छंगू के पास थोड़ी ही गायें चराने के लिए रह गई थीं। गांव के अधिकतर लोगों ने अपने घरों पर ही ग्वाले रख लिए थे। छंगू को लगा कि साधु बाबा की बातें सच साबित हो रही हैं।

एक दिन छंगू को पता चला कि गांव का जमींदार बहुत दिन से बीमार है। वैद्य-हकीम की दवा का उस पर कोई असर नहीं हो रहा है। वह जमींदार के घर पर पहुंचा। जमींदार भी छंगू की साधु बाबा वाली बात
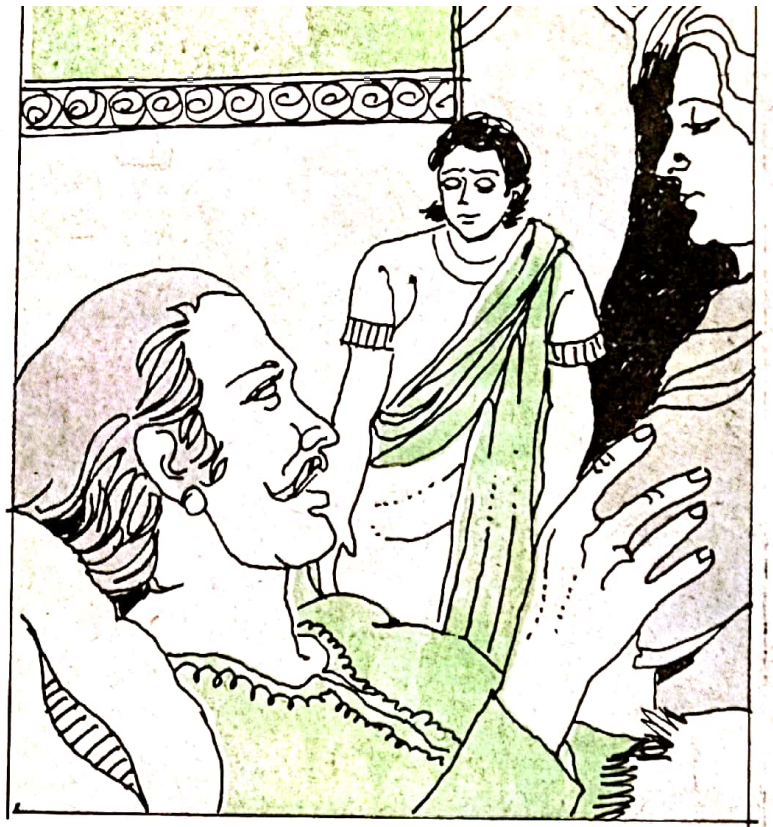
सुन चुका था। जमींदार ने छंगू को अपने पास बैठाया और अपनी बीमारी के बारे में बताया। छंगू बोला—''भगवान ने चाहा, तो आप ठीक हो जाएंगे।'' थोड़ी ही देर में गांव वालों की भीड़ इकट्ठी हो गई। गांव के वैद्य और हकीम भी वहां खड़े थे। कुछ लोग छंगू का मजाक उड़ा रहे थे। कुछ कह रहे थे कि आज साधु बाबा के इस चेले की असलियत पता लग जाएगी।

छंगू ने ईश्वर का नाम लेकर जमींदार को छू दिया, तो जैसे चमत्कार हो गया। जमींदार का रोग गायब हो गया।

सब छंगू को श्रद्धा से देखने लगे, वैद्य-हकीम ठगे-से रह गए।

जमींदार ने रुपयों की गड्डी छंगू की ओर बढ़ा दी। बोले—''लो छंगू, यह रहा तुम्हारा इनाम।'' परंतु छंगू ने कहा—''यह धन आप गरीबों में बांट दें।''

उस दिन से छंगू बीमार गांव वालों को स्वस्थ करने में जुट गया। वह किसी से कुछ नहीं लेता था। जो चलकर उसके पास नहीं आ सकते थे, छंगू स्वयं उनके पास पहुंच जाता। एक गांव से दूसरे गांव की यात्रा में ही उसका समय बीतने लगा। दूसरों का दुःख दूर करके छंगू को खुशी मिलती थी। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय—१५ मिनट।**
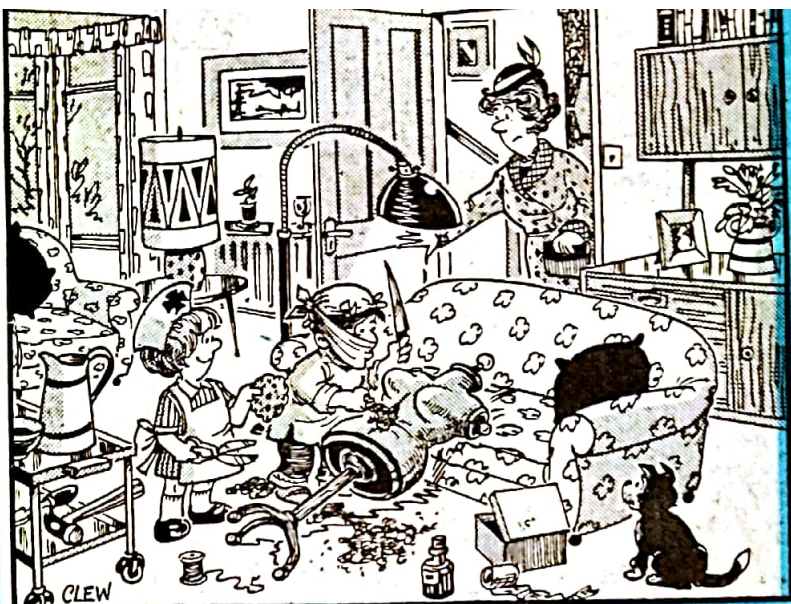
कहानी लिखो : १११

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ फरवरी '९३ तक **कहानी लिखो : १११, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : अप्रैल '९३ अंक

चित्र पहेली : १११

शादी पर दावत सभी ने खाई होगी। तो इस बार बनाइए ऐसी ही **दावत** का रंगीन चित्र। **चित्र चटख रंगों में बनाइए। उसके पीछे अपना नाम-पता और उम्र** साफ-साफ लिखिए और १५ फरवरी '९३ तक **नंदन कार्यालय** में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : मई '९३ अंक

काला धुआं

—सीतेश आलोक

वह एक हरा-भरा टापू था। वहां के लोग स्वस्थ और प्रसन्न थे। वहां के बच्चे प्यारे-प्यारे थे। उनका खिला चेहरा सबको भाता था। उनकी आंखों में चमक थी। बस देखते ही बनता था उन्हें।

उस दिन वे और भी प्रसन्न थे क्योंकि उन्हें घर से पाठशाला तक ले जाने के लिए एक गाड़ी आई थी। उन्हें बताया गया था कि अब उन्हें पैदल नहीं जाना पड़ेगा।

गाड़ी पर बैठकर वे चले, तो ठंडी हवा के झोंके लगते ही वे झूम उठे। गाड़ी के दोनों ओर पीछे की ओर दौड़ते हुए हरे-भरे पेड़-पौधे, उनका कौतूहल बढ़ा रहे थे। पीछे मुड़कर देखा, धुएं की एक लकीर निकलकर बादल की तरह फैलती जा रही है।

गाड़ी का चालक पूछ बैठा—"मेरे प्यारे बच्चो! कैसा लग रहा है तुम्हें?"

"बहुत अच्छा...मजा आ गया।"—उसके पूछते ही बच्चे एक साथ बोल उठे।

"यह गाड़ी तुम्हें कहां से मिली ?"—एक बच्चे ने पूछा।

"हमारे देश में ऐसी बहुत-सी गाड़ियां होती हैं। हम यहां भी धीरे-धीरे ऐसी ही और भी गाड़ी ले आएंगे।"—चालक ने बताया।

"तुम्हारा देश कहां है ?"—दूसरा बच्चा पूछ बैठा।

"तुम यहां कैसे आ गए ?"—तीसरे ने पूछा।

"बच्चो! मेरा देश तो बहुत दूर है। मैं तुम्हारे देश से मित्रता करने और व्यापार करने आया हूं। तुम्हारा यह टापू हरा-भरा है। पर मेरा देश बिलकुल सूखा पड़ा है। मैं हरियाली लेने यहां आया हूं। तुम्हें एक जगह से दूसरी जगह महुंचाकर तुम्हारा भरपूर मनोरंजन भी करूंगा।"

"तुम बड़े अच्छे आदमी हो। तुम यहां पहले क्यों नहीं आए ?"—एक बच्चा चहकता हुआ बोला।

"इससे पहले हम लोग एक दूसरे टापू पर

व्यापार करने गए थे।"

"वह टापू भी ऐसा ही हरा-भरा था ?"—एक बच्चा बोला।

"वह टापू भी बड़ा सुंदर था। रंग-बिरंगे सुंदर फूल खिलते थे वहां। पक्षियों की मीठी चहक से गूंजा करता था आसमान। पक्षी फूलों का रस पीते थे। इस प्रकार रात होते ही फूलों का रंग फीका पड़ने लगता था। भोर में पक्षी चहचहाते, तो आसमान में इंद्रधनुष लहराता था। देखते ही देखते उससे रंग टपकने लगता था। रंग फूलों पर गिरता। वे फूल फिर से चमकदार और रंग-बिरंगे हो जाते।"—उसने बच्चों को देखा। बच्चों ने पूछा—"फिर क्या हुआ ?"

"एक बार हम उधर गए। हमलोगों ने वहां फूलों का व्यापार शुरू कर दिया। फूल ढोने के लिए हम गाड़ियां ले गए थे। प्रतिदिन ढेर सारे फूल हम वहां से लाकर विदेश भेज देते थे। हमारा व्यापार अच्छा चल निकला था लेकिन..."

"लेकिन क्या... ?"—एक बच्चे ने पूछा।

"जाने क्या हुआ ? वहां की चिड़ियां बीमार होने लगीं। उनमें पहले जैसी चहक न रही। इन्द्रधनुष का रंग भी फीका हो गया। जो फूल चिड़ियों के रस पीने से फीके हो जाते थे, वे बदरंग ही रहने लगे। फिर तो चिड़ियों के पीने के लिए फूलों के रस का अकाल-सा पड़ने लगा। वे धीरे-धीरे मरने लगीं। उनके गले से बीमार के खांसने जैसी आवाज निकलती थी।"

"ऐसा क्यों हो गया ?"—बच्चे पूछ बैठे।

—"हमलोगों ने बहुत खोज की, पर कुछ पता नहीं चला। हमारा व्यापार चौपट होने लगा, तो हमें वह जगह भी छोड़नी पड़ी। लेकिन हमारा भाग्य अच्छा था। हमें यह टापू मिल गया। जहां हरियाली ही हरियाली है। हम हरियाली का व्यापार करके ही मालामाल हो सकते हैं।

स्कूल आ गया था। बच्चे खुशी-खुशी गाड़ी चालक से विदा लेकर नीचे उतरे। उन्हें विश्वास था कि लौटते समय चालक उन्हें फिर अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाएगा। गाड़ी चालक प्रसन्न था। उसने हाथ हिलाकर बच्चों से विदा ली और फर्राटे के साथ अपनी गाड़ी चला दी।

गाड़ी चलते ही गाढ़े काले धुएं की मोटी बौछार ने बच्चों को ढक लिया। वे खांसते-खांसते बेदम हो गए और गुलाब जैसे लाल रंग वाले उनके चेहरे पीले पड़ गए।

सब कह उठे—"वह अच्छा आदमी नहीं था। उसे यहां से भगा दो।"

काला धुंआ उड़ाती हुई गाड़ी दूर चली गई थी। बच्चे सावधान हो गए थे। ●

चतुर चोर

— नागेश पांडेय 'संजय'

एक था राजा। बड़ी सेना थी उसके पास। शत्रु उसके नाम से थर्राते थे। एक बार रानी का कीमती हार चोरी हो गया। राजा ने घोषणा करवाई—'जो चोर का पता लगाएगा, उसे मुंहमांगा इनाम मिलेगा। पांच हजार स्वर्ण मुद्राएं राजा अपनी तरफ से देंगे।'

यह घोषणा सुन, एक दिन एक दुबला-पतला आदमी फटे-पुराने कपड़े पहने दरबार में आया। उसने राजा से कहा कि वह चोर को जानता है।

राजा ने पूछा—"बताओ, कौन है चोर ?"

—"चोर मैं हूं, यह रहा आपका हार।" कहते हुए उसने जेब से हार निकाल कर वहां रख दिया।

राजा हैरान था। चोर बोला—"महाराज, पहले आप मुझे इनाम दें। फिर जो चाहें सो करें।"

राजा समझ गया कि यह बड़ा चतुर है। राजा ने कहा—"तुम्हें इनाम मिलेगा। पर यह बताओ कि तुमने चोरी क्यों की ?"

"क्या करता महाराज ? घर में दाना-पानी न था। खेत का लगान अधिक था। उसे न चुका पाने के कारण राज कर्मचारियों ने खेत ले लिए थे।"

राजा ने कहा—"तुम्हारे खेत तुम्हें वापस मिल जाएंगे। लेकिन तुमने महल में ही चोरी क्यों की ?"

उसने उत्तर दिया—"महाराज, मुझे गरीबों के घर में चोरी करने से क्या मिलता ? निर्धन होने पर भी वे सावधान और चौकन्ने रहकर अपने घरों की देखभाल करते हैं। फिर वहां मैं पकड़ा भी जा सकता था। महल के लापरवाह पहरेदार सोचते हैं कि यहां किसकी हिम्मत पड़ेगी चोरी करने की। यह सब देख, मैंने महल में चोरी की।"

यह सुनते ही राजा ने पहरेदारों को बुलवाया। उन्हें आगे से सावधानी बरतने का सख्त आदेश दिया।

राजा ने मंत्री से कहा—"गरीब किसानों के खेत वापस दिला दो। लगान कम कर दो। लगान वसूलने के तौर- तरीके भी बदलने जरूरी हैं।" यह सुन, सभी वाह-वाह कर उठे। गरीब ने घर की राह ली। ●

शरारत के रंग
लंदन से नंदू के चाचा जी आए थे। चमकने वाले बढ़िया रंगों का एक डिब्बा लाए थे, मगर घर में बच्चे चार थे...
अब रोज झगड़ा होगा!
डिब्बे चार लाने थे!
डिब्बा मैं लूंगा...
नहीं मैं...
तू नहीं, मैं...
लाया था, पर तीन कहीं गिर गए...
चाचा जी ने तरकीब निकाली...
पेड़ पर बंदर का चित्र बनाओ। जिसका चित्र सबसे अच्छा होगा, डिब्बा उसी का...
ठीक है!
कुछ ही देर में...
नहीं बनते...मगर डिब्बा किसी को नहीं लेने दूंगा...
रामू, एक नहीं। कई बंदर बनाओ!
दोपहर हुई तो चाचा जी सो गए। रामू चुपके से उनके कमरे में घुसा और...
सारे रंग खत्म कर दूंगा। न रहेंगे रंग, न होगा झगड़ा!
COLOUR

डिब्बा कमीज के अंदर छिपाकर रामू बाहर निकल पड़ा। पहुंचा बगीचे में...
बैंच सजा दूं। आधे रंग खत्म...
शहर में दंगल हो रहा था। उसके बड़े-बड़े पोस्टर लगे थे...
दंगल
पहलवान ! सबके दाढ़ी-मूंछ बना दूं। तीन चौथाई रंग स्वाहा !
पहलवानों के चेहरे बिगाड़कर वह खूब हंसा। अचानक...
अरे डाकघर ! च...च...डाकूघर बना दूं तो...
डाक घर
तभी पार्किंग दिखाई दिया। रंग थोड़े बचे थे। वह वहां जा पहुंचा। चौकीदार से छिपकर वाहनों के नम्बर गड़बड़ करने लगा...
३ का ८ और ५ का ६...
वाह मेरी अक्ल !
5276
8219
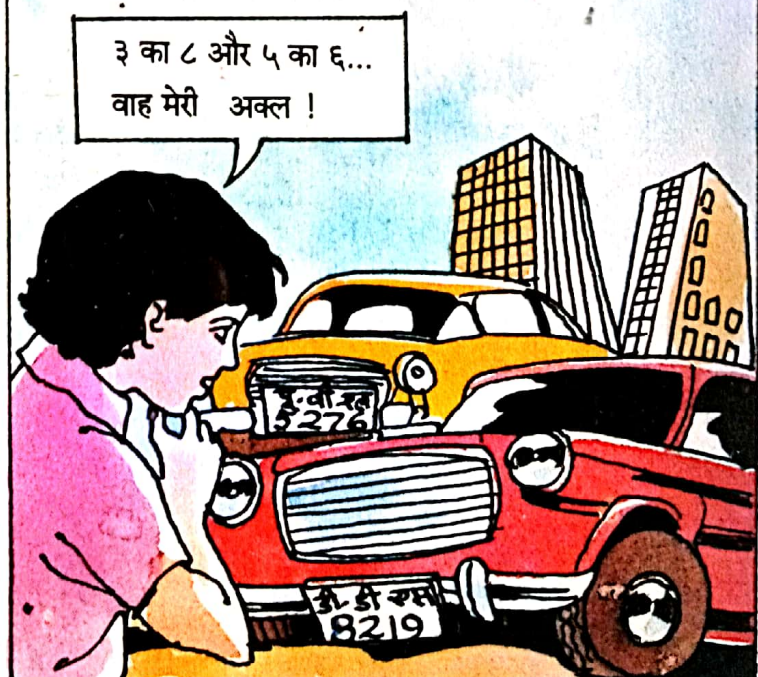
अचानक चौकीदार ने उसे देख लिया। वह डंडा घुमाता उसकी ओर लपका। रामू भाग खड़ा हुआ...
पकड़ो! पकड़ो! गाड़ियों के नम्बर बदल रहा था...पकड़ो...
बाप रे! इसे तो फेंकूं...
शोर सुनकर खेतों में काम करने वालों ने रामू को...
अबे रुक! भागता किधर है!
छोड़ दो! वे मुझे पीटेंगे! छोड़...
डरते-सहमते रामू को पुलिस स्टेशन लाया गया। वहां...
बैंच पर बैठा तो सूट खराब! दोबारा धुलवाना पड़ेगा...
सारे पोस्टर बरबाद... दोबारा बनवाने पड़ेंगे...
गाड़ी का नंबर बदला... चालान हो गया...
मुझे डाकपाल से डाकूपाल...नए नामपट बनवाने में
तुम्हारी शरारत से हुआ यह सब...
सबकी सुनने के बाद थानेदार ने कहा...
रामू, सिपाही के साथ जाओ। पिता जी को लाओ। सबका हरजाना चुकाना है।
बाप रे! ऐसा करूंगा तो...सारी पोल... किरकिरी अलग, सजा अलग...न...

सिपाही रामू को उसके घर ले चला। रास्ते में उससे पीछा छुड़ाने के लिए रामू ने एक शरारत और की...
जाओ! जल्दी जाओ! मैं यहीं खड़ा हूं...
जन सुविधाएं
सिपाही को धता बताकर रामू दूसरे रास्ते से घर पहुंचा। अंदर जाते ही...
बधाई रामू भैया!
तुम्हारा चित्र प्रथम...
डिब्बा तुम्हारा...
मगर डिब्बा तो मिल ही नहीं रहा है...
तभी दरवाजे पर खटखटाहट हुई। पापा ने दरवाजा खोला, तो वही सिपाही अंदर आ गया। सारी बात बताकर...
इसकी शरारत ने शहर भर में तहलका मचा दिया। आपको थाने चलकर लोगों का नुकसान भरना होगा...
और जब पापा हरजाना चुकाकर घर लौटे तो...
तुम्हारी यही सजा है। रात भर यहीं खड़े रहो। दो महीने तक जेब खर्च बंद...
मुझे पता न था, मेरी शरारत का फल ऐसा होगा। न रंग मिले, न शाबासी...ऊपर से...अब शरारत बंद...

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : २९ अंक : ४; नई दिल्ली; फरवरी '९३ माघ-फाल्गुन, शक सं. १९०४

हिन्दी की सेवा में 'सभा' के सौ सुनहरे साल

नई दिल्ली। "नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना को सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं। १६ जुलाई, १८९२ को तीन छात्रों, बाबू श्याम सुंदर दास, रामनारायण मिश्र और शिवकुमार सिंह ने इसे बनाया। उन दिनों एक अस्तबल में इसका दफ़्तर चलता था।"—महामंत्री श्री सुधाकर पांडेय ने एक भेंट में बताया। श्री पांडेय पैंतीस वर्षों से सभा से जुड़े हैं।

वह याद करते हुए कहते हैं—"देश के बहुत-से महान व्यक्ति इस संस्था से जुड़े थे। आज हिंदी का जो भी स्वरूप है, वह नागरी प्रचारिणी सभा की ही देन है। एक जमाना ऐसा था कि हिंदी में लिखी अर्जियों को कचहरी में भी स्वीकार नहीं किया जाता था। तब १८९७ में सभा ने एक बड़ा आंदोलन चलाया। बहुत-से लोग जेल गए। अंग्रेजों और सरकार के खिलाफ यह आंदोलन था। १९०० में सभा को सफलता मिली और कचहरियों में हिंदी को स्थान मिला। महात्मा गांधी इसकी वर्किंग कमेटी के सदस्य थे। नेहरू जी इसे आर्थिक सहायता देते थे।"

नागरी प्रचारिणी सभा ने प्राथमिक कक्षाओं से लेकर एम. ए. तक की कक्षाओं का पाठ्यक्रम तैयार किया। अब तक सभा ने पांच हजार पुस्तकें छापी हैं। इनमें से कई ऐसी हैं जिनकी लाख-लाख प्रतियां छपी हैं। हिंदी की अनूठी पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन भी किया था। बच्चों के लिए भी पंद्रह-बीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सैकड़ों ग्रंथावलियां, हिंदी साहित्य का इतिहास और १२ खंडों का विश्वकोश भी छपे हैं। १८९७ में शुरू हुई नागरी प्रचारिणी पत्रिका भी सौ वर्ष पूरे करने को है।

आर्य भाषा पुस्तकालय में दुनिया के छात्र शोध करने आते हैं। भारतेंदु युग से आज तक की एक हजार पत्र-पत्रिकाओं की फाइलें भी हैं। लाला लाजपत राय की पुस्तकें छापी गई थीं। यही नहीं १९०५ में सबसे पहले विवेकानंद को भी प्रकाशित किया। हिंदी शीघ्रलिपि की शुरुआत भी नागरी प्रचारिणी सभा ने की। और इसके प्रथम विद्यार्थी थे, स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री।

नया बाल भवन

भुवनेश्वर। उड़ीसा में बाल भवन बनाया जाएगा। यह बात राज्यपाल श्री यज्ञदत्त शर्मा ने कही। उन्होंने बताया कि बाल भवन के लिए राज्य सरकार ने दो एकड़ जमीन दी है।

प्लास्टिक इंजन

न्यूयार्क। अमरीका की एक कम्पनी ने छोटी कारों में लगाने के लिए नए इंजन बनाए हैं। ये इंजन प्लास्टिक के बने हैं। इन पर गर्मी का प्रभाव नहीं पड़ता है।

चार साल में बड़े काम

लंदन। उम्र है चार साल। नाम है निकोलस। एक साल का था तो धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलने लगा। फिर फ्रेंच भी सीख गया। संगीत के बारे में उसका ज्ञान अद्भुत है। जब उसे स्कूल में दाखिल कराया गया, तो पता चला कि वह अपने हम-उम्र बच्चों से बहुत अधिक जानता है। उसके अध्यापक तारीफ करते हैं मगर माता-पिता कहते हैं कि उस पर अभी से पढ़ाई का बोझ न लादा जाए। आखिर है तो अभी वह बच्चा ही।

फिर भी जिंदा हैं

नई दिल्ली। पुष्पा सिंधी की उम्र है पैंसठ वर्ष। गत चौंतीस वर्षों से उन्होंने अन्न का एक दाना भी नहीं खाया है। वह सिर्फ दूध, चाय और पानी पीती हैं। अन्न न खा पाने की वजह मुंह के छाले हैं। देश-विदेश में इलाज करवाने पर भी छाले ठीक नहीं हुए।

पहिए में गेंद

टोकियो। जापान में अनोखे वाहनों का मुकाबला हुआ। इसमें 'रोटरबग' नामक एक वाहन था। इसमें पहियों की जगह आठ बास्केट बाल लगे हुए थे। इसे रजत पदक मिला।

करोड़ों की घड़ी

ताइपै। ताइवान में दुर्लभ घड़ियों की एक प्रदर्शनी लगी। इसमें नई-पुरानी घड़ियों के अलावा रत्न जटित घड़ियां भी थीं। ऐसी ही एक घड़ी की कीमत तीन करोड़ रुपए थी।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार

नंदन बाल समाचार

वही मनुष्य है जो मीठे वचन बोलता है। —यजुर्वेद

हम भी गए (पुस्तक) मेले में

ऊबड़-खाबड़ और घिच-पिच जगह में पचास-साठ दुकानें किताबों की। क्या इसे बाल-पुस्तक मेला कहें ? हां, यदि नेशनल बुक ट्रस्ट लगाए तो ! राजधानी में अक्सर साल में एक बार ऐसा मेला लगाया जाता है। बच्चों के नाम पर कुछ करना है, इसलिए पुस्तक मेला ही सही।

चिड़ियाघर के बाहर लगे मेले में इस बार बच्चों की भीड़ रही। लेकिन बालक की सुविधा का कोई ख्याल नहीं। वे खड़े-खड़े किताबें देखते रहें। थक जाएं तो ? छोटे-छोटे बच्चे और मोटी-मोटी अंग्रेजी की किताबें। श्रेष्ठ बाल पुस्तकों की कोई प्रदर्शनी भी नहीं। विश्व पुस्तक मेले में दस प्रतिशत छूट होती है तो बाल मेले में भी वही। दिल्ली से बाहर के प्रकाशक भी नहीं। ऐसे मेले बच्चों में कितना पुस्तक-प्रेम जगा सकते हैं !

हमारे मेहमान

जानी-मानी लेखिका कमला सिंघवी आजकल लंदन में रहती हैं। उनके पति सुप्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ डा. लक्ष्मीमल सिंघवी ब्रिटेन में भारत के उच्च आयुक्त हैं। कमला जी की कई पुस्तकें छपी हैं। बच्चों के लिए कहानियां भी लिखती रही हैं।

कमला जी का कहना है कि जो भारतीय विदेश में रहते हैं, वे आज भी अपनी परम्पराओं और संस्कार से जुड़े हैं। वे अपने बच्चों को भी भारत से प्रेम करना सिखाना चाहते हैं। कुछ तो ऐसे भी हैं जो चाहते हैं कि हर वर्ष अपने बच्चों को भारत ले कर जाएं।

ब्रिटेन के बच्चों के बारे में उनका कहना था कि वे बहुत जल्दी आत्मनिर्भर हो जाते हैं। यही नहीं होमवर्क या परीक्षा का हौआ भी वहां के बच्चों को नहीं झेलना पड़ता। पढ़ाने की शैली ऐसी है कि बच्चे बोझ महसूस नहीं करते। बच्चों के लिए बहुत अधिक किताबें छपती हैं। उन्हें चुनने के अधिक अवसर मिलते हैं।

कमला जी भारतीय बच्चों की प्रतिभा को विश्व के किसी भी बच्चे से कम नहीं मानतीं। उनका कहना है कि बच्चों को कभी निराश नहीं होना चाहिए। अगर कोई भारतीय है, तो भारत की परम्पराएं और संस्कार उसे निराश नहीं होने देंगे।

बरेली में अप्पूघर

बरेली। यहां अप्पू-घर बनाया जा रहा है। नगर पार्षद राजकुमार अग्रवाल ने कहा कि छोटे-छोटे शहरों में ऐसे पार्कों की बहुत आवश्यकता है।

चाकू-खुरपी

बड़ोदरा। यहां सूखी नदी की घाटी में पाषाण-काल के औजार मिले हैं। ये हैं पत्थर से बने चाकू, कुल्हाड़ी, खुरपी आदि। ये बहुत अच्छे ढंग से बने हैं।

खिलाड़ियों को सुविधाएं

करनाल। हरियाणा के जो खिलाड़ी ओलम्पिक और अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भाग लेंगे, उन्हें राज्य सरकार की तरफ से पौने दो लाख रुपए दिए जाएंगे। सरकारी नौकरी भी मिलेगी। स्पोर्ट्स् स्कूल, राई में एक क्रिकेट अकादमी भी बनाई जाएगी।

प्रधानमंत्री के घर चोरी

ओस्लो। चोरी और प्रधानमंत्री के घर ! बिलकुल सच। नार्वे की प्रधानमंत्री के घर चोर खिड़की से आए और कीमती सामान ले गए। उस समय प्रधानमंत्री आवास के आसपास एक सिपाही तक नहीं था। नार्वे में मंत्री और प्रधानमंत्री आम नागरिकों की तरह सड़कों पर घूमते हैं। प्रधानमंत्री निवास के आसपास कोई चारदीवारी भी नहीं है।

पैर से हाथ

लंदन। पीटर मौरिस तरह-तरह की सुंदर कुर्सी-मेजों का काम करता था। एक दुर्घटना में उसके हाथ का अंगूठा कट गया। डाक्टरों ने पैर के अंगूठे को नया आकार दिया और हाथ में लगा दिया। मौरिस ने इसे चमत्कार माना, क्योंकि अब वह उसी हाथ से बखूबी काम कर सकेगा।

उदयपुर में बाल कवि सम्मेलन

उदयपुर। संस्था अंकुर और राष्ट्रीय बाल फिल्म समिति ने बाल कवि सम्मेलन किया। समारोह की मुख्य अतिथि सूचना एवं प्रसारण उपमंत्री डा. गिरिजा व्यास थीं। उन्होंने कहा कि देश का हर आकाशवाणी केंद्र ऐसा ही बाल कवि सम्मेलन आयोजित करेगा।

कवि सम्मेलन में करीब ४० बाल कवियों ने हिंदी-राजस्थानी में कविता और गजलें सुनाईं। संचालन बाल कवि कुंजन आचार्य ने किया।

द्वारिका का विकास

द्वारिका। समुद्र में डूबी द्वारिका का पता वैज्ञानिकों ने लगाया था। अब इसका विकास किया जाएगा। कई धनी-मानी लोग सहायता देना चाहते हैं। सबसे पहले पंद्रह कि.मी. क्षेत्र से पानी हटाने की योजना है। इसके लिए एक बांध बनाया जाएगा।

पत्ती ने कहा

बर्न। न्यूजीलैंड और इंग्लैंड में पौधों के व्यवहार के बारे में खोज की गई है। पता चला है कि जैसे ही कोई नुकसानदेह कीड़ा किसी पत्ती पर आक्रमण करता है, दूसरी पत्तियों को संदेश मिल जाता है। वे कीड़ों के लिए हानिकारक रसायन बनाने लगती हैं।

गंदी चिड़िया

न्यू गिनी। यहां एक चिड़िया पाई जाती है पितोहुई। यह बहुत जहरीली होती है। आसपास के लोग इसे 'गंदी चिड़िया' कहकर पुकारते हैं।

कैसी हवा

मैरीलैंड। आज के मुकाबले तीन सौ साल पहले की हवा कैसी थी? यह जानने के लिए वैज्ञानिकों ने तीन सौ साल पुराने ताबूतों को खोलकर हवा के नमूने लिए हैं।

टायरों से तेल

वाशिंगटन। पश्चिमी देशों में पुरानी कारों, टायरों के कूड़े के बड़े-बड़े ढेर लगे हैं। एक अनुमान के अनुसार अकेले अमरीका में ही तीन अरब टायर बेकार पड़े हैं। ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने टायरों से कार्बन, सुगंधित तेल और स्टील निकालने की योजना बनाई है। टायरों को ऊंचे तापमान पर गर्म किया जाता है। इसी क्रिया में ये चीजें प्राप्त होती हैं। इन्हें अलग-अलग कर लिया जाता है।

शाकाहार

नई दिल्ली। विश्व शाकाहार संघ की बैठक हुई। इसमें बताया गया है कि मांसाहारी लोगों को पशुओं की बीमारियां हो सकती हैं। जबकि शाकाहार से बहुत-सी जानलेवा बीमारियां होती ही नहीं। वैज्ञानिकों का कहना है कि शाकाहार से शक्ति तो उतनी ही मिलती है, मगर खतरनाक रोग कम होते हैं।

किको और माको

नई दिल्ली। जापान के राजकुमार अकिशिनो भारत यात्रा पर आए। वह चिड़ियाघर देखने भी गए। वहां उन्होंने बाघ के दो बच्चों का नामकरण किया। एक का किको और दूसरे का माको। किको राजकुमार की पत्नी और माको उनकी बेटी है।

क्यों काटी दाढ़ी

कोलम्बो। एक पुजारी की लम्बी दाढ़ी थी। एक नाई की उससे लड़ाई हो गई। पुजारी से बदला लेने के लिए नाई ने उसकी दाढ़ी काट दी। पुजारी ने नाई पर मुकदमा कर दिया। कहा कि उसकी दाढ़ी से ज्यादा लोग आकर्षित होकर मंदिर आते थे। अब नहीं आएंगे। उसने पचीस हजार रुपए के हजनि की मांग की है।

लोसर महोत्सव

गाजियाबाद। यहां का विशेष केन्द्रीय विद्यालय देश का एकमात्र ऐसा विद्यालय है, जहां सीमांत प्रांतों-लद्दाख, हिमाचल, असम, अरुणाचल, मेघालय, मणिपुर के बच्चे पढ़ते हैं। इस स्कूल में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी लद्दाख का नववर्ष त्योहार 'लोसर' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। छात्रावास में रहने वाले बच्चों ने कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जिलाधिकारी श्री प्रदीप शुक्ला थे।

नन्हे समाचार

☐ सरकार ने पुरी-कोणार्क को विशेष पर्यटन क्षेत्र घोषित किया है।

☐ जिम्बाब्वे की करीबा झील के पास रहने वाले अनेक हाथी बीमार हो गए हैं। इस बीमारी में हाथी की सूंड बेकार हो जाती है। वह भूखा रहने लगता है। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि करीबा झील के पानी में प्रदूषण बढ़ गया है, इसीलिए हाथी बीमार हुए हैं।

☐ दक्षिण कोरिया के फार्मलैंड चिड़ियाघर में शेर और चीतों को साथ-साथ रखा जाता है। कहते हैं, विश्व में पहली बार ऐसा प्रयोग किया गया है।

☐ आजकल अमरीका में एक नई हाबी का चलन जोरों पर है। आकाश के तारे उपहार में देने का। एक संस्था है इंटरनेशनल स्टार रजिस्ट्री। कुछ हजार रुपए देकर आप एक तारा पसंद कर सकते हैं —उसका अपना मनपसंद नाम रख सकते हैं। संस्था एक प्रमाणपत्र देती है जिस पर पूरा विवरण लिखा होता है।

☐ जर्मनी के हीनरिक अनोखे वैज्ञानिक हैं। उन्होंने केले के तने और छिलके से अनेक नई वस्तुएं बनाई हैं जैसे टाट, खाद और ईंधन। उन्हें लोग केला डाक्टर भी कहते हैं।

☐ स्काटलैंड में एक आदमी ने विचित्र प्रदर्शनी लगाई। उसमें शार्क मछलियों के सैंतालीस जबड़े रखे गए थे। देखने वालों की भीड़ लग गई।

☐ आस्ट्रेलिया में एक पक्षी की पीठ पर एक ट्रांसमीटर चिपका दिया गया। फिर उपग्रह के जरिए उस पर नजर रखी गई। पक्षी १०५ दिन में २५,००० किलोमीटर उड़कर एक छोटे-से द्वीप पर जा पहुंचा।

☐ पिछले दिनों दिल्ली में तिब्बती भिक्षुओं की अद्भुत शिल्प कला की प्रदर्शनी हुई। उसमें मक्खन को अनेक रंगों में रंगकर तरह-तरह की आकृतियां बनाई गई थीं।

सचित्र समाचार

बालकन-जी बारी ने चाचा नेहरू बाल कविता प्रतियोगिता की। पुरस्कार प्राप्त कुछ बच्चे—अमित सक्सेना, शाहजहांपुर; प्रिंतल कछवाहा, जोधपुर, अतुल अग्रवाल, आगरा; प्रियंका सिंह, बम्बई; रुचि वधवा, दिल्ली; प्रीति मिश्रा, दिल्ली।
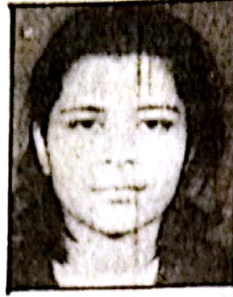
दिविक रमेश : वर्ष के सर्वश्रेष्ठ बाल साहित्यकार। बालकन-जी बारी की ओर से नेहरू पुरस्कार से सम्मानित।
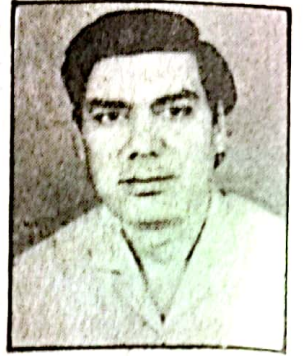
देहरादून की भारतीय सैन्य अकादमी की हीरक जयंती।
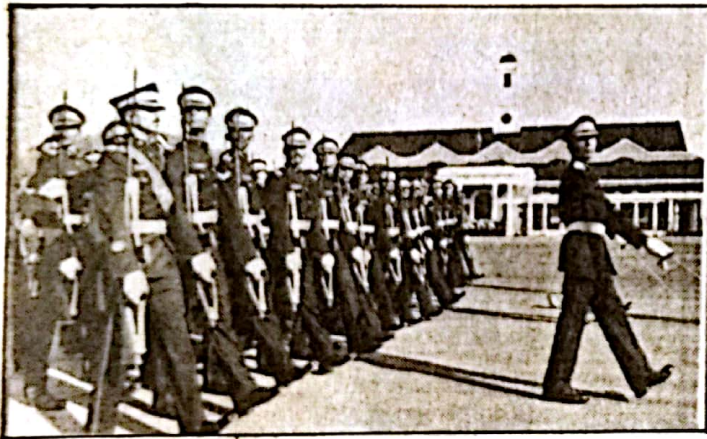
चार बोतलें, उन पर चार छोटी-छोटी गेंदें उन पर सधी कुर्सियों और आदमियों की यह मीनार : है न करिश्मा चीन के कलाकारों का।
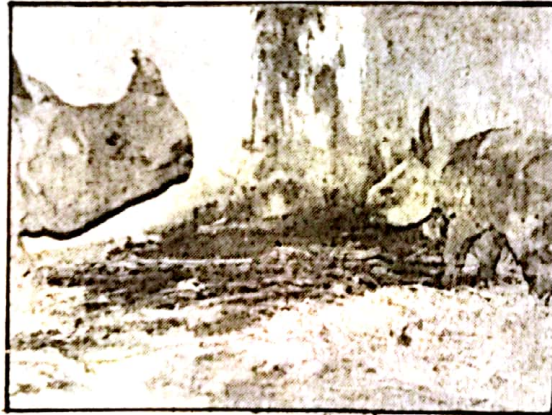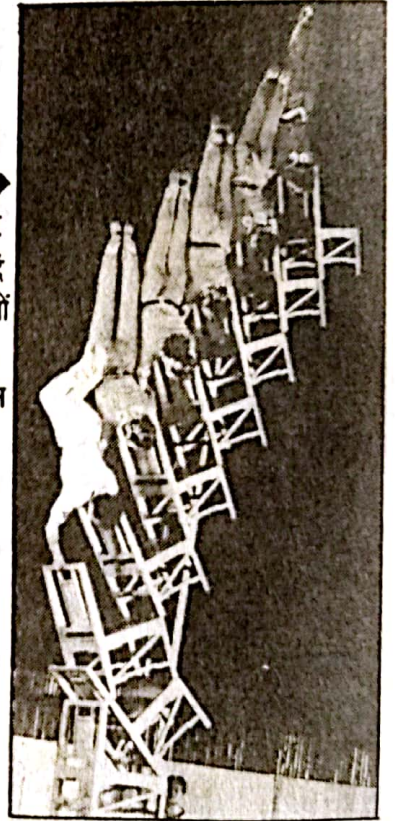
बोतल की ऊंचाई ८ फीट ३ इंच। आइसक्रीम खाने वाली चम्मचों से बनी है। इसे गुड़गांव के जगजीत सिंह और ब्रह्मजीत सिंह ने बनाया है।

दिल्ली चिड़ियाघर में मादा गैंडा रूबी और उसका नन्हा शिशु अयोध्या।

महर्षि मार्कण्डेय

महर्षि भृगु के पुत्र थे मृकंडु मुनि । वह अपनी पत्नी के साथ वन में रहते थे । दिन भर तपस्या में लीन रहते । पत्नी कंद, मूल, फल इकट्ठा करती ।
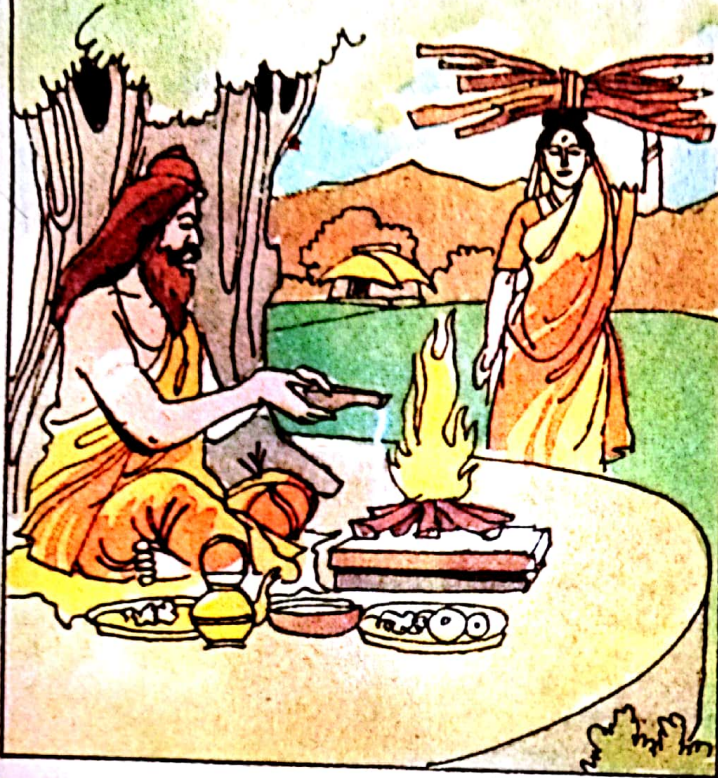
उनके पांच वर्ष का एक पुत्र था ।
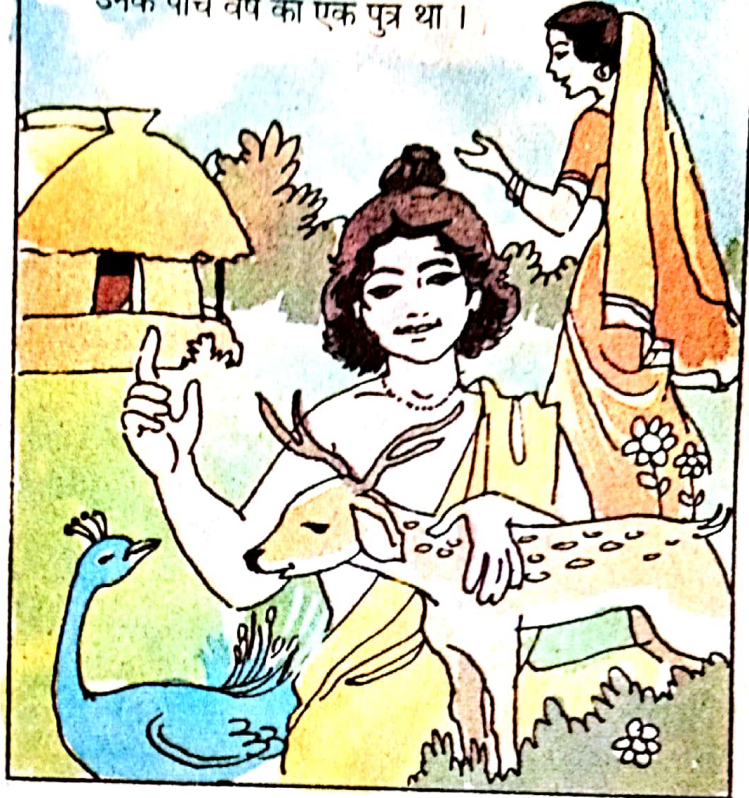
एक दिन कोई सिद्ध महात्मा मृकंडु मुनि के पास आए बालक भी वहीं था । सिद्ध महात्मा ने बालक को देखकर कहा—"आपके पुत्र का मस्तक बता रहा है कि यह विलक्षण प्रतिभा वाला है, मगर..."

मुनि ने आश्चर्य से उन्हें देखा और 'मगर' का कारण पूछा । महात्मा ने कहा—"मेरे हिसाब से आपके पुत्र की आयु मात्र ६ महीना और शेष है ।" कहकर महात्मा चले गए ।
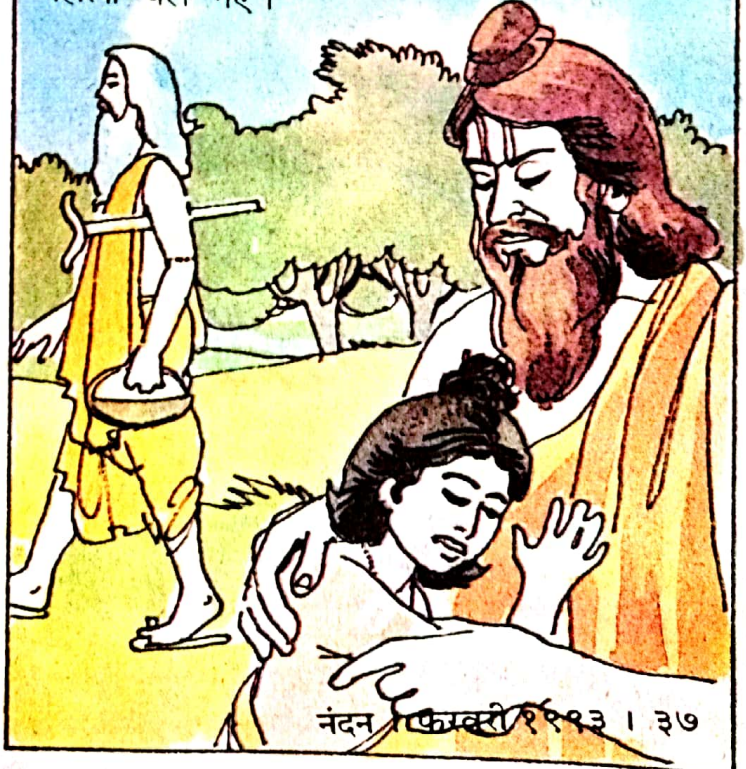
मुनि ने अपनी पत्नी को सारी बात बताई। सुनकर वह बहुत दुखी हुई। मुनि बोले—"चिंता न करो। जो हमारे हाथ में नहीं, उसके बारे में दुखी होने से क्या फायदा ?"

दूसरे दिन मुनि ने पुत्र का उपनयन संस्कार किया। यज्ञ हुआ। पूजा-पाठ हुआ। कई ऋषि-मुनियों ने भाग लिया। पिता ने बेटे से कहा—"बेटा, सभी ऋषि-मुनियों के चरण छुओ, उन्हें प्रणाम करो।"
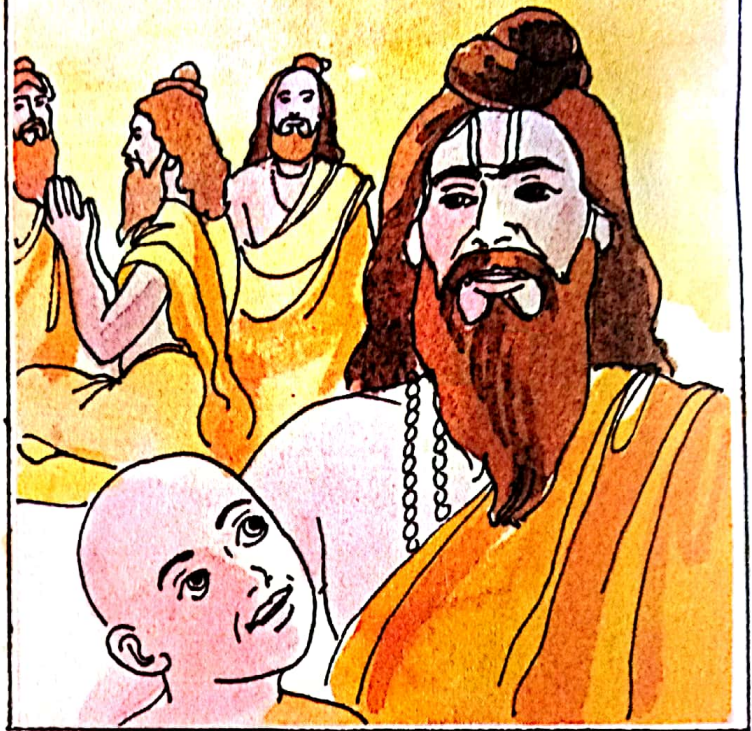
बालक ने ऋषियों के चरण छुए। सभी ने उसे मंगलमय आशीर्वाद दिए। इसके बाद भी वह जिसे प्रणाम करता, वही उसे आशीर्वाद देता। इस तरह दिन बीतते गए।
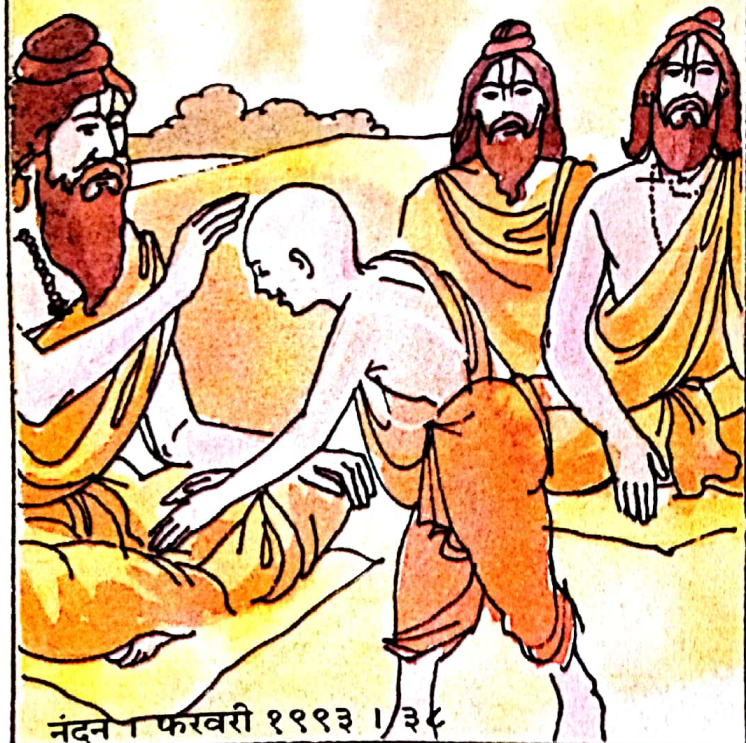
एक दिन सप्तर्षि वहां पधारे। बालक ने चरण छू उन्हें प्रणाम किया।
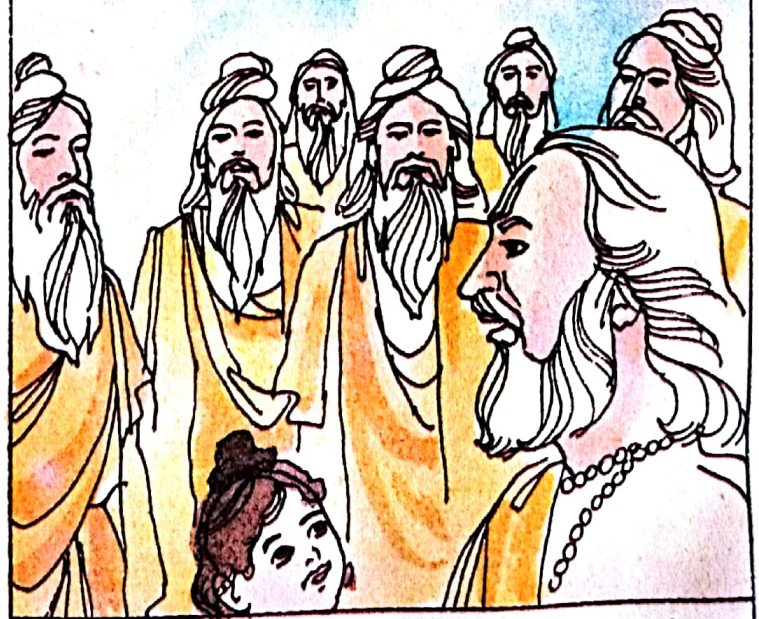
सप्तर्षियों ने उसे दीर्घायु का आशीर्वाद दिया। तभी उन्हें ज्ञान हुआ कि उसकी आयु तो केवल तीन दिन शेष है। वे परेशान हो उठे।

उसे ले ब्रह्माजी के पास गए। बालक ने उन के भी चरण छू प्रणाम किया। ब्रह्माजी ने भी चिरायु होने का आशीर्वाद दिया। सप्तर्षि अपने आशीर्वाद के बारे में बताकर बोले—"आपने भी गलती कर दी। अब क्या होगा ?"
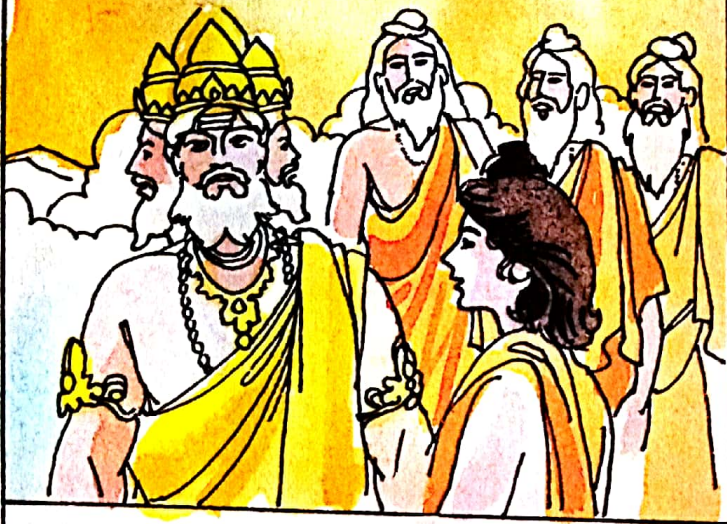
ब्रह्माजी मुसकराए। बोले—"ऋषियो, इस बालक का नाम आज से मार्कण्डेय होगा। यह आयु में मेरे समान होगा। इस युग के अंत में भी यह जीवित रहेगा। धरती पर इसकी कीर्ति अमर होगी।"

मार्कण्डेय ने अपने पिता को आकर सारी बात बताई। सुनकर मृकंडु मुनि और उनकी पत्नी बहुत ही प्रसन्न हुए।

मार्कण्डेय ने पिता से कहा—"मैं पुष्कर में जाकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करूंगा। उन्हीं के आशीर्वाद से मुझे आयु भी मिली। आप मुझे जाने की अनुमति दें।"
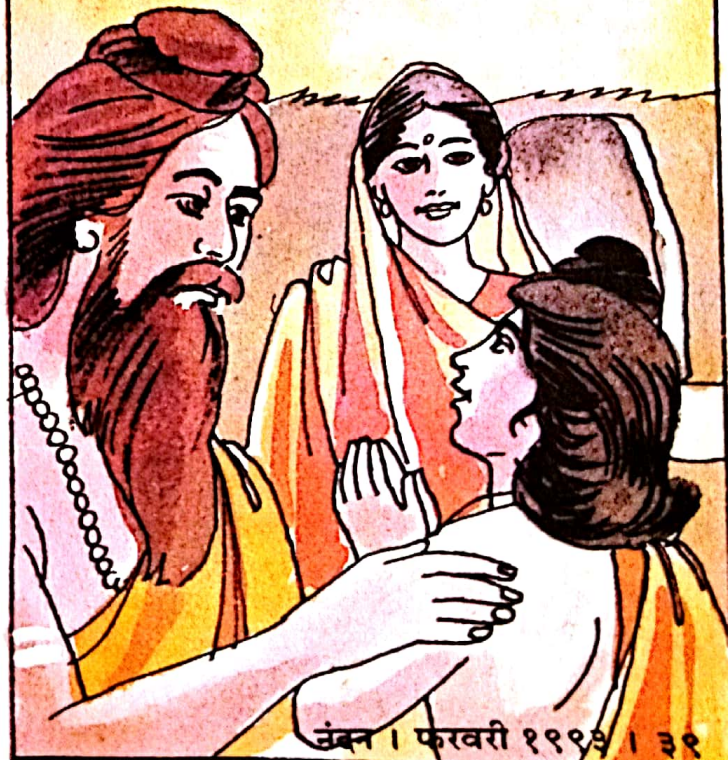
बेटे की बात सुनकर मां ने कहा--''बेटा, तुम्हारी आयु का अब कोई अंत नहीं । फिर तप की ऐसी क्या जल्दी है ? अभी तुम छोटे हो ।'' मार्कण्डेय ने कहा—''मां, अच्छे काम में देरी नहीं करनी चाहिए । मुझे आशीर्वाद दें ।''
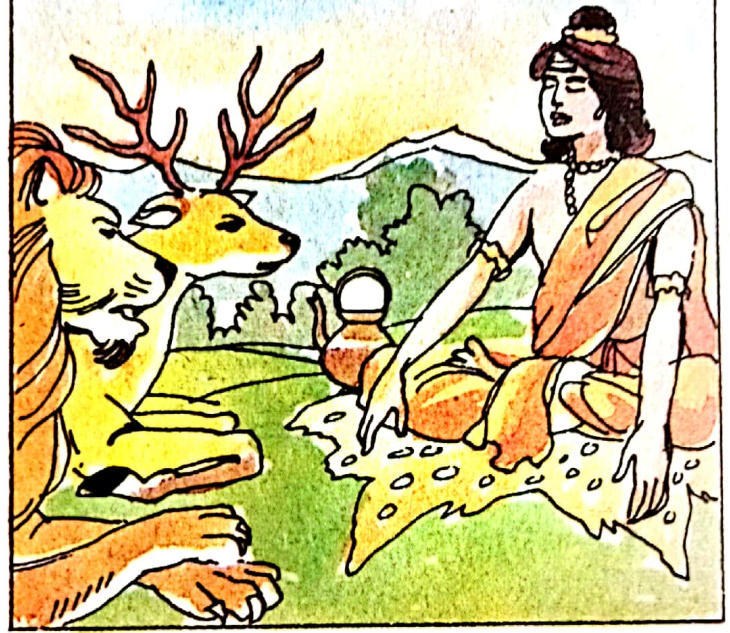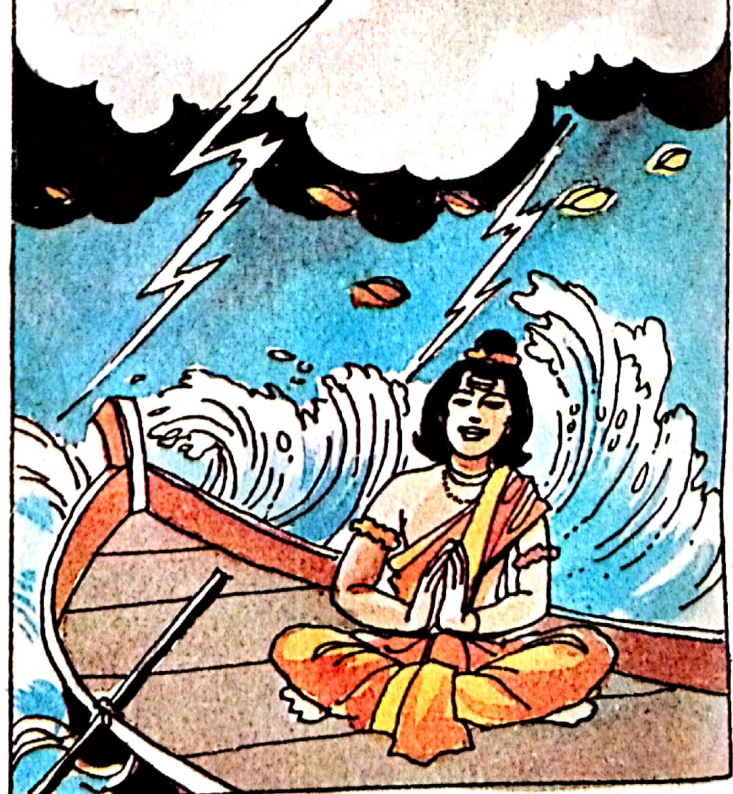
आकाश से गिरे

—सुभद्रा मालवी

एक था तीरंदाज। उसका निशाना अचूक था। उसे अपनी निशानेबाजी पर बड़ा अभिमान था। यह साबित करने के लिए कि कितना बड़ा तीरंदाज है, हर रोज वह अपनी पत्नी की नथ में से निशाना लगाकर तीर छोड़ता था। परंतु उसकी पत्नी को अब तक जरा-सी खरोंच भी नहीं आई थी।

एक दिन तीरंदाज का साला अपनी बहन से मिलने आया तो देखा, उसकी बहन का चेहरा सफेद पड़ गया है। वह सूखकर कांटा हो गई है। उसने घबराकर अपनी बहन से इसका कारण पूछा। उसकी बहन बोली—"वैसे तो मुझे यहां कोई दुःख नहीं है, परंतु तुम्हारे जीजाजी अपना जौहर दिखाने के लिए रोज मेरी नथ में से अपना तीर छोड़ते हैं। रोज मुझे यही डर सताता रहता है कि अगर निशाना जरा भी चूका, तो तीर सीधे मेरी आंख या मुंह में लग जाएगा।"

भाई ने पूछा—"क्या जीजाजी तीर छोड़ने के बाद और भी कुछ कहते हैं?" उसकी बहन ने कहा—"हां, आनंद और गर्व से मेरे पास आकर कहते हैं—'मुझसे बढ़कर होशियार भी कोई और देखा है तुमने?' मैं कह देती हूं — नहीं, मैंने तो अब तक ऐसे किसी दूसरे के बारे नहीं सुना है।"

भाई ने बहन को समझाया—"अब अगर पूछें, तो कहना कि संसार में बहुत-से लोग हैं जो तुमसे भी होशियार हैं।"

अगले दिन सफल निशाना लगाने के बाद तीरंदाज ने जब फिर से अपना प्रश्न दोहराया, तो पत्नी ने अपने भाई के सिखाए अनुसार कह दिया। इस पर उत्तेजित होकर तीरंदाज बोला—"ठीक है। अब जब मुझे ऐसा आदमी मिल जाएगा, तभी मैं घर वापस आऊंगा।"—कहकर वह घर से चला गया।

चलते-चलते वह एक नदी के किनारे पहुंचा, जहां एक आदमी बैठा कुछ खा रहा था। उसके पास जाकर तीरंदाज ने पूछा—"भाई, तुम कौन हो और कहां जा रहे हो?"

उस आदमी ने कहा—"मैं एक पहलवान हूं। कुश्ती लड़ने और वजन उठाने में मेरी बराबरी कोई नहीं कर सकता। अब तक मैं समझता था कि मेरे समान चतुर और गुणवान कोई नहीं है। पर किसी ने मुझे बताया कि मुझसे भी अधिक होशियार एक तीरंदाज है। ऐसा अचूक निशाना लगाता है कि उसकी पत्नी की नथ में से तीर पार हो जाता है। पत्नी को जरा भी नुकसान नहीं पहुंचता। मैं उसी तीरंदाज को खोजने निकला हूं।"

तीरंदाज ने कहा—"मैं ही वह तीरंदाज हूं। मैं भी तुम्हारी तरह अपने जैसे किसी होशियार आदमी की खोज में निकला था। आओ, आगे चलें शायद और भी कोई होशियार आदमी मिल जाए।"

दोनों वहां से आगे चले, तो एक चौराहे पर उन्हें एक आदमी मिला। उसने इन दोनों को देखा, तो आवाज देकर पूछा—"मित्रो! कौन हो तुम लोग और कहां जा रहे हो?"

इन दोनों ने उत्तर दिया—"हम दोनों में से एक पहलवान है और दूसरा तीरंदाज। हम अपने ही समान किसी होशियार आदमी की तलाश में निकले हैं। बताओ, तुम कौन हो?"

उस आदमी ने बताया—"मैं एक पंडित हूं।
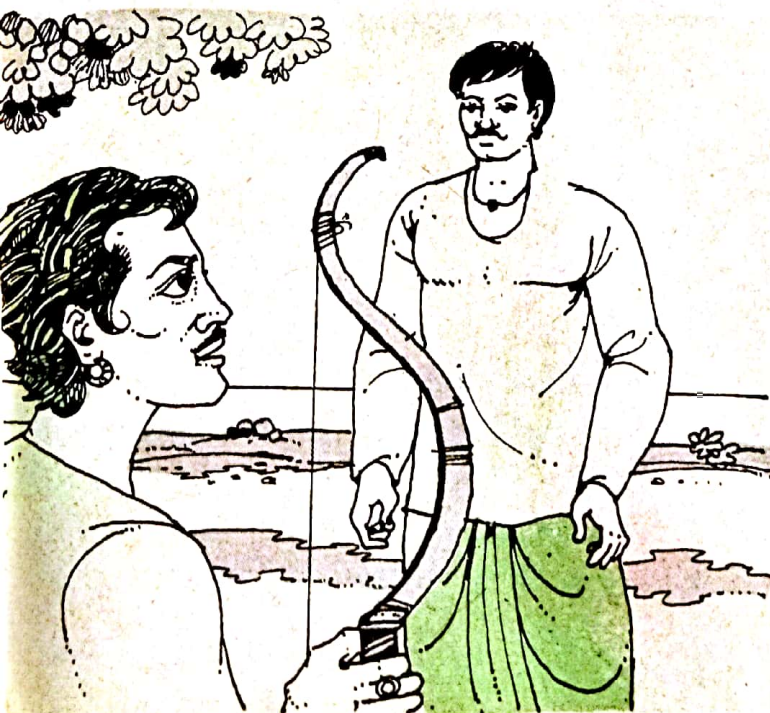
अपनी तीव्र स्मरणशक्ति तथा विद्वत्ता के लिए मेरा बड़ा नाम है। मैं समझता था कि संसार में केवल मैं ही एक होशियार हूं और कोई दूसरा आदमी नहीं है। मगर मुझे पता चला है कि एक पहलवान और एक तीरंदाज हैं—मुझसे भी बहुत गुणवान और चतुर। उन्हीं की तलाश में निकला हूं।" इन्होंने बता दिया।

पंडित ने आनंदपूर्वक उनके हाथ पकड़कर कहा—"आप दोनों आज से मेरे भाई हुए। मेरा घर यहां से अधिक दूर नहीं है। वहां चलकर खा-पी कर विश्राम करिए।"

ये लोग पंडित के घर जाकर खा-पीकर सो गए। पंडित की रसोई में लोहे का एक बहुत बड़ा हंडा रखा रहता था, जिसे आठ-दस आदमी मिलकर भी बड़ी मुश्किल से उठा पाते थे।

रात में पहलवान को अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की लहर आई। उसने यह हंडा उठाकर, पास वाली नदी में पानी के अंदर डुबाकर छिपा दिया। फिर दबे पांव आकर सो गया। मगर पंडित की पत्नी को आहट लग गई। उसने अपने पति को जगाया कि शायद घर में कोई चोर घुस आया है। पंडित और उसकी पत्नी ने चारों ओर देखा तो पाया कि घर की सभी वस्तुएं अपनी-अपनी जगह हैं, केवल हंडा ही गायब है।

पंडित ने सोचा कोई साधारण चोर तो यह काम कर नहीं सकता। उसका शक पहलवान पर गया। क्योंकि आंगन में भारी वजन लेकर जाने के कारण मिट्टी में पैरों के गहरे निशान थे, जो एक ही आदमी के थे। आते समय वजन नहीं था, इसलिए पैरों के निशान हल्के थे।

पंडित ने पहलवान के पैर छूकर देखे, तो ठंडे थे। वह समझ गया कि इसी ने हंडा ले जाकर नदी में छुपाया है। पैरों के निशानों का अनुसरण करते हुए वह हंडे तक जा पहुंचा। हंडे का पता लगाकर पंडित भी घर आकर ऐसे सो गया मानो कुछ हुआ ही न हो।

सुबह उठ कर उसने दोनों अतिथियों से कहा—"चलिए नदी पर स्नान कर आएं। घर में स्नान की व्यवस्था कर देता, पर मेरा हंडा किसी ने गायब कर दिया है।"
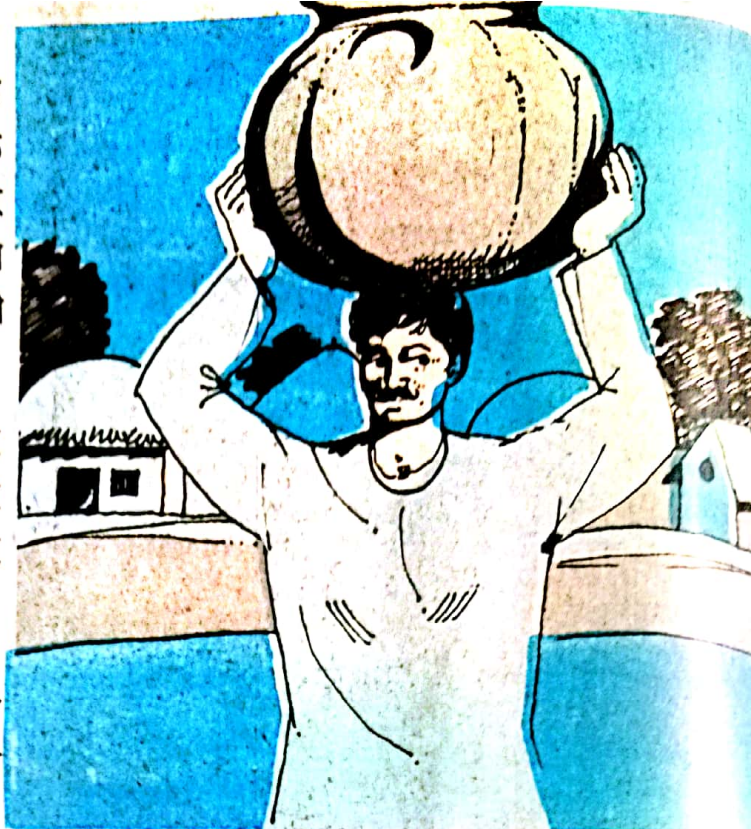
इस पर पहलवान आश्चर्य का नाटक करते हु[ए] बोला—"इतना बड़ा हंडा कहां छिपाया होगा कि[स]ने ?"

पंडित ने उन दोनों को लाकर उस स्थान पर खड़ा कर दिया, जहां हंडा छिपा था—"यहां छिपाया गया है हंडा।"

अब पहलवान और भी आश्चर्य जताता हुआ बोला—"अरे! पर किसने छिपाया यह हंडा ?"

इस पर पंडित ने कहा—"आपने।" अब तो पहलवान सच में ही चकित हो, पूछने लगा—"आपने कैसे जाना कि हंडा मैंने ही छिपाया है और यहां छिपाया है?" पंडित ने सारी बात बता दी।

दिन भर खाने-पीने, मौजमस्ती के बाद शाम को पहलवान जंगल में गया। उसे एक राक्षस ने देखा। सोचने लगा—'अगर यह और इसके मित्र मेरे शिकंजे में आ जाएं, तो बड़ा मजा आए।' उसने एक मोटे से बकरे का रूप धर लिया। पहलवान इस मोटे बकरे को पकड़ने दौड़ा। बड़ी मुश्किल से वह बकरे को पकड़ कर पंडित के पास ले आया। पहलवान के कंधे पर रखे बकरे की लाल दुष्ट आंखों को देखते ही पंडित समझ गया कि यह बकरा नहीं, कोई राक्षस है।

उसने पहलवान से कहा—"मैंने तुम्हें कोई हट्टा-कट्टा बकरा लाने भेजा था और तुम ले आए यह मरियल-सा राक्षस । अरे ! राक्षस ही लाने थे, तो बहुत सारे लाते । मेरे बच्चे एक-एक, मेरी पत्नी तीन और मैं बारह राक्षस खाता हूं । फिर तुम दोनों भी तो हो । इससे क्या होगा ।"

पंडित की बात सुन पहलवान ने राक्षस रूपी बकरे को धम्म से नीचे पटक दिया । अब राक्षस अपने असली रूप में आकर गिड़गिड़ाने लगा— "मुझे छोड़ दो । मुझे मत मारो । मैं तुम लोगों को बहुत-सा धन ला दूंगा ।" अंत में बहुत रोने-गिड़गिड़ाने पर पंडित ने उसे जल्दी धन लेकर वापस आने का वायदा करके जाने दिया ।

राक्षस अपने राज्य में आकर बहुत-सा धन लेकर जब जाने लगा, तो उसके साथियों ने उसे रोका ।

राक्षसों के राजा ने भी कहा कि मानव हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते । पर वह राक्षस इन तीनों से इतना डर गया था कि कहने लगा—"आप उन्हें नहीं जानते । वे लोग महान शक्तिशाली और चतुर हैं । वे आपको भी खा जाएंगे ।" राजा ने गुस्से से कहा—"अच्छा, आज रात दरबार में तुझे सजा दी जाएगी । हमारा हुक्म नहीं मानता !" मगर राक्षस ने ढेर सारा धन ला कर पंडित के हवाले कर दिया । कहा—"अब हमारा राजा मुझे सजा देगा ।"

पंडित ने कहा—"चलो, हमें भी वहीं ले चलो । अगर तेरे राजा ने हमारा कहना नहीं माना, तो हम उसे सजा देंगे ।" राक्षस डर गया। तीनों को लाकर दरबार की जगह, सिंहासन के ऊपर वाले पेड़ पर बिठा दिया ।

रात में राक्षस को राजा के सामने पेश किया गया । राजा ने डांटकर उससे पूछा—"हमारे मना करने पर भी तूने उन लोगों को धन दिया । बता, तुझे क्या सजा दी जाए ?" राक्षस हाथ जोड़कर बोला—"वे साधारण मानव नहीं हैं । वे आपको भी नहीं छोड़ेंगे ।" आगे राजा कुछ कहता, इससे पहले ही वह डाल जिस पर तीनों बैठे थे, टूट गई, और ये तीनों एक के बाद एक सीधे राजा के सिर पर गिरे ।

राक्षस समझे ये लोग आकाश से उतरे हैं । अब तो राक्षसों का राजा भी घबरा गया ।

उधर ये तीनों भी मन ही मन घबरा गए । पर जानते थे — अगर जरा भी घबराहट दिखाई, तो राक्षस हमें कच्चा चबा जाएंगे । उन्होंने मुकाबला करना ही उचित समझा और नीचे दबे राजा को मारना-पीटना, नोचना शुरू किया । उसकी यह हालत देखकर सभी राक्षस भाग खड़े हुए । अब राजा हाथ जोड़कर चीखने-चिल्लाने लगा— "मुझे माफ करो । मुझे मत मारो । मैं तुम्हें और बहुत-सा धन दूंगा ।"

पंडित ने उसे और डराया—"तेरा जंगल में रखा धन हमारे किस काम का ? उसे हमारे घर पहुंचाने का इंतजाम कर, नहीं तो हम तुझे छोड़ेंगे नहीं ।" राक्षसों के राजा ने डरते-डरते दूर खड़े राक्षसों को बुलाया। उन्हें बहुत-सा धन पंडित के घर पहुंचा देने के लिए कहा । राक्षसों ने तीन मित्रों के लिए ढेर सारा धन पंडित के घर पहुंचा दिया ।

पंडित ने सारे धन के तीन भाग किए और प्रसन्नता पूर्वक दोनों मित्रों को विदा किया ।

तीरंदाज ने घर आकर पत्नी को सारा धन सौंपते हुए कहा—"तुमने ठीक कहा था । मुझसे भी होशियार लोग इस दुनिया में हैं । अब मैं कभी अपने आप पर घमंड नहीं करूंगा ।" ●

घर-घर ताला

—श्रीनिवास वत्स

पावनपुर गांव में एक कंजूस जमींदार रहता था। नाम था—धीरपाल। उसके पास काफी धन-दौलत थी। गांव की अधिकतर जमीन पर उसी का कब्जा था। वह छोटे किसानों को जमीन बटाई पर दे देता। फसल पकने पर एक तिहाई हिस्सा किसान को देता तथा दो तिहाई हिस्सा अपने पास रखता था।

एक बार वर्षा न होने से फसल नहीं हुई। छोटे किसानों ने मेहनत करके जो बीज बोए थे, सब सूख गए। नई फसल न होने से वे परेशान थे। वे इकट्ठे होकर जमींदार के पास गए। बोले—"महाशय, हम कई सालों से आपके खेतों में काम करते आए हैं। इस बार वर्षा न होने से फसल नहीं हुई। आपके पास गोदाम में काफी अनाज है। यदि आप हमारी सहायता करें, तो हम खूब मेहनत करके अगली फसल पर आपकी उधारी चुका देंगे।"

किसानों की बात सुन, जमींदार को गुस्सा आ गया। कहने लगा—"तुम्हारा हिस्सा तुम्हें फसल पकते ही मिल गया था। तुमने अनाज बचाकर क्यों नहीं रखा? यह तुम्हारी गलती है, तुम्हीं भुगतो। मैं कुछ नहीं कर सकता।"

जमींदार का उत्तर सुन, किसानों को बहुत दुःख हुआ। वे चुपचाप अपने घरोंको लौट आए। भूख से व्याकुल होकर छोटे किसान गांव छोड़कर दूसरी जगह जाने लगे।

एक रात एक साधु उधर से गुजरा। उसने गांव में ही रात बिताने की सोची। एक घर का दरवाजा खटखटाया। पर यह क्या! जिस गली में जाता, दरवाजे पर ताला लगा मिलता।

साधु हैरान हो गया। तभी उसे जमींदार की हवेली में दीपक की रोशनी दिखाई दी। साधु जमींदार के घर पहुंचा। कहा—"मैं गंगा स्नान को जा रहा था। रात हो गई, इसलिए यहां रुकना चाहता हूं। पर गांव के अन्य घरों में ताले लगे हुए हैं। सब लोग कहां चले गए?"

साधु की बात सुन, जमींदार ने पहले तो छोटे किसानों को जी भरकर कोसा। फिर पूरी कहानी कह सुनाई। धीरपाल की बात सुन, साधु को दुःख हुआ। उसने सलाह दी कि उसे दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

धीरपाल बोला—"गलती छोटे किसानों की है। उन्हें भी तो ऐसी विपदाओं के लिए अनाज बचाकर रखना चाहिए था।"

साधु ने समझाया—"उन बेचारों के पास भला इतना अनाज होता ही कहां है कि कुछ बचा सकें। फिर वे तो तुम्हारा अन्न लौटाने की बात भी कर रहे थे।"

साधु की बात सुन, जमींदार चुप रहा। साधु समझ गया कि इसे समझाने से कोई लाभ नहीं। उसने पूछा—"क्या तुम मुझे रात भर ठहरने के लिए जगह दे सकते हो?"

जमींदार ने सोचा, यदि यह हवेली में रुकेगा, तो इसे खाने को भी देना होगा। उसने कहा—"महाराज, आप तो साधु हैं। गृहस्थियों की इस हवेली में ठहरना आपको अच्छा नहीं लगेगा। सामने एक छप्पर है। आपके लिए वहीं चटाई बिछवा देता हूं। आप वहीं रात्रि विश्राम करें।

साधु बोला—"हां-हां। वहीं ठीक रहेगा।"

जमींदार ने अपने नौकर से कहकर साधु के ठहरने का प्रबंध छप्पर में करा दिया। अभी आधी रात भी नहीं बीती थी कि धीरपाल के पेट में अचानक जोर से दर्द उठा। उसकी कराह सुन, घर के सब लोग जाग

गए। साधु की भी आंख खुली। वह जमींदार के पास आया। धीरपाल दर्द से छटपटा रहा था। साधु ने नौकर से कहा—"छप्पर में मेरी पोटली रखी है, जाओ उठा लाओ। मैं दवा दूंगा।"

नौकर पोटली ले आया। साधु ने उसमें से तीन फल निकाले और धीरपाल को देते हुए कहा—"एक फल अभी खा लो। आराम आ जाएगा। यदि आराम न आए, तो थोड़ी देर बाद दूसरा फल खा लेना। यदि फिर भी आराम न आए, तो तीसरे फल का भी सेवन कर लेना। ये बहुत दुर्लभ फल हैं। ध्यान रखना, यदि पहला फल खाने से ही आराम आ जाए, तो बाकी फलों का सेवन मत करना।" इतना कहकर साधु पुनः छप्पर में आकर लेट गया।

जमींदार की पत्नी ने एक फल काटकर उसे दिया। फल खाते ही धीरपाल को चैन आ गया। उसने पत्नी से कहा—"अब तुम लोग सो जाओ। शेष दोनों फल भी मेरे पास रख दो।"

सब लोग सो गए। जमींदार ने सोचा—'ऐसे दुर्लभ फल फिर नहीं मिलेंगे। क्यों न मैं इन्हें छिपाकर रख लूं। साधु से कह दूंगा, पहले फल से आराम नहीं आया। दूसरे दोनों फल भी खाने पड़े।' उसने ऐसा ही किया। दोनों फल छिपाकर तिजोरी में रख दिए।

अगली सुबह साधु जमींदार के पास आया और स्वास्थ्य का हाल पूछा। जमींदार बोला—"महाराज, तीनों फल खाने के बाद ही चैन पड़ा।"

धीरपाल की बात सुन, साधु मौन रहा। कुछ देर बाद वह अपनी पोटली उठा, गंगा स्नान के लिए निकल पड़ा।

साधु के चले जाने पर जमींदार बहुत खुश हुआ। उसने सोचा—'अब मेरे पास दुर्लभ फल हैं। जब कभी किसी को तकलीफ होगी, तो मुंह मांगे पैसे लेकर बेच दूंगा।'

दोपहर को दुर्लभ फलों को देखने के लिए जमींदार ने तिजोरी खोली, तो वहां उससे अजीब तरह की गंध आ रही थी। उसने देखा, फलों का रंग काला हो गया है। फलों के साथ-साथ तिजोरी में रखे सोने-चांदी के आभूषण भी काले हो गए थे। जमींदार को काटो तो खून नहीं। जंग लगे लोहे जैसे सोने-चांदी की भला अब क्या कीमत रह गई ? उसने गुस्से में भर, दोनों फलों को उठाकर आंगन में फेंक दिया। पर यह क्या ! फलों की गंध से घर का सब सामान काला होने लगा। बर्तन, कपड़े यहां तक कि हवेली की दीवारें भी काली हो गईं। वातावरण में फैली दुर्गंध के कारण सांस लेना भी दूभर हो गया था।

अब तो धीरपाल दुखी होकर रोने लगा। उसने अपने नौकरों को आदेश दिया—"घोड़ों पर सवार होकर गंगा जी की ओर जाओ। जहां भी तुम्हें वह साधु नजर आए, उसे यहां बुला लाना।"

रात होने से पहले नौकर साधु को अपने साथ ले, पावनपुर लौट आए। साधु को देखते ही जमींदार हाथ जोड़कर क्षमा मांगने लगा।

साधु ने पूछा—"क्या बात है ?"

धीरपाल बोला—"महाराज, मैं लुट गया। आपके फलों ने मेरा सब कुछ काला कर दिया।"

—"लेकिन तुम तो कहते थे कि तीनों फल खाने के बाद आराम आया।"

—"महाराज, मैं लोभ में फंस गया था। इसलिए झूठ बोला।"

साधु ने कहा—"ये दुर्लभ फल किसी और की बीमारी में काम आते। पर तुमने लालच में आकर दूसरों का हिस्सा हड़पा और झूठ बोला। झूठ का रंग काला होता है, इसलिए तुम्हारी सब चीजें काली हो गईं। लालच का फल कड़वा होता है, इस कारण तिजोरी में रखने से ये फल भी कड़वे हो गए हैं।

लालची आदमी दुर्गंधित फलों की तरह दूसरों को हानि पहुंचाता रहता है ।"

धीरपाल बोला—"महाराज, मैं आपको आश्वासन देता हूं कि भविष्य में लालच करके कभी दूसरों का हिस्सा नहीं हड़पूंगा ।"

साधु ने कहा—"सबसे पहले इन फलों को गड्ढा खोदकर जमीन में दबा दो ।"

जमींदार ने वैसा ही किया । एक गहरा गड्ढा खोदकर काले हुए दोनों फलों को उसमें दबा दिया ।

साधु बोला—"दुर्गंध मिटाने के लिए अब एक हवन करना होगा, जिसमें गांव के सभी लोग आहुति डालेंगे ।"

"लेकिन गांव के लोग तो कहीं और जा चुके हैं ।"—जमींदार ने समस्या बताई ।

साधु ने कहा—"इस हवन के द्वारा पूरे गांव का शुद्धिकरण होगा । इसलिए सभी का इसमें शामिल होना जरूरी है । छोटे किसान आसपास के गांवों में मेहनत-मजदूरी कर रहे होंगे । तुम उन्हें सहायता का आश्वासन दोगे, तो वे जरूर लौट आएंगे ।"

जमींदार को बहुत बेचैनी हो रही थी । उसने अपने नौकरों को आदेश दिया—"पास के गांवों में जाओ और किसानों को वापस बुला लाओ । उनसे कह देना जितना अनाज चाहें, गोदाम से ले लें ।"

नौकरों ने पास के सभी गांवों में जाकर घोषणा कर दी । किसानों ने सुना, तो सब खुशी-खुशी वापस अपने गांव लौट आए ।

जब सब लोग आ गए, तो साधु ने हवन प्रारम्भ किया । हवन के शुद्ध धुएं से वातावरण महक उठा । धीरे-धीरे सब वस्तुओं से कालिख समाप्त होने लगी । हवन की समाप्ति तक सोने-चांदी के सभी आभूषण पुनः चमक उठे । उन्हें चमकते देख, जमींदार ने चैन की सांस ली । उसने गोदाम का अनाज छोटे किसानों में बांट दिया ।

हवन से एक और करामात हुई । अगले दिन बादल घिर आए और शाम तक वर्षा शुरू हो गई । किसान खुश थे । अकाल खत्म हो गया । साधु महाराज भी अगली यात्रा के लिए चल पड़े ।●

समुद्र में महल

—गिरीश भंडारी

जापान के उत्तरी समुद्र तट पर गरीब मछुआरों की एक बस्ती थी । वहां एक घर में माता-पिता और एक पुत्र रहते थे । एक दिन मछुआरे समुद्र में मछलियां पकड़ने गए । अचानक समुद्री तूफान आया और लड़के के पिता को बहाकर ले गया । कुछ समय बाद उसकी मां भी शोक में चल बसी ।

वह लड़का घर में अकेला रह गया । पड़ोसी उसकी मदद नहीं करते थे । वह अकेला ही अपनी नाव में बैठ, समुद्र में जाता । वहां मछलियां पकड़ता । एक दिन वह मछलियां पकड़ रहा था, तो जाल में एक सुनहरी घोंघा फंस गया । शाम के धुंधलके में घोंघे से नीले रंग का प्रकाश निकल रहा था ।

लड़का घोंघे को घर ले आया । उसकी आं[illegible] आश्चर्य से भर गईं । उसने देखा कि घोंघा एक सु[illegible] लड़की में बदल गया । दोनों में बातें होने लगीं ।

थोड़ी देर बाद लड़के को भूख लगी । पर घर खाने को कुछ नहीं था । उसने पड़ोसियों से कुछ [illegible] की चीजें मांग लाने की सोची । तभी लड़की [illegible] पूछा— "तुम कहां जा रहे हो ?"

उसने कहा— "खाना मांगने जा रहा हूं पड़ोसि[illegible] के पास ।"

लड़के की गरीबी देखकर, लड़की की आंखों में आंसू भर आए । तभी एक मेज लग गई । सुंदर और स्वादिष्ट खाने की चीजों से मेज सज गई ।

दोनों ने खूब खाना खाया । फिर लड़की ने लड़के से कहा कि वह अब फिर से घोंघा बन जाएगी । वह उसे समुद्र में छोड़ दे । लड़के ने उससे वहां रहने की बहुत मिन्नत की, पर वह राजी न हुई । अंत में यह तय हुआ कि वह रोज लड़के से मिलने आएगी । उसने यह भी कहा कि अब वह जो भी खाना चाहेगा, वह खाना अपने आप मेज पर आ जाएगा ।

यह सुन, लड़का बहुत प्रसन्न हुआ । वह अपने पड़ोसियों को भी खाने के लिए घर पर बुलाने लगा ।

धीरे-धीरे समुद्री लड़की और मछुआरे लड़के में दोस्ती बढ़ती गई। आखिर में दोनों ने शादी करने का निश्चय कर लिया। यह बात जब समुद्र की रानी ने सुनी तो वह क्रोध से भड़क उठी। असल में वह घोंघा बनी लड़की की मां थी। समुद्री रानी की बेटी की शादी एक मामूली मछुआरे से हो, यह बात उसे नागवार गुजरी। पर लड़की अपनी बात पर दृढ़ थी। अंत में समुद्र की रानी ने उस लड़के की परीक्षा लेने की ठानी। उसने लड़के को समुद्र में आकर परीक्षा देने के लिए कहा।

लड़का नाव में बैठकर समुद्र में गया। तभी समुद्री लहरें जोर मारने लगीं। गरज के साथ बादल बरसने लगे। लगा कि नाव को समुद्री लहरें अपने में समा लेंगी। पर लड़का बिल्कुल भी न डरा। समुद्र के बीच में एक रास्ता बन गया। वह लड़का नाव सहित उसमें चला गया। वहां समुद्र की रानी के महल का दरवाजा था। लड़का अपनी आंखें मलकर आश्चर्य से इधर-उधर देखने लगा। भव्य राजमहल था, हीरे-जवाहरातों से जड़ा।

सामने खड़ी थी समुद्र की रानी। उसने लड़के से कहा— "इस परीक्षा में तो तुम सफल रहे। पर अभी तुम्हें एक और परीक्षा देने यहां आना है।" यह सुन लड़का समुद्र से बाहर निकल, अपने घर पहुंचा और काम में लग गया।

एक दिन लड़का फिर नाव लेकर समुद्र में पहुंचा। इस बार विशालकाय समुद्री जंतुओं ने उसकी नाव को डुबोना चाहा। उन्होंने हर संभव कोशिश की कि लड़का डर के मारे वापस चला जाए, पर उन्हें सफलता न मिली। अंत में समुद्र की रानी को उन विशालकाय जंतुओं को वापस बुलाना पड़ा।

अब समुद्र की रानी इस बात को जान गई थी कि मछुआरा लड़का बात का धनी और साहसी है। उसने अपनी राजकुमारी का हाथ उसे सौंपने का निश्चय कर लिया। घोंघा राजकुमारी और लड़के का विवाह हो गया।

दोनों समुद्र तट पर रहने लगे। पर पड़ोसी उनके रहन-सहन को देख, जलने लगे।

एक दिन मछुआरा और उसकी पत्नी काम पर निकले। पीछे से पड़ोसियों ने उनका घर उजाड़ दिया और सारा सामान उठाकर ले गए।

वे दोनों वापस घर आए। घर को उजड़ा देखकर, दोनों को बहुत दुःख हुआ। यह बात समुद्र की रानी को पता चली, तो वह बहुत ही क्रोधित हुई।

एक दिन मछुआरा और उसकी पत्नी घर में नहीं थे। समुद्र में अचानक तूफान आ गया। समुद्री लहरों ने बस्ती को तहस-नहस कर दिया। दुष्ट पड़ोसी समुद्र की लहरों में डूब गए।

मछुआरा पत्नी के साथ वापस घर आया। सारी बस्ती को उजड़ा देखकर, उन्हें बहुत दुःख हुआ। पर वे क्या कर सकते थे? वे समझ गए कि यह विनाश समुद्र की रानी ने क्रोध में किया है।

उन दोनों ने फिर कई साल सुख और चैन से बिताए। समुद्र की घोंघा राजकुमारी तो अमर थी पर मछुआरा लड़का इस दुनिया का एक मानव था। एक दिन उसकी मृत्यु हो गई, पर समुद्र कुमारी उसको कभी भूली नहीं। आज भी वह तरह-तरह के घोंघों के रूप में समुद्र के अंदर तैरती रहती है। ●

चटपट

□ एक पड़ोसिन—कल मैंने तुम्हारे कुत्ते को पीने के लिए दूध दिया, पर कुत्ते ने उसे देखा तक नहीं।
दूसरी पड़ोसिन—बहन, मेरा कुत्ता किसी का जूठा दूध नहीं पीता।

□ बेटा—मां, सब्जी में नमक और मिर्च तेज क्यों हैं?
मां—जल्दी में गड़बड़ी हो गई, यह सब्जी तो मेहमानों के लिए थी।

□ रामनाथ—कल तुम पड़ोसियों से मेरे बारे में क्यों पूछ रहे थे? क्या मेरा मनीआर्डर आया है?
डाकिया—नहीं, मैं तीन दिन पहले भूल से किसी और का मनीआर्डर आपको दे गया था, वही लेने आया हूं।

□ एक चिड़िया—शर्त बद लो, तुम उस पेड़ पर लगे फल को नहीं खा सकती।
दूसरी चिड़िया—मैं खा तो लूंगी, पर फल तुम्हें तोड़कर लाना होगा।

□ अध्यापक—एक जंगल में एक शेर, चार खरगोश, दो सियार रहते हैं। जोड़कर बताओ, कुल कितने जानवर हुए?
छात्र—एक शेर दूसरे जानवरों को वहां रहने कैसे देगा।

□ विजय—तुम रात में भी चश्मा लगाते हो?
अजय—हां भाई, चश्मा नहीं लगाऊंगा, तो कैसे पता चलेगा, रात हो गई।

□ सोनू—तुम मेरा एक घूंसा भी नहीं खा सकते?
मोनू—ठीक कहते हो, मैं अभी-अभी खाना खाकर आ रहा हूं।

□ मेजबान—आना ही था, तो चिट्ठी से बता तो देते।
अतिथि—चिट्ठी डालता, तो तुम यहां कैसे मिलते!

□ अध्यापक—सोहन, ये सवाल क्या तुम्हारे पापा ने हल किए हैं?
सोहन—हां, ऐसी गलतियां पापा जी ही करते हैं।

□ दुकानदार—तुम मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकते।
ग्राहक—मेरे हाथों में धूल नहीं, मिर्च है।

□ दारोगा—एक तो चोरी की, ऊपर से रो रहे हो!
चोर—क्या करूं साहब? भीड़ में किसी ने मेरी ही जेब साफ कर दी।

□ राहगीर—ज्योतिषी जी, जरा हाथ देखकर बताएं कि मेरे पास धन कब आएगा?
ज्योतिषी—मेरी फीस देने के बाद।

□ अजय—सुरेश, तुम मुझसे क्यों लड़ रहे हो? रमेश से जाकर लड़ो।
सुरेश—रमेश से लड़कर क्या दांत तुड़वाने हैं?

□ पत्नी—आप मुझे चार बजे उठा देना, कुछ जरूरी काम है।
पति—ठीक है, पर मुझे तीन बजकर उनसठ मिनट पर उठाना न भूलना।

□ अध्यापक—विजय, तुम आज फिर इतनी जल्दी स्कूल क्यों आ गए?
विजय—कल जल्दी आया था तो रास्ते में पांच रुपए का नोट पड़ा मिला था।

□ एक मित्र—तुम सुबह-सुबह झूठ क्यों बोलते हो?
दूसरा मित्र—क्या करूं? रात में तुम बोलने का मौका ही नहीं देते।

□ दुकानदार—बहुत बढ़िया मिठाइयां हैं, खुद देख लीजिए।
ग्राहक—देखकर क्या पता चलेगा, खाकर ही बता सकूंगा।

□ वेटर— आपने खाना छुआ भी नहीं और बिल दे दिया। ऐसा क्यों?
मेहमान— मैंने होटल में कुछ भी न खाने की कसम खा रखी है।

□ रमेश— मैं दस तक गिनती गिनूंगा। अगर तब तक तुम कमरे से बाहर नहीं चले गए, तो उठाकर फेंक दूंगा।
निर्मल— मैं तुम्हें दोनों कामों की तकलीफ नहीं करने दूंगा। तुम गिनती गिनो, उठाकर फेंकना मेरा काम।

तेनालीराम २९८

वसीयतनामा

राजा कृष्णदेव राय के दरबार में किसी गांव के पटवारी ने शिकायत की कि गांव पंचायत, रामदेव के कहने पर उसे नाहक दंड दे रही है। रामदेव भी उसी गांव का था। उसके पिता की मृत्यु के बाद उनकी वसीयत पढ़ी गई। लिखा था— खेत के उत्तर-पश्चिमी कोने में चांदी के रुपयों से भरा एक घड़ा दबा है। वह रामदेव के लिए है।

बाद में खेत का वह कोना खोदा गया। वहां घड़ा नहीं मिला। रामदेव के पिता अनपढ़ थे। वसीयत गांव के पटवारी ने लिखी थी। उसे ही पता था कि घड़ा कहां दबा है? रामदेव ने पंचायत बुलाई। पटवारी ने लाख कहा कि उसने घड़ा नहीं निकाला। मगर पंचों ने उसके विरुद्ध निर्णय दे दिया।
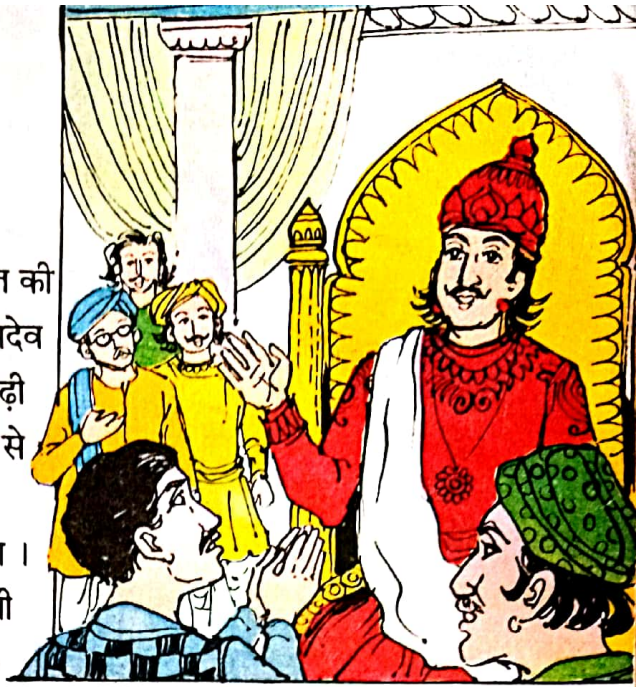
राजा ने रामदेव और पंचों को बुलाया। सबकी बातें सुनीं। वसीयत देखी। फिर अगले सप्ताह निर्णय देने को कहा। सब चले गए, तो राजा दरबारियों से बोले—"सच्ची बात का पता लगाए बिना निर्णय कैसे दिया जाए?" उन्होंने तेनालीराम से कहा। तेनालीराम ने वसीयत उलट पलटकर देखी। बोला—"फैसला कल हो जाएगा।"

वादी-प्रतिवादी दरबार में आए, तो वह उन्हें ले खेत पर पहुंचा। राजा की उपस्थिति में खेत के बीचों बीच खुदाई कराई, तो घड़ा मिल गया।

राजा ने तेनालीराम से पूछा कि उसे कैसे पता चला कि रुपयों से भरा घड़ा वसीयत में बताए स्थान पर नहीं, खेत के बीच में दबा है!

"अन्नदाता!"—तेनालीराम हाथ जोड़कर बोला—"रामदेव के पिता अनपढ़ बेशक थे, मूर्ख नहीं। वह जानते थे कि पटवारी घड़े का स्थान पता लगने के बाद, कभी भी उसे खोदकर निकाल सकता है। इसीलिए उन्होंने वसीयतनामे के पीछे दो लकीरें खींच दी थीं, जो बीच में एक दूसरे को काटती थीं। इसी अनुमान पर मैंने खेत के बीचोंबीच खुदाई करवाई और..."

"बस, बस!"—राजा बोले और कंठहार निकालकर तेनालीराम के गले में डाल दिया।

दरबारी भी 'वाह-वाह' किए बिना न रह सके।

मनभावन चार्ट

Attention children

बाल साहित्य के प्रकाशक के रूप में हमारा जाना-माना नाम है।

हम अब प्रस्तुत करते हैं 100 से अधिक शिक्षा-सम्बन्धी रंगीन चार्टों का ऐसा संकलन जो आपके बच्चों का होम-वर्क करने में भरपूर सहायक सिद्ध होगा। ये चार्ट बच्चों के आस-पास के संसार के बारे में हैं और उन्हें नये-2 तथ्यों और रोचक जानकारियों का परिचय कराते हैं। इन चार्टों में छोटे-से-छोटे विवरणों को भी देने का प्रयास किया गया है जो निश्चय ही बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा में पूर्णतया उपयोगी हैं।

BOOK-SELLERS ARE REQUESTED TO WRITE US FOR A DETAILED CATALOGUE.

INDIAN BOOK DEPOT
(Map House)
2937, Bahadur Garh Road,
Delhi-110006.
Ph: 7773927, 523635

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ०: मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार

कि एक छोटे सांप ने उसके पास आकर कहा—"आप कैसे हैं मेरे जीवनदाता !"हेली पू और अधिक आश्चर्य में पड़ गया।

इस पर वह नन्हा-सा सांप बोला—"शायद आपने मुझे नहीं पहचाना। कल आपने ही मेरे प्राण बचाए थे। मैं नागराज की कन्या हूं। उन्होंने मुझे आपके पास आभार प्रकट करने के लिए भेजा है। और आपको घर पर निमंत्रित करने के लिए भी कहा है। कृपया घर चलें, जिससे मेरे माता-पिता भी मेरी जान बचाने के लिए आपका धन्यवाद कर सकें।"

इसके बाद उसने फिर कहना शुरू किया—"जब आप घर पहुंचेंगे, तब मेरे माता-पिता आपको कोई न कोई उपहार अवश्य देंगे। आप कोई उपहार मत लेना। पर वे मानेंगे नहीं। तब आप मेरे पिता जी से वह कीमती पत्थर मांगना, जो वह सदा अपने मुंह में रखते हैं। उस बहुमूल्य पत्थर को मुंह में रखने से आप जंगल में रहने वाले सभी पशु-पक्षियों की भाषा समझ सकेंगे। पर एक बात का ध्यान रखिएगा, आप जो कुछ भी सुनें,उसे गुप्त रखें। किसी को बता देने पर आप एक पत्थर के रूप में बदल जाएंगे।"

अब हेली पू सर्पराज की कन्या के साथ-साथ चला। वह उसे एक घाटी की ओर ले गई। हेली पू ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों बहुत ज्यादा सर्दी महसूस करता गया। आखिर वे ऐसी जगह पहुंचे, जहां एक आलीशान महल था। बहुत बड़ा प्रवेश-द्वार था। कई डरावने सांप वहां पहरा दे रहे थे।

नागराज ने आगे बढ़कर हेली पू का स्वागत किया। फिर अत्यंत विनय पूर्वक कहा—"श्रीमन् ! आप मेरी प्राणप्यारी बिटिया के जीवन-रक्षक हैं। इसकी रक्षा के लिए मैं आपका हृदय से कृतज्ञ हूं। यह मेरा भंडारघर है। मेरी सारी सम्पत्ति यहीं रखी है। मैं चाहता हूं कि आप इसे देखें और जो कुछ भी पसंद आए, उसे बिना संकोच के उठा लें।"

इसके बाद नागराज ने भंडारघर खोला और हेली पू को भीतर ले गए। उस भंडारघर में अपार खजाना था। किसी कमरे में एक से एक सुंदर मोतियों का ढेर था, किसी में हीरे थे। नागराज एक के बाद दूसरा कमरा दिखाते चले गए। उस भंडारघर में एक सौ आठ कमरे थे। सारे कमरे देखने के बाद भी हेली पू ने कोई वस्तु लेने की इच्छा व्यक्त नहीं की।

नागराज हैरान थे। उन्होंने हेली पू से पूछा—"श्रीमन् ! मेरे इस बहुमूल्य खजाने में से क्या आपको एक भी चीज पसंद नहीं आई ?"

हेली पू ने जवाब दिया—"नागराज ! आपका खजाना वाकई बहुत कीमती है। उसमें एक से एक मूल्यवान वस्तुएं हैं। लेकिन उनका इस्तेमाल केवल साज-सज्जा के लिए ही किया जा सकता है। मुझ जैसे शिकारी के लिए उनकी क्या उपयोगिता ?" यह सुनकर नागराज उदास हो गए।

यह देखकर हेली पू ने पूछा—"महाराज ! मैं आपको दुखी नहीं देख सकता। यदि आप सचमुच में ही यादगार के रूप में कोई भेंट देना चाहते हैं, तो अपने मुंह में रखे हुए कीमती पत्थर को दे दीजिए।"

नागराज ने यह सुनते ही अपना सिर झुका लिया। एक क्षण के लिए कुछ सोचा, फिर वह कीमती पत्थर मुंह से नीचे गिराया और हेली पू को स्मृति-चिह्न के रूप में दे दिया। इसके बाद हेली पू ने अपने घर जाने की इजाजत मांगी। नागराज ने कृतज्ञतापूर्वक उसे विदा किया। नागकन्या उसे महल के बाहर छोड़ने आई।

नागराज से बहुमूल्य पत्थर पाने के बाद हेली पू के लिए शिकार करना बहुत आसान हो गया। पशु-पक्षियों की बातचीत से वह यह समझ जाता कि

कहां कौन-सा जानवर है।

सुख-चैन की बंसी बजाते हुए हेली पू की जिंदगी के कई साल गुजर गए। एक दिन उसने अचानक सुना, कुछ पक्षी आपस में यह कह रहे थे—'हमें जल्दी से जल्दी यह स्थान छोड़कर किसी दूसरी जगह चले जाना चाहिए। कल यह पहाड़ फट जाएगा। पेड़ उखड़कर गिर पड़ेंगे। मैदानों में पानी भर जाएगा। ईश्वर ही जानता है कि कल कितने जानवर पानी में डूब जाएंगे।' यह सुनते ही हेली पू का मन उचाट हो गया। शिकार करने की इच्छा खत्म हो गई। गांव वालों की सुरक्षा की चिंता सिर पर सवार हो गई। वह जल्दी से गांव पहुंचने के लिए उतावला हो उठा।

हेली पू भागता-दौड़ता गांव पहुंचा। गांव के सभी लोगों से अपने पास आने के लिए कहा। जब सब लोग इकट्ठे हो गए, तब वह बोला—"मेरे प्यारे साथियो, मुझे यह कहते हुए बहुत दुःख है कि हम लोग इस गांव में और अधिक नहीं रह सकते। हमें यह गांव फौरन छोड़ देना चाहिए। मैं जो कुछ कह रहा हूं, वह बिल्कुल सच है। थोड़ी देर भी खतरनाक सिद्ध हो सकती है। इसलिए आप लोग यह गांव तुरंत छोड़ दीजिए।"

हेली पू की बात सुनकर गांव वाले हैरान हो गए। उनकी समझ में कुछ नहीं आया। कुछ लोगों ने सोचा कि हेली पू शायद पागल हो गया है। लेकिन हेली पू की आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी। आखिर वह हताश होकर बोला—"क्या आप लोगों को विश्वास दिलाने के लिए मुझे अपने प्राणों की बलि देनी होगी।"

उसकी यह बात सुनकर गांव के सबसे बूढ़े आदमी ने कहा—"हम सब लोग यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि तुम झूठ नहीं बोलते। तुम जो भी कहोगे, वह हम लोगों की भलाई के लिए ही कहोगे। लेकिन क्या हमें यह जानने का हक नहीं है कि हमें यह गांव एकदम अभी क्यों छोड़ देना चाहिए? इस गांव में हम सैकड़ों सालों से रहते आ रहे हैं।"

हेली पू ने कहा—"बहुत जल्दी ही इस गांव के पास पहाड़ फटने वाले हैं। नदियां उफनने वाली हैं। सारा गांव खत्म होने वाला है।"

उसकी यह बात सुनकर एक आदमी ने पूछ ही लिया—"तुम्हें यह बात कैसे मालूम?"

हेली पू ने एक क्षण के लिए सोचा कि वह बताए या नहीं। उसे नाग कन्या द्वारा दी गई चेतावनी का ध्यान आया। 'सचमुच बिना बताए गांव वाले अपना गांव छोड़ना पसंद न करेंगे। यह ठीक है कि मैं अकेला भी गांव छोड़कर जा सकता हूं और अपने प्राण बचा सकता हूं। लेकिन क्या सब कुछ जानते हुए, अपनी आंखों के सामने अपने लोगों को मरते देखना अच्छी बात है।'—ऐसा सोच उसने पक्षियों की आपसी बातचीत सुना दी। साथ ही यह बता दिया कि उसे जंगल में रहने वाले प्राणियों की भाषा समझने की शक्ति कैसे प्राप्त हुई है।

उसने यह बताना भी जरूरी समझा कि वह पत्थर बन जाएगा और मर जाएगा। लोगों ने देखा कि ज्यों-ज्यों वह बोलता जा रहा था, त्यों-त्यों उसका शरीर पत्थर के रूप में बदलता जा रहा था। वे यह देखकर बड़े दुखी हुए और उन्होंने वह गांव छोड़ दिया। गांव छोड़ते हुए उन्होंने देखा कि आसमान में काले-काले बादल घिर आए थे। अगले दिन तक वे अपने बाल-बच्चों तथा पशुओं के साथ एक सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए थे। उन्होंने एक बहुत धमाकेदार आवाज सुनी। उसे सुनकर उन्हें यह अनुमान लगाने में कठिनाई नहीं हुई कि यह धरती फटने और पहाड़ों के टूटकर गिरने की आवाज है। कुछ ही देर बाद पानी के तेज बहाव की आवाज सुनाई दी। हेली पू ने जो कुछ कहा था, वह सच निकला। वे सोचने लगे कि अगर हेली पू ने उनकी जान बचाने के लिए अपने प्राणों की बलि न दे दी होती, तो आज वे सब मर गए होते। यह सोचते ही उनकी आंखों से आंसू बहने लगे।

कुछ समय के बाद गांव वालों ने उस पत्थर को खोज निकाला, जो वास्तव में हेली पू का मृत शरीर था। उन्होंने उसे पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी पर रखा, फिर उसकी पूजा की, फूल चढ़ाए। इसके बाद पीढ़ी दर पीढ़ी लोग वहां जाते रहे और श्रद्धा के फूल चढ़ाते रहे। कहते हैं कि वह स्थान आज भी मौजूद है।●

नंदन ज्ञान पहेली

१०००रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. — पर भी कोई कविता लिख सकता है महाशय? (आम/आलू)

२. सुना है, पहलवान — के मारे परेशान है। (भूख/भूत)

४. अरे, तुम क्यों — ढोओगे? (बोरा/बोझा)

८. सुबह से — को ढूंढ़ रहा हूं अम्मां। (चाबी/चाची)

९. बस, किसी तरह — लो भाई! (खा/पी)

१०. — मैंने ही नाटक में कर्ण का अभिनय किया था गुरु जी। (हां/जी)

११. एक ऐसा ग्रह जिसके बहुत से चांद हैं।

१२. एक प्राचीन कवि, जिनकी मुकरियां मशहूर है।

ऊपर से नीचे

३. सुना नहीं बिट्टू, — पर चलकर बैठो। (टाट/खाट)

५. यह — खेलने के लिए ठीक रहेगा न गोपू? (टीला/झूला)

६. — के लिए यह गुड़िया ले जाइए बाबूजी। (बेटी/छोटी)

७. जा, चाची को — दे आ। (सीढ़ी/कढ़ी)

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २९०

नाम ______________________

उम्र ______ पता ______________________

____

१ आ			२ भू			३
	४ बो					ट
५			६		७	
ला			टी		ढ़ी	
	८ चा			९		१०
११	नि	अंतिम तिथि : १५.२.९३				
	१२	मी		खु		रो

नं. ज्ञा. प. २९०

Bomb found in Shatabdi Express
EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI – A major disaster was averted after a time bomb was
NR
उ रे
आस-पास पड़ी लावारिस वस्तुएँ बम भी हो सकती हैं। तुरन्त रेलवे अधिकारी या पुलिस को इसकी सूचना दें।
उत्तर रेलवे
उत्तर रेलवे
आपकी सेवा में
HTA 7881

नाव न जाए

—सुरेश के. अंजुम

एक बार कुछ मछेरे मछली पकड़ने समुद्र की ओर गए। सुबह से शाम हो गई, किंतु एक भी मछली उनके हाथ नहीं लगी।

निराश होकर मछेरे लौट आए। अब वे एक अनुभवी बूढ़े मछेरे के पास गए। उस बूढ़े का नाम कारेल था। मछेरों ने अपनी दुःख भरी कहानी सुनाकर उससे सलाह मांगी।

मछेरों की बात सुनकर,कारेल ने एक रूमाल उन लोगों को दिया। बोला—"इसे रखो। इसमें अलग-अलग स्थानों पर तीन गांठें मैंने लगाई हैं। पहली गांठ खोलोगे, तो तुम्हारी नाव समुद्र में दूर तक चली जाएगी। दूसरी गांठ खोलोगे, तो असंख्य मछलियां तुम्हारे जाल में फंसेंगी। किंतु तीसरी गांठ भूलकर भी कभी मत खोलना। अन्यथा तुम लोग विपत्ति में फंस जाओगे।"

दूसरे दिन मछेरे कारेल का रूमाल लेकर नाव खेते, मछलियां पकड़ने समुद्र में गए।

कारेल के कहे अनुसार मछेरों ने रूमाल की पहली गांठ खोल दी। उनकी नाव समुद्र में काफी दूर तक निकल गई।

दूसरी गांठ खोलने के बाद मछेरों ने समुद्र में अपना विशाल जाल फैलाया। कुछ ही देर में जाल असंख्य मछलियों से भरकर इतना भारी हो गया कि उन्हें जाल को खींचने में कष्ट होने लगा।

बहुत मुश्किल से मछेरे जाल को खींचने में सफल हो सके। जाल में बेशुमार मछलियां फंसी देख, मछेरों के मुखिया का लालच और बढ़ गया। वह कारेल की चेतावनी भूल गया। चिल्लाकर बोला—"जाल फिर से डालो। रूमाल की तीसरी गांठ भी खोल दो।"

मछेरों ने अपने सरदार की बात मानकर जाल समुद्र में फेंक दिया। फिर रूमाल की तीसरी गांठ भी खोल दी।

रूमाल की तीसरी गांठ खुलते ही नाव एक जगह ठहर गई। अब वह न तो आगे बढ़ रही थी और न पीछे। तभी समुद्र में भयंकर चक्रवात उठा। नाव हिचकोले खाने लगी। फिर मूसलाधार बारिश भी होने लगी। मछुआरे चीखने लगे, मगर कौन सुनता उनकी चीखें? इसी चक्कर में रात घिरने लगी। अंधेरा होते ही उनकी नाव समुद्र में इधर-उधर भटकने लगी। नाव में भरी सारी मछलियां वापस समुद्र में गिर गईं।

सुबह मछेरों ने अपनी नाव को एक अपरिचित तट पर खड़ा पाया। वे सभी भयभीत बने नाव से उतरे। कुछ आगे बढ़े कि ठिठक गए। सामने से एक वृद्ध व्यक्ति आ रहा था। मछेरों ने गिड़गिड़ाते हुए उससे कहा—"बाबा, हम मुसीबत में फंस गए हैं। हमारी मदद कीजिए।"

फिर मछेरों ने अपनी सारी आपबीती बूढ़े को सुना दी।

मछेरों की बात सुनकर बूढ़ा बोला—"तुमने कारेल की आज्ञा भंग की, इसीलिए तुम पर यह विपत्ति आई। समुद्र की विपत्तियों से बचने के लिए ही कारेल ने रूमाल में तीसरी गांठ बांधी थी। लाओ रूमाल, मैं वह गांठ फिर बांध देता हूं। ठीक उत्तर दिशा में बढ़ते चले जाना। तुम लोग अपने घर पहुंच जाओगे, किंतु रूमाल की तीसरी गांठ मत खोलना।"

बूढ़े ने रूमाल में तीसरी गांठ बांधकर मछेरों को दे दी।

मछेरे खाली हाथ घर वापस लौट आए। इस घटना को सैकड़ों वर्ष बीत चुके हैं, मगर आज भी मछेरों के मुंह से यह कहानी सुनी जाती है।●

देश के लिए

—सुनंदा ज्ञानदेव चौधरी

बंगाल के एक छोटे-से गांव में एक बालक अपनी मां के साथ रहता था। उसका नाम था—जतीन मुखर्जी। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। मां बड़े कष्ट और यत्न से उसे पाल रही थी।

एक शाम को खाना खाते समय मां ने जतीन से कहा— "खतरे से घबराकर भागना नहीं चाहिए, बल्कि डटकर उसका मुकाबला करना चाहिए।" उस दिन से नन्हे जतीन ने निश्चय कर लिया कि वह जीवन में कभी किसी खतरे से नहीं घबराएगा।

कुछ दिन बाद अपने साथियों के साथ तैरते हुए जतीन नदी में उगे सेवार में फंस गया। सब साथी डर के मारे जल्दी-जल्दी तैरकर किनारे आ गए। दौड़कर जतीन की मां और मल्लाहों को बुला लाए। मल्लाह चिल्लाए—"घबराना नहीं जतीन, हम आ रहे हैं।"

"नहीं, उसे स्वयं तैरकर आने दो भैया।"—पास खड़ी जतीन की मां ने उन्हें रोका।

"क्या कह रही हो बहन ! छोटा बालक है, डूब जाएगा।"—मल्लाहों ने आश्चर्य से कहा।

"नहीं, मेरा बेटा सकुशल लौटेगा।"—मां ने पूर्ण विश्वास से कहा। और सचमुच जतीन हाथ-पांव मारकर सेवार से बचकर किनारे आया; मां से लिपट गया। मां की आंखों से खुशी के आंसू झरने लगे।

एक बार मां बहुत बीमार हो गईं। जतीन रात-दिन मां की सेवा करता। एक रात बीमार मां ने आंखें खोलकर देखा, जतीन अभी भी पंखा झल रहा था।

मां ने बेटे से कहा—"बेटा, अब मैं जा रही हूं, लेकिन तुम अकेले नहीं हो। यह देश, यहां के वासी सब तुम्हारे बंधु हैं। बेटा,इन लोगों ने अंग्रेजों के बहुत अत्याचार सहे हैं, बहुत कष्ट उठाए हैं। गांव का यह पुल देखते हो न ! यह भी गांव वालों की मेहनत से बना है। एक दिन नदी में पानी बढ़ने लगा, तो मजदूर डरकर भागने लगे। तब दुष्ट अंग्रेजों ने उन्हें गोलियों से भून दिया। बेटा, अपने भाइयों को इन जालिमों से बचाने की कोशिश...." वाक्य पूरा किए बिना ही जतीन की मां ने दम तोड़ दिया।

अब जतीन अकेला रह गया, लेकिन मन में विपत्ति का मुकाबला करने का संकल्प था।

बचपन बीत गया। अब जतीन एक बहादुर नौजवान था। सब उसे चाहते थे। हर संकट में वह आगे रहता। एक बार साथियों के साथ जंगल से घर लौटते हुए जतीन पर शेर ने हमला कर दिया। सब साथी भाग गए। लेकिन जतीन ने डटकर मुकाबला किया और शेर को मार डाला। उस दिन से सब उसे 'बाघा जतीन' के नाम से पुकारने लगे।

जतीन पढ़ाई के लिए कलकत्ता गया। वहां एक दिन शाम को वह गोरा बाजार से गुजर रहा था कि उसने एक बड़ा ही अजीब दृश्य देखा। एक अंग्रेज राह चलते हर व्यक्ति की पीठ पर एक छड़ी मारकर उनकी गिनती कर रहा था—"एक, दो...दस, ग्यारह ...बीस....चालीस.....पैंतालीस...." एकाएक जतीन ने झपटकर अंग्रेज के हाथ से छड़ी छीनकर उसकी पीठ पर जोर से जमाई। कहा—"और यह पचास !"

अंग्रेज हक्का-बक्का रह गया। सामने खड़े जतीन की आंखें क्रोध से जल रही थीं।

जतीन को इतने से ही संतोष न था। उसने चुपचाप अपने साथियों के साथ मिलकर एक टुकड़ी तैयार की, जिसे उसने स्वयं बंदूक चलाना और हथगोलों का प्रयोग करना सिखाया।

अंग्रेज सरकार बौखला गई। जतीन की खोज होने
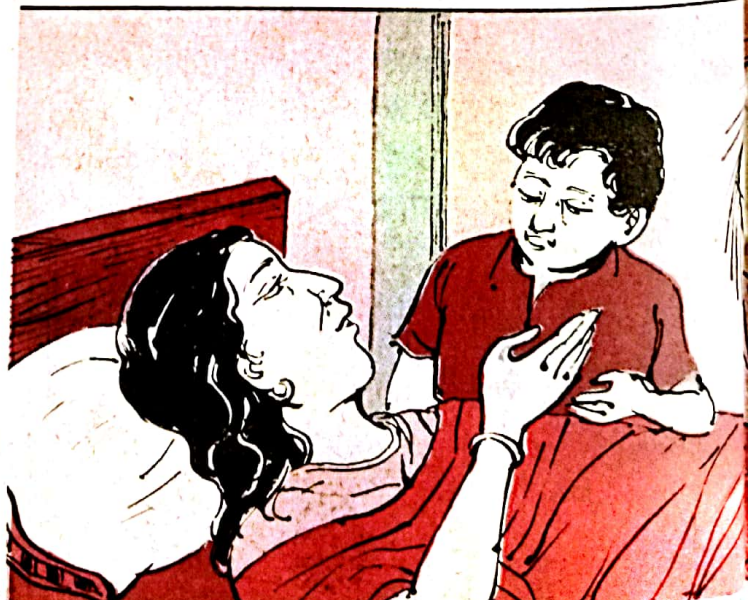
लगी। काफी दौड़-धूप के बाद जतीन पकड़ा गया। उसे धमकाया गया, पर वह शांत रहा। सरकार ने समझौता करने के लिए उसे लालच दिया, तो वह चिल्लाया—"चुप रहो। आगे एक शब्द भी मत कहना।"

जतीन को पंद्रह महीने की कैद के बाद सबूत न मिलने के कारण छोड़ दिया गया।

जतीन ने फिर एक कम्पनी शुरू की। यह कम्पनी चुपचाप विदेशों से हथियार मंगाकर देशभक्तों को देती थी। अंग्रेजों को शक हो गया। चप्पा-चप्पा छान मारा, किंतु जतीन उड़न छू हो चुका था। वहां केवल एक चिट मिली, जिस पर लिखा था—'कपटी पाड़ा।'

'कपटी पाड़ा' जतीन की टुकड़ी का नया अड्डा था। इस नए कैम्प का पता चलते ही अंग्रेज अफसर अपने दलबल सहित जतीन की खोज में उधर ही चल पड़े।

"चित्तप्रिय, देखो तो हमारे कुछ दोस्त आ रहे हैं।"—जतीन ने दूरबीन से देखकर कहा और हंसने लगा। वे पहाड़ी पर थे और अंग्रेज टुकड़ी को आता देख रहे थे।

"दादा, भाग जाओ, अभी समय है। अपना अमूल्य जीवन बचा लो।"—साथी चित्तप्रिय ने घबराकर जतीन की बांह पकड़ ली।

"पागल हो, तुम सबको छोड़कर भाग जाऊं!"—जतीन ने आश्चर्य से कहा।

"दादा, देश को तुम्हारी जरूरत है।"—एक साथी ने विनती की।

"नहीं रे, एक जतीन मरेगा, तो सौ जन्म लेंगे। हम मरेंगे तो साथ मरेंगे।"—जतीन ने दृढ़ स्वर में कहा।

"छपाक!" और वे सब पास की नदी में कूद पड़े। तैरते-तैरते दूर निकल गए। दूसरे किनारे पर एक छोटी-सी पहाड़ी पर झाड़ियों में बहादुर जवान छिपे बैठे थे। थके और भूखे-प्यासे होने पर भी उनका हौसला बुलंद था।

"दादा, विनती करता हूं, आप चुपचाप निकल जाइए।"—चित्तप्रिय ने अंतिम बार प्रार्थना की।

"चित्तप्रिय, बाघा जतीन को गीदड़ बनाना चाहते हो? अब तो अंतिम युद्ध है।"—जतीन के चेहरे पर बहादुरी की चमक थी।

अंग्रेज टुकड़ी पीछा करते-करते पहाड़ी के नीचे आ चुकी थी। धुआंधार गोलीबारी शुरू हो गई। जतीन और उसके मुट्ठी भर साथियों ने डटकर मुकाबला किया।

"दादा विदा, वंदे-मातरम!"—एक गोली चित्तप्रिय के सीने के पार हो गई। जतीन शोक से पागल-सा हो गया। मृत मित्र का सिर गोद में रखकर गोली चलाने लगा। और फिर सब कुछ शांत हो गया। अंग्रेज टुकड़ी ने चारों ओर से सबको घेर लिया।

सब घायल थे और अंतिम सांसें गिन रहे थे। इन मुट्ठी भर देशभक्तों का हौसला देखकर अंग्रेज अफसर मिस्टर किल्बी का दिल भी भर आया।

"मिस्टर मुखर्जी लीजिए, पानी पी लीजिए।"—किल्बी अपने लोहे के टोप में पानी भरकर ले आया था।

जतीन बुरी तरह घायल था। पानी पीकर धन्यवाद देने के बाद उसने धीमे स्वर में कहा—"मेरे इन साथियों का कोई दोष नहीं। सजा मुझे ही दी जाए।"

जतीन को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन कोशिश करने पर भी वह बच नही सका। मातृभूमि को नमन करते हुए इस बहादुर देशभक्त ने संसार त्याग दिया।

'जतीन मुखर्जी, तुम्हारे जैसा बहादुर देशभक्त मैंने आज तक नहीं देखा।' —जतीन की मृत्यु पर अंग्रेज कलेक्टर के मुंह से बरबस ये शब्द निकल पड़े थे।■

पीपल

—टेकल गोपालकृष्ण

कर्नाटक के गांव-गांव में पीपल के वृक्ष होते हैं। कई पेड़ तो इतने बड़े होते हैं कि उनके नीचे गांव की पंचायत जुड़ती है। इन्हें बहुत पूजनीय माना जाता है। पीपल के पेड़ के नीचे 'नागर कल्लु' (एक पत्ते के ऊपर नाग देवता) बनाकर गांव की महिलाएं उसकी पूजा करती हैं।

एक घना जंगल था। उस जंगल का राजा था एक भयानक शेर। शेर ने दूसरे वन में रहने वाली शेरनी से शादी की थी। विवाह के बाद वन्य जीवों को दावत दी गई। इसमें मोर नाचा। लोमड़ी ने सबका आपस में परिचय कराया। सबने अपने-अपने ढंग से शेर-शेरनी को नमस्कार किया। फिर सब चले गए।

शेर और शेरनी जंगल में आराम से रहने लगे। लेकिन काफी समय बीत जाने पर भी शेरनी मां नहीं बनी। इससे दोनों चिंतित रहने लगे। इसी बीच एक दिन लोमड़ी वनराज के दर्शन करने आई। उसे दोनों की उदासी का कारण पता था। उसने कहा—"महाराज, आप चिंता न करें। मैं एक उपाय बताती हूं।"

"कैसा उपाय ?" —शेरनी ने पूछा।

लोमड़ी ने बताया—"मैंने सुना है, गांव में औरतें पीपल की पूजा करती हैं। कहते हैं वहां मनौती मानने से संतान मिलती है।"

"लेकिन वैसा पेड़ कहां मिलेगा ?" —शेर ने कहा। तभी एक कौआ वहां आया। उसने कहा—"मैंने देखा है पीपल का पेड़। हमारे जंगल के किनारे एक गांव है। वहां पीपल का बहुत बड़ा एक पेड़ है। गांव के लोग मिलकर उसकी पूजा करते हैं। आप भी वहां जाकर पीपल की पूजा कीजिए। ईश्वर आपकी मनोकामना पूरी करेगा।"

शेर-शेरनी ने कौए की बात मान ली। दोनों रात के समय गांव में चले गए। वहां शेरनी ने आठ बार पीपल की परिक्रमा की, फिर दोनों जंगल में लौट आए।

सुबह गांव वाले पीपल की पूजा करने आए, तो चौंक गए। पेड़ के आसपास शेर-शेरनी के पंजों के निशान दिखाई दिए। सब डर गए। पूरे दिन गांव में चर्चा रही कि रात को यहां शेर-शेरनी आए थे। अगले दिन भी पंजों के नए निशान दिखाई दिए। फिर तो रोज ही ऐसा होने लगा। क्योंकि शेर-शेरनी हर रात पीपल की परिक्रमा करने आते थे। पर उन्होंने कभी किसी से कुछ नहीं कहा।

पीपल की पूजा का फल मिला। शेरनी ने दो शिशुओं को जन्म दिया। पीपल का पेड़ चमत्कारी है, यह समाचार पूरे जंगल में फैल गया। अनेक पक्षियों ने जाकर उस पेड़ पर अपने घर बना लिए।

शेर के शिशु मां के साथ गुफा में रहने लगे। जब कुछ बड़े हुए, तो शेरनी बच्चों को पीपल का चमत्कारी वृक्ष दिखाने ले गई। उन्हें पूरी बात बता दी। बच्चों ने भी उस पवित्र पेड़ को आदरपूर्वक प्रणाम किया।

इसके बाद शेरनी ने सब वन्य ज़ीवों को दावत दी। सब पशु-पक्षी शेर राजा तथा उसके परिवार के लिए उपहार लेकर आए थे। दावत में गांव से एक बंदर भी पहुंचा था। वह पोटली में उपहार लाया था। उस पोटली में पीपल के पेड़ की टहनी थी।

शेर भेंट पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। टहनी को जमीन में लगा दिया गया। हाथी सूंड में पानी भरकर लाता और वहां छिड़क देता। बाकी वन्य जीव भी उसकी देखभाल करते। धीरे-धीरे पौधा बढ़ने लगा। और एक दिन भरा-पूरा वृक्ष बन गया। जंगल के राजा शेर ने कहा—"अब हमें पूजा के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं।" उसने आदेश दिया—"आगे से वन्य जीवों की सभा पीपल के वृक्ष के नीचे जुड़ा करेगी।"

(कन्नड़)

चीटू-नीटू

नया वर्ष भी शुरू, पर अभी तक हम कोई अच्छा काम नहीं कर पाए
चलो अभी से शुरू

टीचर जी के मुंह से धुआं निकल रहा है, शायद स्कूल में सिग्रेट...
चलो मना करते हैं

मूर्खो, सर्दी के मारे मुंह से... और तुम... चलो बेंच पर खड़े हो जाओ

वह देखो, कोई बदमाश सुधीर को बहका कर ले जा रहा है उसे छुड़ाएं
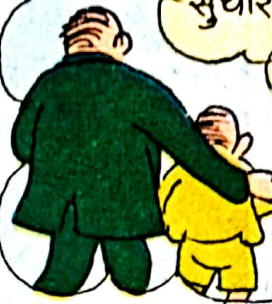
मैं सड़क पर गिर गया था वह भला आदमी मेरी पट्टी कराने...
आओ पट्टी हम कर देते हैं

माफ करना, गलती से टिंकचर की बोतल उलट गई...
चीटू, सुधीर की मम्मी

भागो, वह बड़े गुस्से में हैं
सच पूछो तो भलाई का जमाना ही नहीं रहा

शीर्षक बताइए

पूरी खाओ, मौज उड़ाओ— इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ फरवरी '९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अप्रैल '९३ अंक

चित्र : राजेश गांधी
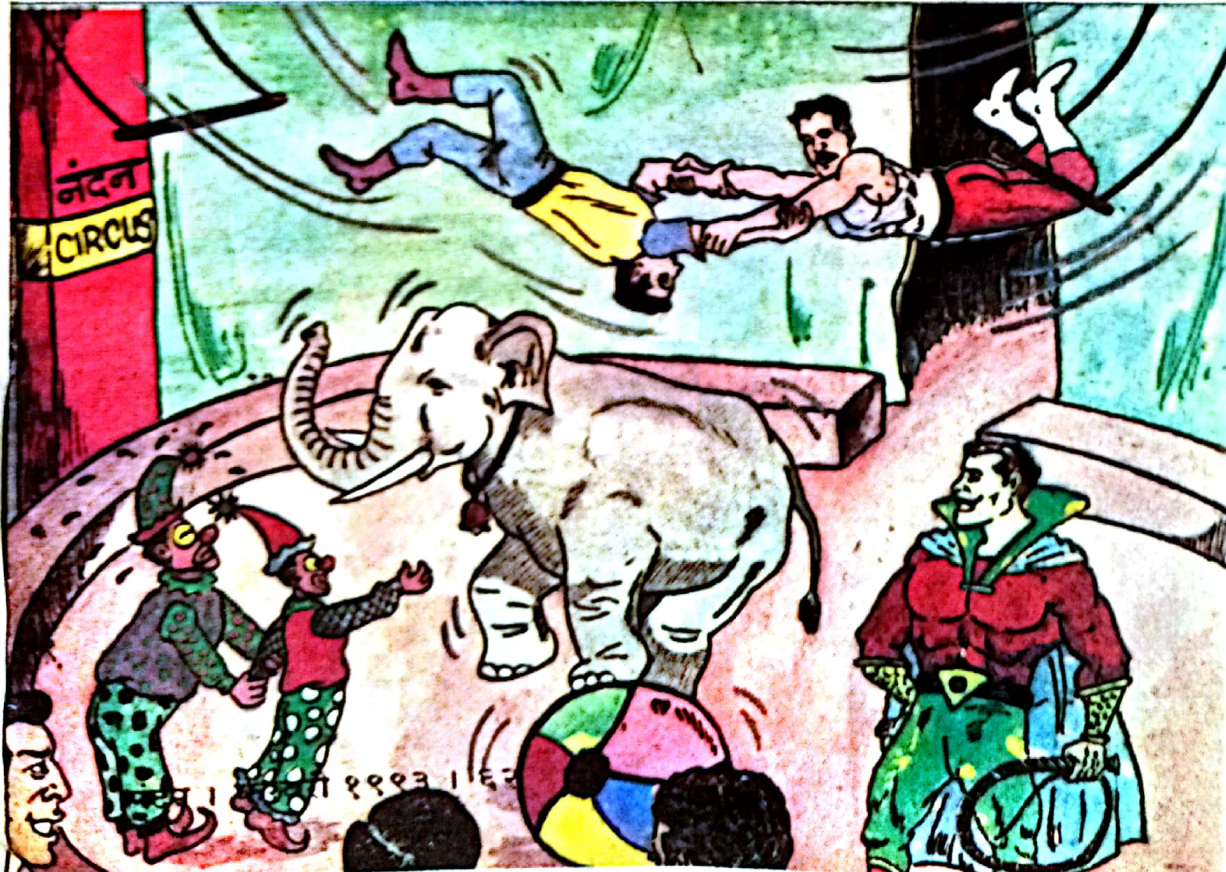
पुरस्कृत चित्र

मयूर, आयु १२ वर्ष, सुपुत्र श्री नंदूप्रसाद सिंह, मु. शेखपुरा, पो. बी. वी. कालेज, पटना-१४

इनके चित्र भी पसंद किए गए— दिशांत श्रीवास्तव, अलीगढ़; स्मिता सेन, विदिशा; जैसमिन औजला, भटिंडा (पंजाब); सुमन जोशी, देहरादून।

सकीना राजू आरती अंकुर प्रियंका

पत्र मिला

☐ यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। 'पचास में एक', 'सहेली-सहेली', 'बड़ी मां' तथा 'मुंशी जी' कहानियां बहुत भाईं। 'सोने की घड़ी' और 'आकाश में आदमी' चित्र-कथाएं भी बहुत दिलचस्प थीं। 'चीटू-नीटू' और 'चटपट' ने खूब हंसाया। **—सुनीताकुमारी, वसंत विहार, नई दिल्ली**

☐ 'नंदन' बच्चों की एक रोचक, शिक्षाप्रद पत्रिका है। दिसम्बर अंक में 'बरस पड़ो', 'उड़ गई मैना', 'सोने की घड़ी' मजेदार लगीं। हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।

—श्रीराम गोयल, श्रीगंगानगर (राज.)

☐ 'नंदन' में प्रकाशित 'विश्व की महान कृतियों' के जरिए हमें देश-विदेश की उच्च कोटि की रचनाएं पढ़ने को मिलती हैं। इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

—सोमा डे, भिलाईनगर (म.प्र.)

☐ मेरे पास १०५ 'नंदन' हैं। सबको आकर्षक एवं मनमोहक बनाने के लिए इन पर सुंदर-सुंदर जिल्दें चढ़ाई हैं। सभी लोग मेरे इस संग्रह को बहुत सराहते हैं। सच पूछा जाए तो 'नंदन' मेरी जान है। **—कुमार पुष्पेश ठाकुर, रोसड़ा (बिहार)**

☐ यह पत्रिका बच्चों से लेकर बड़ों तक सबका मन लुभा लेती है। बच्चों को कहानियां बहुत पसंद आती हैं और बड़ों को प्रतियोगिताएं एवं स्तम्भ। बाल समाचार बहुत मनमोहक होते हैं। **—पंकज सिटोके, रायसेन**

☐ प्रतियोगिताओं में भाग लेने से हम बालकों के ज्ञान में वृद्धि होती है। चित्रकला में रुचि रखने वालों को चित्र बनाकर अपनी प्रतिभा बढ़ाने तथा उसके प्रदर्शन का सुनहरा मौका मिलता है। कार्टून प्रतियोगिता का भी आयोजन करें।

—नीरजकुमार रंजन, पटना

☐ 'नंदन' के स्थायी स्तम्भ 'आप कितने बुद्धिमान हैं ?' और 'ज्ञान पहेली' बहुत ही रोचक होते हैं। बाल लेखकों की रचनाएं भी अपने यहां छापा करें। **—पवनकुमार गुप्ता, इंदौर**

☐ पत्रिका का हर अंक पढ़ता हूं। इसके सामने दूसरी पत्रिकाएं फीकी पड़ जाती हैं। हर कहानी मनोरंजक तो होती ही है, अच्छी बातें भी सिखा जाती है।

—समरबहादुर यादव, मुगलसराय

☐ आपने मेरा फोटो दिसम्बर के बाल समाचार में छापा है। मुझे प्रेरणा दी है, प्रोत्साहित किया है। इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। 'नंदन' पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगती है। रोचक कहानियां पढ़ने में बहुत आनंद आता है। 'नंदन' पढ़कर ही मैं आगे बढ़ सकता हूं। **—नूर अहमद, बेलगाम**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : देवकरण जोशी, सरदारशहर; आलोककुमार, समस्तीपुर; पंकजकुमार सोनी, रायपुर।

आगामी अंक मार्च '९३

रंग अनेकों लेकर आया अंक मार्च का—

- **खेलें होली कृष्ण, गोपियों संग—एक दुर्लभ छवि एलबम में**
- नंदन चित्र कला प्रतियोगिता में प्रथम आए चित्र : दो पृष्ठों में
- **चित्र कला प्रतियोगिता परिणाम : कौन विजयी रहे ?**
- दो बेजोड़ चित्र कथाएं। तेनालीराम, चीटू-नीटू।
- **एक से बढ़कर एक कहानियां।**
- 'दुनिया वालो, मैंने तुम्हें सब कुछ दिया, फिर भी तुम आपस में लड़ते रहते हो ?' देवता ने पूछा। 'विश्व की महान कृतियां' में लांगफैलो की अमर काव्य रचना 'हाइवाथा' की संक्षिप्त कथा।

बोल रे तोते बोल

—रमाकांत 'कांत'

उडुप्पी का राजा था —श्रुतकीर्ति। होने को तो श्रुतकीर्ति वीर एवं विवेकशील राजा था, किंतु उसमें कुछ अवगुण भी थे। वह दृढ़ निश्चयी नहीं था। अक्सर चापलूसों के बहकावे में आकर अपने निर्णयों को बदल दिया करता था।

राजा के गलत निर्णयों के कारण राज्य में अव्यवस्था फैली हुई थी। प्रजा को राजा पर विश्वास नहीं रहा था। न जाने राजा कब किस के बहकावे में आकर कौन से निर्णय को बदल दे या नया निर्णय ले ले, कह पाना कठिन था। राज्य के महामंत्री एवं अन्य दरबारी गण भी राजा की इन आदतों के कारण परेशान थे।

उडुप्पी के पड़ोसी राज्यों ने सोचा कि उडुप्पी पर अधिकार कर लेने का इससे बढ़िया मौका और क्या हो सकता है? मगर उनकी इस योजना में बाधक बन रहा था, वहां का सेनापति सुबाहु। इसीलिए पड़ोसी राज्यों ने श्रुतकीर्ति की कमजोरी का फायदा उठाते हुए एक कूटनीतिपूर्ण चाल चली। उन्होंने सुनियोजित तरीके से उडुप्पी में कुछ लोगों एवं जातियों को भड़काकर दंगे-फसाद करवा दिए। महामंत्री और सेनापति ने तुरंत कार्यवाही करके स्थिति नियंत्रण में ले ली।

पड़ोसी राज्यों ने राजा के चारों और फैले चापलूसों को खरीद रखा था। उन्होंने राजा के कान भरे और इन दंगों के लिए सेनापति को जिम्मेदार ठहराया। राजा ने उनके बहकावे में आकर सेनापति को मृत्युदंड सुना दिया। यह सुनकर महामंत्री एवं उडुप्पी की प्रजा सन्न रह गई। महामंत्री को बात समझते देर न लगी। उन्होंने भी वही कूटनीति काम में ली जो राज्य के शत्रुओं ने ली थी। कानों के कच्चे राजा ने दूसरे परामर्शदाताओं की बात मान कर, सेनापति को दंड मुक्त कर दिया। इस तरह राज्य का संकट टल गया।

हालांकि महामंत्री प्रसन्न थे कि जो चाहते थे वह हो गया है। देशभक्त सेनापति को बचा लिया गया

है। मगर उनकी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि राजा को किस तरह इस योग्य बनाया जाए कि वह किसी बहकावे में न आए। जो निर्णय हो उसे बार-बार न बदला जाए। उन्होंने अपने विश्वस्त साथियों से कह रखा था कि वे इस तरह का कोई मार्ग ढूंढ़ें ताकि उडुप्पी का कल्याण हो सके।

एक दिन सायंकाल महामंत्री इस समस्या पर चिंतन करते हुए अपने कमरे में चहल कदमी कर रहे थे, उनके पुत्र ने सूचना दी कि एक व्यक्ति उनसे मिलने आया है।

महामंत्री ने उस व्यक्ति को अपने कक्ष में बुलवाया। मंत्रणा कक्ष में महामंत्री एवं उस व्यक्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं था। उस व्यक्ति ने कहा कि यदि राज दरबार में उसे प्रवेश मिल जाए, तो वह श्रुतकीर्ति के सोए हुए विवेक को जगा सकता है। महामंत्री ने उस व्यक्ति को ऐसी युक्ति सुझा दी ताकि वह व्यक्ति दरबार तक पहुंच जाए।

दूसरे दिन की बात है। राजा का दरबार लगा हुआ था। शहर कोतवाल ने कहा —"महाराज, मैं एक व्यक्ति को पेश करने की इजाजत चाहता हूं। उसने एक डंडा ले रखा है जिसमें एक गठरी टांग रखी है। हाथ में एक तोते का पिंजरा भी है। वह कहता है कि वह 'ज्ञान' बेचता है।"

राजा को उत्सुकता हुई कि ऐसे व्यक्ति से अवश्य मिला जाए। उन्होंने उसे दरबार में हाजिर करने के

लिए स्वीकृति दे दी।

तुरंत उस व्यक्ति को हाजिर किया गया। उसने दरबार में प्रवेश करते हुए राजा एवं सभी सभासदों को प्रणाम किया। राजा ने उससे पूछा —"शायद आप उडुप्पी के रहने वाले नहीं हैं। आपका क्या नाम है ?"

"मैं तुंगभद्रा का रहने वाला हूं। मेरा नाम विवेकशील है।" —आगंतुक ने कहा।

—"आप काम क्या करते हैं ?"

—"मैं कथा सुनाने वाला पंडित हूं। दूसरों को उपदेश देना तथा उन्हें सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना मेरा काम है।"

"तो फिर कंधे में पड़ी इस पोटली में क्या है ? और यह तोता क्यों ले रखा है ?"-राजा ने अंगुली से इशारा करते हुए पूछा।

"इसमें दो तोते हैं। यदि आप आज्ञा दें,तो मैं आपको उन्हें दिखाऊं।"—विवेकशील ने श्रुतकीर्ति से पूछा।

—"हां-हां, दिखाओ। अवश्य दिखाओ।"

गठरी खोलकर उसने उसमें से तोते निकाले। वे दोनों एक ही तरह के थे। राजा ने विवेकशील से उन तोतों की विशेषताओं के बारे में पूछा।

उसने कहा —"राजन ! होने को तो ये तोते एक जैसे ही हैं। बस, अंतर यही है कि एक का नाम है 'मिट्टी का माधो', दूसरे का नाम है 'काठ का उल्लू' और यह जो तीसरा जीवित तोता है, इसका नाम है 'ज्ञान'।"

"लेकिन इन तोतों को ये नाम किस आधार पर दिए गए हैं ?"—राजा ने जिज्ञासा प्रकट की।

कथा वाचक ने 'मिट्टी के माधो' को दिखलाते हुए कहा —"महाराज, यह मिट्टी का बना है। इसको बनाना एवं नष्ट करना बहुत आसान है। यह ऐसे लोगों का प्रतीक है जो दृढ़प्रतिज्ञ नहीं होते। जो किसी भी बात से प्रभावित होकर अपने विवेक को काम में लिए बिना,चाहे जो निर्णय ले लेते हैं। इसीलिए इसका नाम 'मिट्टी का माधो' रखा गया है।

—"दूसरा तोता लकड़ी का बना हुआ है। यह मिट्टी की मूर्ति की अपेक्षा थोड़ा-सा मजबूत है। ऐसे लोगों को भी उनके निर्णय से डिगाया जा सकता है। ये दृढ़ निश्चयी होने का स्वांग भरते हैं, मगर होते नहीं। अजीब-सी ऊहापोह इन्हें 'काठ का उल्लू' साबित कर देती है।

"तीसरा यह जीवित तोता 'ज्ञान' है। इसे सिखाने के लिए बहुत साधना करनी पड़ती है। मगर एक बार सीखने के बाद फिर भूलता नहीं। आप चाहें तो इस तोते से कोई भी सवाल करें, यह उनके सही उत्तर देगा।" राजा ने तोते से सवाल पूछे, उसने सही उत्तर दिया। सब लोग चकित थे। पंडित फिर बोला —"उनके निश्चय किसी भी स्थिति में ढुल-मुल नहीं होते। इसी कारण जनता में इनकी प्रतिष्ठा अन्य लोगों की अपेक्षा बहुत अधिक होती है।"

पंडित जी की बात सुनकर श्रुतकीर्ति का विवेक जाग गया। उसने स्वयं के बारे में सोचना प्रारंभ किया। वह समझ गया कि वह कैसा व्यक्ति है ? कथावाचक विवेकशील को पुरस्कृत करते हुए उसी क्षण से राजा ने स्वयं को बदलने का दृढ़ निश्चय किया।

यही नहीं, विवेकशील को उसने अपना दरबारी बनाया। समय-समय पर राजा विवेकशील की सलाह लेता। देशभक्त मंत्री और सेनापति की असलियत की पहचान उसे हो गई थी। बदले हुए राजा को देख, चापलूसों ने भी दूर रहना उचित समझा। प्रजा अब राजा को बेहद चाहने लगी थी। ●

गीतों की फुलवारी— डा. मधु भारतीय; प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; पृष्ठ : ३२; मूल्य : १० रुपए ।

पुस्तक में २८ सरस बाल-गीत हैं । कई गीत विशेष रूप से अच्छे हैंजैसे घर में पूजा-घर, विकलांगों पर प्यार लुटाओ, वह संन्यासी और हलवाई । डा. मधु भारतीय बड़ों के लिए गीत और गजल अर्से से लिखती रही हैं । उनके बाल-गीत भी बच्चे पसंद करेंगे ।

बिल्ली के गले में घंटी—लेखक : सुरेश अनोखा; प्रकाशक : अनिल प्रकाशन, न्यू मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६; पृष्ठ : ६०; मूल्य : २० रुपए ।

पंकज, रोजी सलीम और जुगमेंदर एक ही स्कूल के छात्र थे । पढ़ने-लिखने में तेज । खेल-कूद और जन-सेवा में भी आगे रहते । उन्होंने 'बाल विकास क्लब' बनाया । क्लब में बच्चों को जूडो, कराटे, कुश्ती सिखाते । चोर, गुंडे और अपराधियों से कैसे निपटें—यह कोशिश करते । एक ही बरस में क्लब के सदस्य कितने ही काम कर दिखाते हैं । उनके कारनामों को सभी सराहते हैं । उपन्यास में शिक्षा और आदर्श पर जोर न होता, तो अच्छा होता ।

लेखक का यह पहला बाल उपन्यास है । हिंदी अकादमी दिल्ली ने इसे पुरस्कृत किया है ।

गीत विज्ञान के— लेखक : घमंडीलाल अग्रवाल; प्रकाशक : पंकज प्रकाशन, दिल्ली-३५; पृष्ठ : ४०; मूल्य : १५ रुपए ।

जल, पदार्थ, वायु, ऊर्जा, तारे, बल आदि पर सोलह गीत पुस्तक में हैं । ये गीत नहीं, तुकबंदियां हैं । इनमें विज्ञान भी ठीक से नहीं है, कविता का रस भी नहीं है ।

शंख वाला राजकुमार—लेखक : श्रीनिवास वत्स; प्रकाशक : सुरुचि प्रकाशन; केशव कुंज, नई दिल्ली-५५; पृष्ठ : ४८; मूल्य : १२ रुपए ।

'नंदन' के पाठक श्रीनिवास वत्स की कहानियां पढ़ते रहे हैं । बच्चों के लिए अनेक रोचक और प्रेरक कथाएं उन्होंने लिखी हैं । पुस्तक में ऐसी ही पंद्रह कहानियां हैं । कहानियों में मिठास है, मनोरंजन है और सही राह दिखाती हैं । •

नहीं चाहिए धन

—शैलेंद्र चतुर्वेदी

एक बार की बात है, बिल्लिपुत्तुरार का पैतृक संपत्ति के विभाजन को लेकर, अपने छोटे भाई से झगड़ा हो गया । निर्णय के लिए वह राजा के पास गए । राजा भी उनकी विद्वत्ता से प्रभावित था । संपत्ति के कारण भाई के प्रति उनके दृष्टिकोण को जानकर उसे आश्चर्य हुआ । कुछ देर विचार करने के बाद उसने कहा—"मैं आपकी समस्या का समाधान अवश्य करूंगा । लेकिन उससे पहले आपको वेद व्यास रचित 'महाभारत' का तमिल में अनुवाद करना पड़ेगा ।"

राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर बिल्लिपुत्तुरार अपने निवास स्थान लौट आए । उन्होंने महाभारत के तमिल अनुवाद का कार्य शुरू कर दिया ।

अनुवाद कार्य पूरा करने के बाद वह उसे राजा के पास ले जाने लगे, तो उनके मन में एक विचार आया —'राजा ने संस्कृत के किसी अन्य ग्रंथ के अनुवाद का कार्य क्यों नहीं सौंपा ? महाभारत का ही अनुवाद करने के लिए क्यों कहा ?'

तुरंत ही जैसे उन्हें प्रश्न का उत्तर मिल गया । 'महाभारत में भाइयों के मन में संपत्ति के लालच के कारण ही सर्वनाश का चित्रण हुआ है । संभवतः राजा मुझे समझाना चाहता था कि मैं संपत्ति के कारण अपने छोटे भाई के प्रति विद्वेष-घृणा न रखूं ।'

बिल्लिपुत्तुरार ने राजा के पास जाने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया वह तत्काल अपने छोटे भाई के पास गए । उससे बोले —"भाई, पिता जी की संपत्ति में से जितना भाग चाहो, तुम ले लो । शेष मुझे दे दो । मैं उसी में संतुष्ट रहूंगा । तुम्हारी खुशी में ही मेरा संतोष, मेरा आनंद छिपा है ।"

बड़े भाई की बात सुनकर, छोटे भाई की आंखों में आंसू आ गए । वह बोला —"गलती मेरी थी । आप बड़े हैं । पिता तुल्य हैं । जितनी संपत्ति आप चाहें, ले लें । शेष मुझे दे दें । मुझे आपका हर निर्णय शिरोधार्य होगा ।"

इसके बाद दोनों फिर उसी प्रकार प्यार से रहने लगे । ●

नंदन ज्ञान-पहेली : २८८

परिणाम

इस बार पाठक चूक गए । किसी का भी सर्वशुद्ध हल नहीं आया । पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

एक गलती : नौ :

प्रत्येक को एक सौ दस रुपए :

१. कुंवर विक्रांत सिंह, चंडीगढ़; २. विनोदकुमार वर्मा, दिल्ली; ३. मनोजकुमार आर्य, मथुरा; ४. पूनम भट्ट, नैनीताल; ५. वर्षा कर्णावट, उज्जैन; ६. पल्लवी दुबे, नई दिल्ली; ७. विक्रम सिंह मलिक, सोनीपत; ८. विपिन गोयल, दिल्ली; ९. पुलक त्रिपाठी, गोरखपुर ।

होनहार बच्चे

वी.एन. मोनिका की उम्र है पंद्रह वर्ष । वह ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती है । नौ वर्षों से भरतनाट्यम सीख रही है । दूसरी कक्षा में पढ़ती थी, तभी से उसकी मम्मी ने उसे नृत्य सीखने की प्रेरणा दी ।

अब वह नृत्य में 'अरंग्रेटम' यानी कि स्नातक शिक्षा पूरी कर चुकी है । बहुत-से कार्यक्रम भी हो चुके हैं । चित्रकारी और कविता-कहानी लिखने व कंप्यूटर का भी बहुत शौक है । बड़ी होने पर कंप्यूटर इंजीनियर बनना चाहती है । इंजीनियर बनने के बाद वह जीवन भर नृत्य करते रहना चाहती है ।

मोनिका का पता है —

टाइप III/३५ एन.सी.ई.आर.टी. क्वार्टर्स, नई दिल्ली

पुस्तक पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. सुनीलकुमार, १४ वर्ष, न्यू रंजीत पान भंडार, मझौलिया हाट, मुजफ्फरपुर; २. श्वेता चौधरी, १४, बी. एल. चौधरी, २१ गणपति एवेन्यू, चितरंजन, वर्धमान (प. बं.); ३. रजनीशशंकर वाजपेयी, १०, उमाशंकर वाजपेयी, ग्रा. तौधकपुर, पो. बनामऊ, रायबरेली; ४. रवि आनंद, १५, मालती भवन, कालेज रोड, शास्त्रीनगर, मुंगेर; ५. राजीव गर्ग, १६, ७२६/३० विकासनगर, सोनीपत; ६. धीरजकुमार, ११, मदनमोहन प्रसाद, कास्टर टाउन, देवघर (बि.); ७. बृजेशकुमार जैन, १३, चक्रेश जैन, जैन मंदिर के पीछे, जसवंतनगर, इटावा; ८. मनीष केसरी, १५, लक्ष्मीराम विश्वनाथ प्रसाद, मेन रोड, बक्सर; ९. आशीष अग्रवाल १४, एस. एफ. एस., म. नं. १६५, अशोकविहार फेज-४, दिल्ली; १०. मनीषा के. बुरुजवाले, १४, ३ धन्वंतरी, शास्त्रीनगर, जुना डोबिवली रोड, साईंनाथ चौक (महा.); ११. अमितकुमार गुप्ता, १३, गुप्ता मेडिकल स्टोर, सुपौल (बि.); १२. अजीतसिंह गिल, १०, १/२७ए बैदिया ढांगा, सैकेंड लेन, कलकत्ता-३९; १३. अर्चना शर्मा, १०, सत्यनारायण शर्मा, ८/१ मोरवापाड़ा, कोटा (राज.); १४. संजीवकुमार जैन, १३, सुभाष मिष्ठान्न भंडार, घंटाघर रोड, एटा; १५. ज्योति केसरवानी, १२, क्यू-डी २४, विशाखा एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली; १६. कृष्णगोपाल वार्ष्णेय, १२, आर. एस. अग्रवाल, ४९ए, कृष्णापुरी, मथुरा; १७. राहुल बरियार, ९, दीपक बरियार, ठाकुर बाड़ी रोड, जहानाबाद; १८. गौरव गोपाल, ११, ८१बी, वकील रोड, नई मंडी, मुजफ्फरनगर।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. कमल बनाती, १३ वर्ष, एच. ७०, शिवाजी पार्क, पंजाबी बाग, नई दिल्ली; २. अभिषेकसिंह, १६, ४४५/५१८, बादशाही मंडी, इलाहाबाद; ३. अनिल कुमावत, १७, प्लाट नं. १२४, खवास जी का बाग, दुर्गापुरा, जयपुर; ४. गौरव छाजेड़, ११, गौरव कलेक्शन, करटही, खरगौन (म.प्र.); ५. ज्योति प्रिया, ७, प्रकाश कुंज, मानपुर, मल्लाह टोली, बुनियाद गंज, गया।

डाक टिकट संग्रह, भ्रमण और पहेली में रुचि :

१. प्रीतेश सौरभ, ११ वर्ष, प्रभातकुमार सिन्हा, पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड, बुद्ध कालोनी, पटना; २. नवीन भंवर, १३, ७७ एल. आई. जी. कालोनी, धार (म. प्र.); ३. सचिन बालान, १७, सी-२८, गोपालनगर, सहारनपुर; ४. अनिमेषकुमार, विजयकुमार मंडल, मुंगेरी गंज, बेगूसराय।

पापा आए

रवि और संध्या दोनों छठी कक्षा में पढ़ते हैं। संध्या अमीर घराने से है। जब वह तीन वर्ष की थी तब मां का स्वर्गवास हो गया। तब से पापा ने ही पाला-पोसा, बड़ा किया। इसके अलावा सिर्फ दीनू काका हैं, जो संध्या की देखभाल करते हैं।

रवि अनाथ आश्रम में रहता है। मां हैजे की बीमारी के कारण चल बसी तथा बाप मजदूरी करते समय छत से गिर जाने के कारण। आश्रम अधिकारियों ने उसे अपनाया। रवि हर वर्ष अव्वल आता है, फिर भी उसके सहपाठी उसकी खिल्ली उड़ाते हैं।

संध्या स्कूल से आने के बाद खोई-खोई-सी रहती है। सूनापन उसे खाये जाता है। लौटने पर पापा तरह-तरह की चीजें लाते पर तब तक वह सो चुकी होती।

यूं तो पापा संध्या की खुशी के लिए कुछ भी कर सकते हैं, लेकिन इस छोटे-से सवाल —'पापा, क्या हम रवि को अपना सकते हैं ?' ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया है। दिन रविवार, दोपहर का समय। संध्या पत्रिका पढ़ने में मगन है। पापा दालान में बैठे, खामोश न जाने क्या सोच रहे हैं।

अचानक उठकर पापा ने कपड़े बदले और कार लेकर कहीं चल दिए। दीनू काका इस हरकत का आशय समझ नहीं पाए। शाम ढलने लगी है। पापा अभी तक नहीं आए। दीनू काका चाय बनाने में व्यस्त हैं। उनके हाथ से बनी चाय नसीब वालों को ही मिलती है। संध्या पापा की राह देख रही है, लेकिन पापा हैं कि आने का नाम ही नहीं ले रहे। संध्या के लिए यह कोई नई बात नहीं है।

सुबह संध्या उठी, तो सूर्य निकल आया था। तभी किसी के खिलखिलाकर हंसने की आवाज ने उसे चौंका दिया। दौड़कर बाहर निकल आई। देखा, पापा व रवि कोमल घास पर बैडमिंटन खेल रहे थे। संध्या की खुशी का पारावार न रहा।

—उत्तम कुमार मेहानी, रायगढ़ (म.प्र.)

बदल गए दिन

श्यामपुर गांव में रघु नाम का एक लकड़हारा रहता था। जंगल से लकड़ी काटकर, पास के बाजार में बेचकर वह अपने परिवार का गुजारा करता था। उसके दो बच्चे थे —दीपू तथा गौरी। दोनों भाई-बहन में बहुत प्यार था।

एक दिन अचानक रघु को बुखार हो गया। इस वजह से वह जंगल में लकड़ी काटने नहीं जा सका। उसकी बीमारी ठीक न हो पाने के कारण घर की हालत बिगड़ती गई। पैसों की कमी से समय पर इलाज नहीं हो सका। रघु की मौत हो गई। गरीबी व दुःख के कारण दीपू की मां भी बीमार रहने लगी। एक दिन रास्ते में उन्हें बहुत भीड़ दिखाई दी।

गांव में बार-बार नृत्य के अनोखे कार्यक्रम की घोषणा की जा रही थी। दोनों भाई-बहन वहीं ठहरकर नाच का इंतजार करने लगे। तभी माइक पर से उद्घोषक ने सूचना दी —'बड़े खेद की बात है कि हम अपने दर्शकों को घोषित नृत्य नहीं दिखा पा रहे हैं। किसी कारण से कलाकार यहां उपस्थित नहीं हैं। अतः दर्शकों से हम सब क्षमा चाहते हैं।' यह सुनते ही दर्शकों की भीड़ में शोर-शराबा होने लगा। तभी एक आयोजक की नजर दीपू तथा गौरी पर पड़ी। उस आदमी ने दीपू और गौरी को सारी स्थिति समझा दी। यह भी कहा कि वे किसी भी प्रकार का नृत्य प्रस्तुत करके दर्शकों को शांत कर दें। बाद में उन्हें हमेशा के लिए प्रशिक्षित करके इस मंडली में रख लिया जाएगा। यह सुनकर दोनों भाई-बहन बहुत खुश हुए। रंगबिरंगे वस्त्र पहनकर उन्होंने अद्भुत नृत्य किया। दर्शक खुशी से झूम उठे तथा तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में दीपू तथा गौरी को पुरस्कार स्वरूप पांच सौ रुपए तथा कपड़े मिले। दोनों खुशी-खुशी अपनी मां के पास लौट आए। **-- विजया लक्ष्मी पांडेय, कुल्टी**

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं —संजय शर्मा, पौड़ी गढ़वाल; पल्लवी सूद, अमृतसर; प्रभातकुमार निगम, इलाहाबाद।
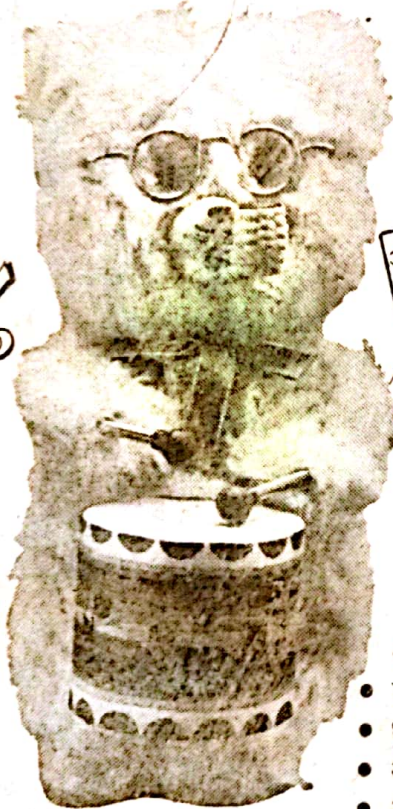
शीर्षक बताइए: परिणाम

दिसम्बर '९२ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए।

हंसते रहना मेरा काम, मत लो तुम रोने का नाम।
—मनीषकुमार मित्तल, मित्तल टी स्टाल, रेलवे स्टेशन, छबड़ा गूगोर, जि. बारां (राज.)।

मुन्ने की मुसकान निराली, सूरत कितनी भोली भाली।
—पावस गुप्ता, २४७, साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)।

तुतली बोली बोलूं मैं, मिसरी रस घोलूं मैं।
—संतोषकुमार चौधरी, केशोराम रेयन (वर्कर्स लाईन), पो. नयासराय, जि. हुगली (प. बं.)।

फूलों-सी मीठी मुसकान, मम्मी-पापा की है जान।
—भारती डडवाल, ९४०/७, अर्बन इस्टेट एक्सटेंशन, गुड़गांव (हरि.)।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : सपना गुप्ता, अमरावती (महा.); गोविंद पांडेय, चंडीगढ़; नयनकुमार राठी, इंदौर (म.प्र.); पूनम शर्मा, पूसा रोड, नई दिल्ली।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाएं कोने में रखे जग पर एक धारी अधिक है।
२. ट्राली के नीचे रखे हथौड़े का हैंडिल छोटा है।
३. उसके पास खड़ी लड़की के एप्रिन पर क्रॉस बना है।
४. उसके दाएं पैर का मोजा नीचे है।
५. उसके पास पड़ी रील से अधिक धागा निकला हुआ है।
६. बिल्ली की पूंछ लंबी है।
७. दाईं ओर शैल्फ पर रखी पुस्तकें कम हैं।
८. सामने दरवाजे से सटा एक स्विच बोर्ड अधिक है।
९. दरवाजे से आती महिला के सिर पर बंधे रिबन के सिरे दूसरे ढंग से उठे हैं।
१०. दरवाजे के पास रखी मेज पर से फूलदान गायब है।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

रेलगाड़ी
छुक-छुक छुक-छुक
अमूल चॉकलेट खा ले
मत रूक मत रूक
TOOT
TOOT
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
TOOT
TOOT
TOOT
TOOT
Amul
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
Badam
वितरक :
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फ़ेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
RADEUS/GCMMF/AMC/205/1-91-HIN
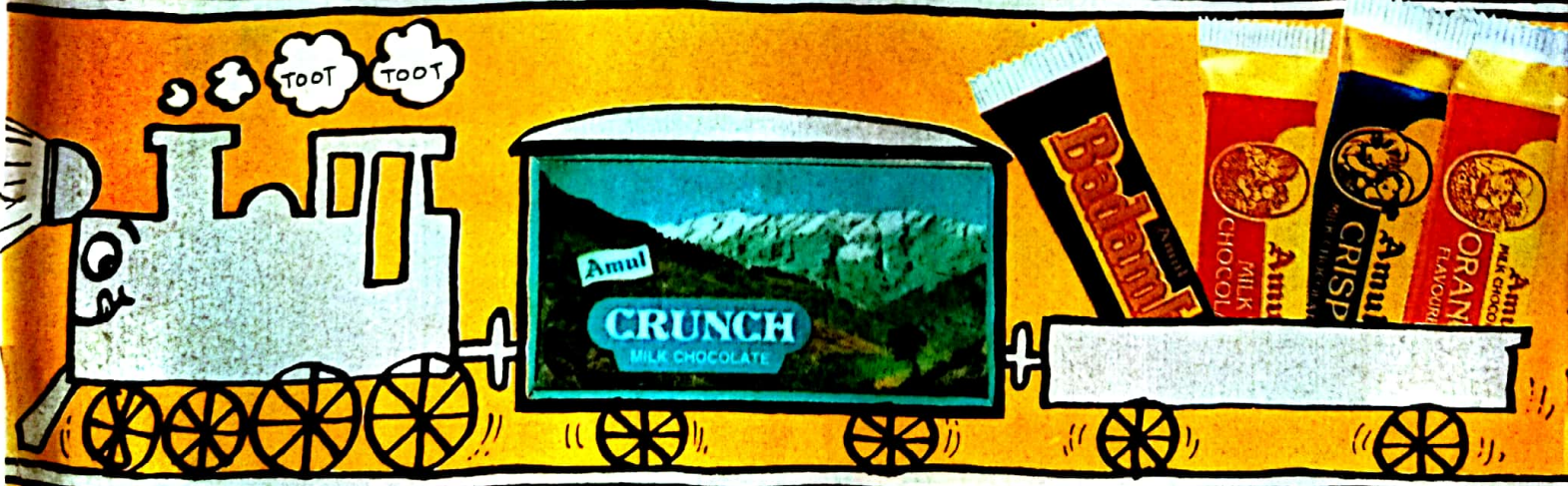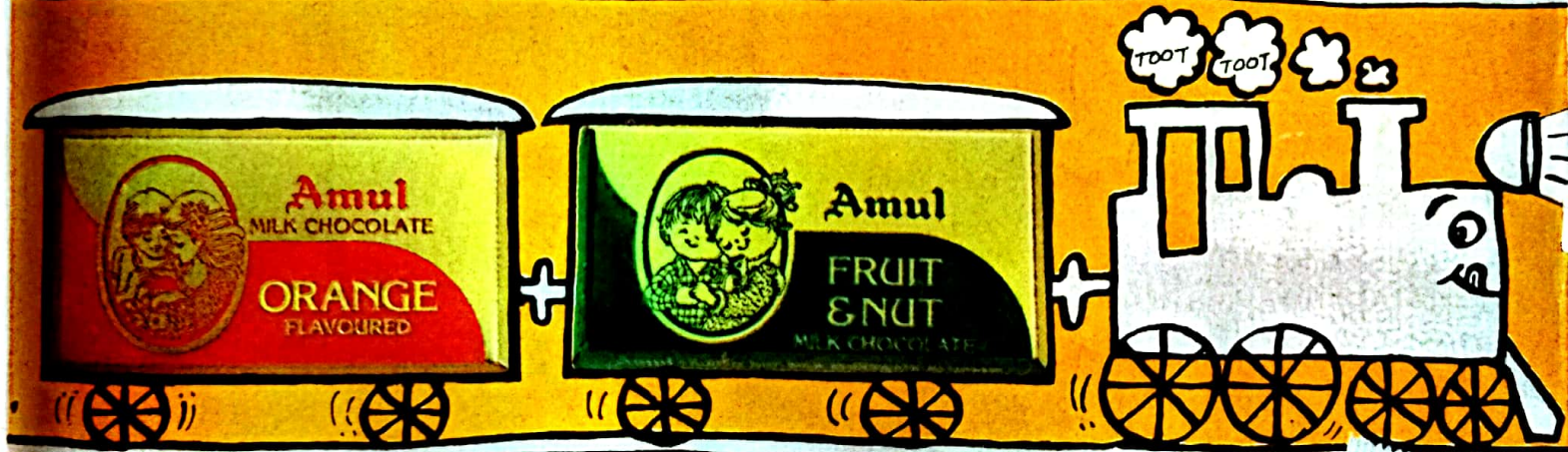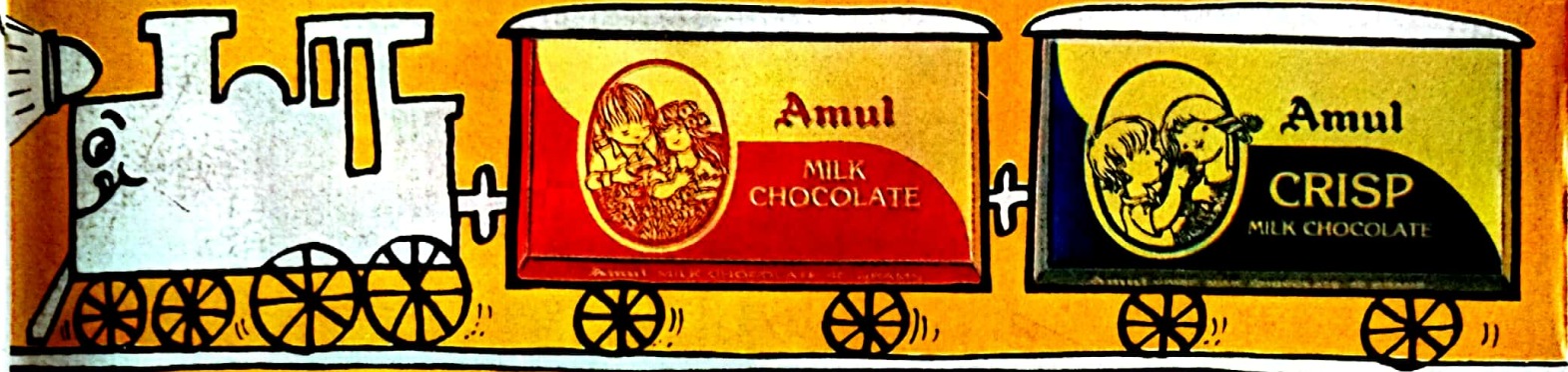
रजि. न. डी एल-२७००५/९२ आर. एन. आई.नं. १०५२५/६४

बोला हेली पू

—डा. ओमप्रकाश सिंहल

मंगोलिया में एक शिकारी रहता था। उसका नाम था हेली पू। वह बहुत ही अच्छा आदमी था। दूसरों की सहायता करने में उसे अपार सुख मिलता था। शिकार करके जो कुछ लाता उसे अपने ही पास न रखता, पड़ोसियों में भी बांट देता।

एक दिन की बात है, हेली पू शिकार करने के लिए किसी पहाड़ी की ओर निकल गया। उस पहाड़ी के पास एक घना जंगल था। जंगल में घुसते ही हेली पू ने देखा कि एक पेड़ के नीचे छोटा-सा सांप कुंडली मारे सो रहा है। हेली पू वहां से दबे पांव निकला। वह सांप से डरता नहीं था, किंतु यह जरूर चाहता था कि उसके पैरों की आवाज से सांप के आराम में विघ्न न पहुंचे।

संयोग की बात है कि ठीक उसी समय एक सारस सांप के ऊपर से गुजरा। उसने झपट्टा मारकर सांप को अपने पंजों में दबोचा और आकाश में उड़ चला।

हेली पू ने तुरंत अपने तरकश से एक तीर निकाला, धनुष पर चढ़ाया और निशाना साधकर सारस पर छोड़ा। निशाना अचूक था। सारस एक ओर को मुड़ा और सांप को नीचे गिराता हुआ उड़ गया।

सांप हेली पू के पैरों के पास आकर गिरा। हेली पू ने कहा—"भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि तुम बच गए। अब अपने घर जाओ।"—सांप ने कृतज्ञता में अपना सिर हिलाया और बिल की ओर चल दिया। वह आनन-फानन में जंगल में गुम हो गया।

अगले दिन की बात है। हेली पू शिकार खेलने के लिए उसी स्थान से गुजरा। उसने देखा कि एक छोटा-सा सांप उसकी ओर रेंगता हुआ आ रहा है। अगल-बगल में उसकी रक्षा के लिए बहुत-से सांप चले आ रहे थे। हेली पू हैरान था। वह सांपों की इस कतार से बचकर निकलने की सोच ही रहा था